ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

नवंबर-दिसम्बर 2023, वर्ष-7, अंक-9

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

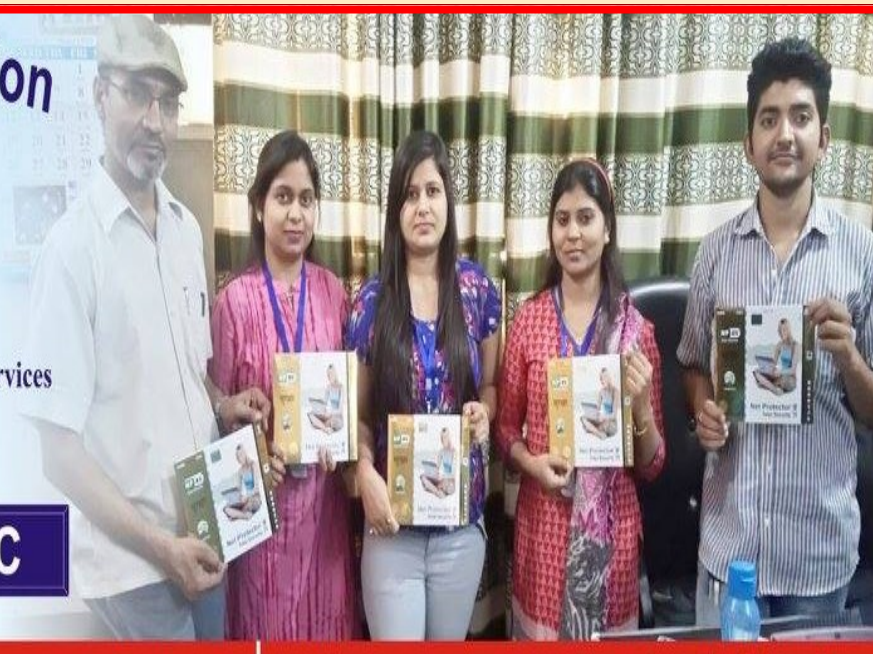

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना विनोद यादव, गाजियाबाद

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

आँखिन देखी –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

• धरोहर

गीत–आनंद संधिदूत /6

आलेख/शोध लेख/निबंध

डॉ बलभद्र– साहित्य के प्रवीण अध्येता– डॉ विष्णुदेव तिवारी/7–9
भोजपुरी के एगो नामवर के जरूरत बा– कनक किशोर/9–14
भोजपुरी माटी, भोजपुरी भाषा आ हमार लेखन /16–17

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

कंवल के फूल – गीता चौबे गूँज/37–39
उपरवार– अंकुश्री/39
हमरा जबाब चाही – अभियंता सौरभ कुमार/40
जेकर केहू ना होला, ओकर भगवान होलें–राजू साहनी/41–42

• समीक्षा/पुस्तक चर्चा

'मानक भोजपुरी ब्याकरन' भोजपुरी लोगन खातिर जरूरी ग्रंथ– विजय कुमार तिवारी/17–18
'सजग शब्द के रंग' शब्द साधक के साधना के फलाफल रसयुक्त त्रिफला–कनक किशोर/19–21
सदय के कहानी संग्रह 'मानसा' के बारे में – डॉ बलभद्र/22–24
भगवती प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध संग्रह 'जइसे अमवा के मोजरा से रस चुवेला' – डॉ सुनील कुमार पाठक/25–27
अइसन गारी के गारी जनि जानी के बहाने

• समीक्षा/पुस्तक चर्चा

लोक के बतकही– जयशंकर प्रसाद द्वि वेदी/28–29
'शिकार पर शिकार': भोजपुरी के पहिल शिकार कथा– जितेंद्र कुमार/29–31
घर–दुआर, गाँव–जवार के देखल सुनल कहानी– डॉ अशोक प्रियदर्शी/32–33
बादल रहल सामाजिक मूल्यन के बीच बेकतीगत महात्वाकांक्षा खातिर संघर्ष के आईना 'जुगेसर'– कौशल मुहब्बतपुरी/33–35
खाली जय किसान कहला से किसान के हालत ना सुधरी–अनूप पाण्डेय/42–44

• कविता/गीत/गजल

बड़ी बा मुश्किल– दीपक तिवारी/14
तीन गो कविता– डॉ हरेश्वर राय/15
गजल– अजय साहनी/18
गीत–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/21
केहू आइल का–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/24
माई हमरे गाँव से बस एही से शहर ना आवे– अमरेन्द्र पाण्डेय/31
लै बाबू मुंडी लै– स्वामी स्वर्गानन्द/36
दँवरी–केशव मोहन पाण्डेय /36

साहित्य समाचार

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27 वा राष्ट्रीय अधिवेसन, तुलसी भवन , जमशेदपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न/44–47

■■

आँखिन देखी ---

गंवे गंवे भोजपुरी साहित्य के पठनीयता के मिथक टूट रहल बा, अइसन हम ना बजार कहि रहल बा। एकरा पाछे मुख्य कारण उपलब्धता आ विश्वसनीयता के मानल जा सकेला। डिजिटल युग एहमें अहम भूमिका निभा रहल बा। भोजपुरी के पुस्तक पहिलहूँ प्रकाशित होत रहनी स आ अजुवो प्रकाशित हो रहल बानी स। एह दिसाई साहित्यांगन आ सर्वभाषा प्रकाशन एगो मजगूत बड़ेर लेखा सोझा बाड़ें। पुस्तक मेला, जगह–जगह लागे वाला स्टाल भाषा के नेही–छोही लोगन के संगही दोसरो भाषा भासी लोगन के सोझा भोजपुरी के किताबन के उपलब्धता सुगमता से सुलभ करा रहल बा। भोजपुरी भाषा के ओर दोसरो भाषा भाषी लोगन के बढ़त झुकाव, भाषा के सीखे–पढ़े के ललक उमेद जगा रहल बा। साहित्य आज तक से चलत साहित्य अकेडमी होत गोमती पुस्तक महोत्सव, लखनऊ तक सर्वभाषा प्रकाशन के जतरा के साक्षी का रूप में भइल साक्षात्कार मन के उछाह से भर देले बा। एगो मिथक कि लोग भोजपुरी के किताब कीन के ना पढ़ल चाहेला, एह तीनों पुस्तक मेला में दरकत लउकल।

साहित्य आज तक, दिल्ली आ साहित्य अकादमी, दिल्ली के पुस्तक मेला तक पहुँचे वाले भोजपुरिया पाठकन के रुझान अपने भाषा, संस्कृति आ साहित्य के लेके उमेद जगा रहल बा। गोमती पुस्तक महोत्सव, लखनऊ जेयादा उमेद जगवलस। सभेले सुखद बात जवन केहू के सीना चाकर करि दे, उ ई कि सर्वभाषा प्रकाशन (सर्वभाषा ट्रस्ट) भोजपुरी के किताबन के मजगूत ठेहा का रूप में आपन जगह बना चुकल बा। एह घरी करीब भोजपुरी के 110 पुस्तक प्रकाशित क के देस के सगरे प्रकाशकन में पहिल जगह पर चहुंप चुकल बा। भोजपुरी के धमक आजु सर्वभाषा प्रकाशन के ध ामक बनि चुकल बा। एकरा चलते सर्वभाषा प्रकाशन के निदेशक के बड़ बड़ मंच अपने इहाँ बोला रहल बा आ उनुका अनुभव से लाभो उठा रहल बा। एही का चलते भोजपुरी साहित्य सरिता सम्पादन टीम अपना एह अंक आ आगे आवे वाले अंकन में भोजपुरी किताबन के समीक्षा के प्रमुखता से जगह देवे क निरनय ले चुकल बा आ ओकरा रउवा सभे के सोझा परोस रहल बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27 वें सम्मेलन में भोजपुरी पत्रकारिता खातिर भोजपुरी साहित्य सरिता के संपादक के 'पाण्डेय नर्वदेश्वर सहाय' सम्मान से सम्मानित करे के निरनय खातिर भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आभारी बा। पत्रिका के सहायक सम्पादक डॉ रजनी रंजन जी सम्मेलन में सिरकत कइनी आ पत्रिकाके प्रतिनिधि का तौर पर सम्मान सवीकार कइनी। एह सुखद एहसास का संगे रउवा सभे के भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार का ओर से नवका बरिस के अगवड़ बधाई आ शुभकामना।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

गीत

आनन्द कुमार श्रीवास्तव
'आनंद संधिदूत'

जन्म– 27 अक्टूबर 1949

मृत्यु– 27 मई 2023

1

मथवा पर ले ओढ़ली चदरिया रहिया रोकेले ।
दायें बाँएँ कँइची अस नजरिया रहिया रोकेले!

जियले बाटे अँखिया अउ अन्हरा टोइ–टोइ के
अचके में रतवन्ही अस बदरिया रहिया रोकेले!

कहवाँ जइबे ए कारी अन्हारी बारी घेरेले
उल्टा पल्ला फेरे ले बदरिया रहिया रोकेले!

कबहीं नाहीं पूरा–पूरा रोके मधुबनवाँ हो
कवनो एगो फुलवा के पँखुरिया रहिया रोकेले!

जाये चहलीं अन्तइ जो ,महुरिया खाये गइलीं हो
फुलवा अइसन देसवा के बयरिया रहिया रोकेले!!

2

टाँय–टाँय रात भर कइलन स कउवा
भोरे संगीतकार भइलन स कउवा।

श्रोता में ठाढ़ रहे निर्धन अस कोयल
ज्ञान–कला लूट–लूट खइलन स कउवा।

उज्जर न भइलन स पदवी–प्रतिष्ठा से
कूद–कूद केतनों नहइलन स कउवा।

मोर के शिकार भइल, सुग्गा के जेल भइल
हर खाली डाढ़ पर भरइलन स कउवा।

अनठेवल दम्भ भरल अइसन अनगंवलस
कउवे का जाति में हेरइलन स कउवा।

■■

डॉ. बलभद्रः साहित्य के प्रवीन अध्येता

विष्णुदेव तिवारी

डॉ. बलभद्र के, अबतक भोजपुरी में लिखल कुछ महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आलेखन के संकलन, उनकरा 'भोजपुरी साहित्यः हाल–फिलहाल' नाँव के किताब में कइल गइल बा। एह पुस्तक के महत्व एकरा में आलोचित कृति आ कृतिकार के, मौ. लिक नजर से निरखला–परखला के वजह से त बड़ले बा, ई एहू से महत्वपूर्ण बा कि एह में कुछ विध ाा विशेष के फिलहाल के लेके स्वस्थ, यथार्थपूर्ण आ सारगर्भित बतकही कइल गइल बा। ई एक तरह से आलोचना आ इतिहास के युगलबंदी ह। आज के भोजपुरी साहित्य के प्रवीन अध्येता के रूप में बलभद्र के आपन पहचान बा। एह पुस्तक में आइल उनकर आलेख एकर प्रमाण बाड़े स। उनकर कुछ प्रमुख आलेख बा–

1. भोजपुरी कहानी के फिलहाल
2. कविता के भीतर के बतकही
3. भोजपुरी के महिला कहानीकारन के कहानी
4. मोती बी.ए. के काव्य–दृष्टि
5. किसान कवि बावला
6. पी. चन्द्र विनोद के गीतः तनी गुनगुनात
7. शारदानंद जी के 'बाकिर'
8. 'गाँव के भीतर गाँव' के बारे में
9. बातः लोकराग के लेके
10. 'कविता' के गजल अंक
11. भोजपुरी में कथेतर गद्य

2020 में बलभद्र के एगो अउरियो किताब प्रकाश में आइल, जेकर नाँव ह– 'भोजपुरी साहित्यः देश के देस का'। ई किताब हिन्दी में बा। इहो किताब एगो संकलने ह जेमे आइल कुछ प्रमुख आलेखन के नाँव बा–

1. देश के देश की कविता
2. भोजपुरी में विस्थापन के काव्य–प्रसंग
3. भोजपुरी कविता का जनपक्ष
4. विभाजन को खारिज करते 'मुस्लिम लोकगीत'
5. 'बटोहिया' और 'अछूत की शिकायत' के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ और सरोकार, आदि।

बलभद्र जवने विषय उठावे ले ओकरा में, अपना ओर से, भरपूर रंग–नूर भरे के कोशिश करेले। कबो ई बहुत सुंदर बन जाला, कबो विवाद के पुरहर गुंजाइश छोड़ जाला। रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' आ हीरा डोम के 'अछूत के शिकायत' – दूनों कवितन के साथ–साथ रखत उहनी के विविध प क्षन के उटकेरत ऊ जवन कुछ स्थापना दे रहल बाड़े ऊ विचारपूर्ण होखे के साथ–साथ विचारणीयो बा। 'बटोहिया' के बारे में बलभद्र के कहनाम बा कि–

1. ''सबसे पहले तो यह गीत तथाकथित हिन्द. ुत्ववादियों की 'वन नेशन' थ्योरी को नकार दे रहा है। इस गीत के अनुसार भारत देश के भीतर कई 'देस' हैं। कविता में स्पष्ट रूप से 'भारत के देसवा' कहा गया है, 'भारत मोरे देसवा' नहीं। यहाँ 'देश' और 'देस' के बीच के अंतर को समझ लेना होगा। कविता में आए 'देस' के मतलब को ठीक से नहीं समझा गया है। उसको 'देश' के अर्थ में समझने की भूल हुई है। दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह की प्रसिद्ध पुस्तक 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में भी फुटनोट में 'देस' का अर्थ 'देश' बताया गया है।''

आगे बलभद्र बतावत बाड़न कि लोक में 'देस' का अर्थ ऊ जगह, ऊ पूरा परिवेश जहाँ जनम आ परवरिश भइल रहेला, जहाँ के रीति–रिवाज, रोजी–रोजगार, रहे के लूर–ढँग एक नियर होला। भोजपुरी में 'परदेश' माने 'विदेश' ना होला। बात आगे बढ़ावत, उदाहरण देत, समुझावत बलभद्र निष्कर्ष निकालत बाड़न कि– ''बटोहिया के अनुसार, भारत कई 'देशों', कई भाषाओं, कई संस्कृतियों, कई धर्मों, कई मान्यताओं का देश है।''

बलभद्र के बातन में कई बात बा। हमनी के उनकरा कहलकी के मुख्य विन्दुअन पर विचार कइल जाउ। उनकर 'देस' के अर्थ के बारे में कहनाम गलत नइखे। भोजपुरिए में नाहीं बंगालियों में 'देस' आ 'परदेस' के एगो माने उहो होला, जवन ऊ भोजपुरी में कहत बाड़े। इहाँ तक कि हिन्दियो में कहल जाला 'जैसा देश वैसा वेश' आ ई भोजपुरियो प्रयोग में कम ना आवे– 'जइसन देस ओइसन भेष'। बाकिर, 'देस' त कबीरोदास लिखत बाड़े– 'रहना नहिं देस बिराना है!' एहिजा 'देस के माने निश्चित रूप से ऊ ना ह, जवन विद्यापति के 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' वाला 'देस' में बा। 'देस' के अर्थ प्रयोग सापेक्ष बा, जइसन दोसरो शब्दन के अर्थ होला। रघुवीर नारायण 'देस' शब्द के प्रयोग एकदम ओही अर्थ में कइले बाड़े जवना अर्थ में हिन्दी भा संस्कृत वाला 'देश' के होला

जेकर अँग्रेजी अनुवाद कंट्री (बवनदजतल) ना, नेशन (दंजपवद) कइल जाला। 'भारत के देसवा' माने 'भारत मोरे देसवा' ना भइल– बलभद्र के ई कहनाम मान लिहल जाउ कि ठीक बा, तबो 'भारत के देसवा' माने 'भारत के भीतर बँटल–बँटाइल, कटल–कटाइल कई देसवा भा जगहवो त ना नूँ भइल, जेमे अलगाववादी गैंग कुलाँच भरेले? 'भारत के देसवा' माने 'भारत देशवा' भइल, जहाँ ऋषि चारू वेद गावत रहले, जहाँ के कन–कन में सीता, राम आ कृष्ण के अमर यश भरल परल बा, जेकर वर्णन, चित्रण भा अध्ययन ओकरा के तूरि के ना कइल जा सके, काहें कि (प्रकाश में रत) भारत के सम्बन्ध (एहिजा) ओकरा अस्तित्व आ अस्मिता से बेसी बा (जेकर एगो अंग बेशक भूगोलो होला), भूगोल से कम।

रघुवीर नारायण के भारत अखंड, अविभाज्य, सार्वभौम एकाई ह, जेकरा के बेर–बेर लूटल गइल, बेर–बेर मुआवे के कोशिश कइल गइल, बाहरे के ना, भीतरो के दुश्मन जेकर खलारा ओदार करे में ना हिचिकले आ ऊ जीअत रहल।... जे आजुओ संविधान प्रदत्त शक्ति लेके, अपना अमर संतानन खा़तिर असंख्य लक्षित–अलक्षित शत्रुअन से जूझ रहल बा।

भारत के सम्बन्ध खाली भूगोले से नइखे। रघुवीरे नारायण वाला भारत के जइसे विस्तार देत रामधारी सिंह 'दिनकर' अपना कविता 'किसको नमन करूँ?' में, समूच भूमंडल के भारत कह रहल बाड़े–

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है
एक देश का नहीं शील यह भूमंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश–देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।

पहिले लोकभाषा में 'श' के जगह पर 'स' आ 'व' के जगहा प 'ब' ही लिखल जात रहे। आजुओ बहुत लोग 'देस' आ 'बनबिलार' ही लिखेला। रघुवीर नारायण के 'देस' माने 'देश' ही भइल, जेकरा के विष्णुपुराण के रचयिता एह तरी व्यक्त करत बाड़े–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रिश्चौव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।
(द्वितीय अंशध्तृतीय अध्यायध्प्रथम श्लोक)

सबसे मार्का वाली बात ई बा कि भोजपुरी भाषा के प्रकृति बहुवचन वाली ह। इहाँ एको वचन के संज्ञान में ले आवे खातिर बहु वचन अस प्रयोग में ले आइल जाला। मतलब इहाँ 'देसवा', 'भेसवा', 'खेतवा', 'कलेसवा' आदि 'वा' प्रत्ययांत शब्द हरमेस बहुए वचन ना होला, जइसे– 'खेलत' मो रहनी रामा, बाबा के दुअरवा से आई गइले डोलिया कँहरवा ए राम!' के माने ई ना भइल कि बाबा (पिता) के एक से अधिका दुआर बा, जहाँ एक से अधिका डोली लेके कँहार लोग आ गइल। (ई निरगुन ह आ एकर आध्यात्मिक अर्थ बा। ई सामान्य अर्थ ह।) कबो–कबो त एको वचन के प्रयोग, अर्थ में बहु वचन हो जाला, जइसे, उपरे आइल निरगुन के यदि 'खेलत' मो रहनीं रामा बाबा के दुअरवा से आइ गइले डोलिया कँहार, ए राम!' जइसन लिखल जाउ त' एकर माने ई ना होई कि– डोली लेके एकही कँहार अइले।३ त' देसवा माने देश, जे एक वचन ह, कई गो देश ना जे बहु वचन ह।

आ...'तथाकथित हिन्दुत्ववादी' कहला के का मतलब? तथाकथित आलोचक यदि 'बटोहिया' के 'अपर प्रदेस देस सुभग सुघर भेस,मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया' आ 'सुंदर सुभूमि भइया भारत के भूमि जेहि, जन 'रघुबीर' सिर नावे रे बटोहिया' पर, कविता के साथ चलत, सोचले–विचरले रहिते त' ई कबो ना कहिते कि 'देस' के भीतर 'देस' होला। देश एके होला, ओकर अभिव्यक्ति अनेक होला आ 'मोरे हिन्द' भा 'मोरे भारत' भा 'भारत मोरे देसवा' अलग–अलग चीज ना होके, एके चीज होला।

'बटोहिया' गीत के कवनो तरी से पढ़ीं, (आजु–काल हिन्दी में कवनो शाही जी के 'खुला पाठ' के धूम मचल बा, से 'खुला पाठ' से पढ़ीं) ई हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति–संस्कार आ मान्यता के अलावे अउरी कवनो धर्म, संस्कृति आ मान्यता के बात नइखे करत। एह में आइल सांस्कृतिक–धार्मिक पुरुष आ प्रतीक कवनो दोसरा धर्म आ संस्कृति के नइखन। जवन हइए नइखे ओकरा रहबार के बात कइल, अनुचित कहाई।

'बटोहिया' समग्रतः सनातन धर्म आ संस्कृति के बात करत बिया, जेमे हर धर्म, हर संस्कृति, हर पवित्र विचार समाहित बा।

2. ''भोजपुरी समर्थन के उत्साह में 'बटोहिया' को भोजपुरी का 'वंदे मातरम्' तक कह दिया गया। इस बात पर बस इतना ही कहना है कि 'बटोहिया' अपने आप में एक स्वतंत्र रचना है। किसी उपन्यास या अन्य रचना में प्रसंगवश आया हुआ गीत नहीं।''

बलभद्र इहो कहत बाड़े कि 'वंदे मातरम्!' से तुलना क के 'बटोहिया' के कमतर क दिआइल बा।

'वंदे मातरम्' के कवनो उपन्यास (आनंदमठध बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्यायध1882) भा कवनो अन्य रचना में प्रसंगवश अइला से ओकर स्वतंत्र रचना के रूप में आइल 'बटोहिया' से महत्व कम नइखे हो जात। 'श्री मद्भागवत गीतो' त' 'महाभारत' में प्रसंगेवश आइल बा। ए से का कवनो स्वतंत्र धार्मिक ग्रंथ, जइसे शंकराचार्य के 'भज गोविन्दम्' से ओकर महत्व कहाँ कम हो जात बा? तुलना यदि उचित होखे त ओकरा से रचना के महत्व बढ़ेला।

'वंदे मातरम्' (1882) आ 'बटोहिया' (1911) दूनों गीत राष्ट्रीय स्वतंत्रता–संग्राम में लक्ष–लक्ष लोगन के प्रेरणा रहे।

बलभद्र खुदे 'बटोहिया' के कुछ गीतन आ कवितन से तुलना करे के कहत बाड़े। एकर का माने?
रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' आ हीरा डोम के 'अछूत की शिकायत' के लेके बलभद्र के कहनाम बा कि दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के किताब 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में नूँ हीरा डोम के नाँवे बा नूँ उनकरा एह कविते के जिकिर बा जबकि रघुवीर नारायण आ उनकरा 'बटोहिया' के मजगर जिकिर बा। बलभद्रे के शब्दन में–
''ऐसा क्यों हुआ, इस तथ्य को किस रूप में समझा जाए, यह प्रश्न अवश्य बनता है।''

कवनो प्रश्न नइखे बनत! हँ, आलोचक जे तरी से प्रश्न बनावत बाड़े ओही पर प्रश्न बनत बा कि ऊ एह तरी प्रश्न बनावत काहें बाड़े? द्रष्टव्य बा कि हीरा जी के एह कालजयी कविता के महावीर प्रसाद द्विवेदी अपना पत्रिका 'सरस्वती' (1914) में प्रकाशित कइले रहले। दुर्गाशंकर जी के एह कविता के बारे में जानकारी ना रहे, त' ना प्रकाशित कइले। कवनो अउर बात रहित त' ऊ साफे लिख देले रहिते, जइसे, अपना किताब में एगो कवि खुदाबक्स के बारे में लिखत ऊ कहत बाड़े कि इनकरा कविता में अश्लीलता पराकाष्ठा पर बा, एसे इनकर कविता प्रकाशित करे के लायक नइखे। (भोजपुरी के कवि और काव्य द्वितीय संस्करण–पृ.188)

आजुओ, हीरा डोम के बारे में, उनकरा एह कविता के अलावे, हमनी के बहुत कुछ नइखीं जानत जा।

कबो–कबो कवनो रचनाकार दोसरा रचनाकार के बहुते नीमन से जानत रहेला, तबो जरुरी जगह प ओकर नाँव ना लिख पावेला, संभव बा बिसभोरी से, संभव बा डाहे भा तिरछोलई से, तबो ई कहल कि 'फलाना फलाना के नाँव ना लिखले त प्रश्न त बनते बा कि काहें?' वाजिब ना होई। नागेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित' जइसन आलोचक लोग अपना आलोचना,इतिहास आदि में, ढेर लोग के नाँव जानिए–बूझ के छोड़ देला, त का हो गइल? उनकर मर्जी। खुद डॉ बलभद्र अपना कई सुंदर आलोचनात्मक आलेखन में कई समकालीन सुंदर रचनाकारन के (जेकरा के निश्चित रूप से ऊ जानत बाड़े) जिकिर नइखन करत, त का हो गइल? ओकर चर्चा दोसर लोग करी। बस रचना में दम होखे के चाहीं।

❑❑

❍ बक्सर, बिहार

कनक किशोर

भोजपुरी के एगो नामवर के जरूरत बा

कबीर के भाखा ह भोजपुरी।आँखिन देखि सांच बांचे वाला कबीर संत साहित्य के समृद्ध करे वाला खाली ना रहन एगो महान आलोचक रहन। दूध के दूध आ पानी के पानी कहे वाला मनई के फेटूआ पसंद ना पड़े। आलोचक के सांच बोले के पड़ेला झूठ से बोथाइल सांच सांच ना होखे। ओकरा में आंच ना होखे। कवनो रचना के बढ़ा – चढ़ा के,तेल फूलेल लगा के ओकर कद ऊंच कर देल आलोचक के काम ना ह। कवनो विधा के उपलब्ध सामग्री के संग्रहित कर एक जगह रख देल आलोचना ना ह। भोजपुरी आलोचना के भूत आ वर्तमान दूनों पर नजर डाले के जरूरत बा। आज तक सामने आइल भोजपुरी के इतिहास पर नजर डाले के जरूरत बा। ई एहू से जरूरी बा कि सांच सामने आई तब जाके आगे के राहि रोशन होखी। भविष्य सुनहरा होखी। भोजपुरी माटी हिन्दी के हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह आ मैनेजर पांडेय देलस बाकिर अपना खातिर भोजपुरी कबीर दृष्टि वाला आलोचकध समीक्षक ना सामने ले आइल ई एगो सोचनीय विषय बा। काहे एहू पर विचार कइल जरूरी बा। एकर कारण बहुत बा ओह पर बाति कइला से कुछु ना भेंटाई। आगे के सुध लेल ठीक रही। आगे के बाति कइल ठीक रही। आपन पीठ ठोकल,मुँह देखि के पीठ ठोकल, आपन विचार थोपल,सांच से मुँह मोड़ल छोड़ि के रचना पर नजर राखि तथ्यपरक बाति सामने रखे के होई तब जाके भोजपुरी के भलाई होखी आ सांच सामने आई।एह दिसाई आजु दू – तीन गो चेहरा सामने आइल बा आ काम बढ़ रहल बा मंथर गति से। बाकिर गति देवे के जरूरत बा। वै. श्विक आ प्रतिस्पर्धा के जुग में मंथर गति से चलला से काम ना होखी। सही आलोचना के अभाव में भोजपुरी के ताकत देश – दुनिया के

सामने ना आ पाई। पहिले के आलोचनो के आलाचना के जरूरत बा, पुरोधा लोगिन के धरोहर के पुनर्पाठ के जरूरत बा। गुणवत्ता पूर्ण साहित्य पर पुरजोर बतकही के जरूरत बा। कहीं पर निगाह, कहीं पर निशाना ना चली।सही आ गलती दूनों के सामने रखे के होखी।समेष्टि आ संपूर्णता के पक्षधर बने के होखी। कीचड़ किनार करि कमल के खोजे के होखी।तब जाके काम बनी। सांच पूछीं तऽ आजु एह खातिर भोजपुरी के एगो नामवर के जरूरत बा।

नामवर काहे ई एहिजा विचारणीय सवाल बा।कहल गइल बा रचना होखे भा आलोचना लोकोन्मुखी टिकाऊ होखेला आत्मोन्मुखी ना।लोकान्मुखी होखे खातिर समष्टि, समभाव, संपूर्णता के साथे साथ रचना विधान, देश काल आ पूरा परिवेश के आलोक में मूल्यांकन जरूरी हो खेला। आलोचना के जनप्रतिबद्धता से पोषित होखे के चाहीं।केकरो के, कवनो रचना के नाकार देल आसान काम ह बाकिर स्थापित कइल कठिन। आलोचना के एह दिसाई आपन महत्व होला। सबसे बड़ समय होला जेकरा पर केहू के बस ना होखे आ ऊ अपना ढ़ंग से समय पर मूल्यांकन करेला आ करवावेला। नामवर सिंह के कथन ह कि जे रचनाकार अपना पूरा परिवेश के जाने, समझे, खोजे आ पावे खातिर ईमानदार कोशिश करेला ओकर रचना कबो मरे ना आ ना मरी। आलोचना विधानो खातिर ई चारों चीज आवश्यक होखेला एही से ई चारों के रचना के मूल्यांकन तत्व के रूप में रे खांकित कइल गइल बा। नामवर सिंह समय आ रचना के सत्य के देखत रहन आ जरूरत पड़ल त हजारी प्रसाद द्विवेदी आ रामविलास शर्मा पर तीखा प्रहार करे में पीछे ना रहले। अइसन पाइब कि नामवर सिंह रचनाकार के कहीं से उठा के कहीं खड़ा कर देलन बाकिर आलोचकीय परंपरा के भुला के ना। कवनो रचना के कलात्मक सुंदरता के बिना बिगड़ले रचना के आलोचना आलोचना के लोकतंत्र के मापदंड ह।आलोचकीय परंपरा के निर्वाह के आपन कला आ लोकतंत्र नामवर सिंह के पास रहे आ हमनी के ओकर अनुसरण करे के चाहीं स्वस्थ आलोचना के क्षेत्र निर्माण खातिर। आलोचक के एह बातों पर ध्यान रखे के चाहीं कि अपना आलेख में जे बुनियादी सवाल उठा रहल बा ओकर मोल बा कि ना आ हरदम रही कि ना? आलोचना के राह कठिन होला एह से विचलन आ फिसलन संभावित बा बाकिर आलोचक के ई ध्यान राखे के होला कि आलोचना बेराहि ना हो जाए, आपन स्थापित परंपरा के ना भुला जाय पूर्वाग्रह से ग्रस्ति होके। आलोचक के मित्रता धर्म से दूर रहे के चाहीं ना त कुजाति श्रेणी में जात देर ना लागे। आलाचना कर्म में काजर के कोठरी से गुजरे के पड़ेला। सावधानी हटल कि करिखा के टीका लागल। सीधा अंगुरी से घीव ना निकले अंगुरी टेढ़ करे के परला। आलोचना खातिर ऊ टेढ़ अंगुरी नामवर भिरी रहे बाकिर खोंच लगावे खातिर ना,घीव निकाले खातिर।पक्ष – विपक्ष, सहमति – असहमति हों सकेला एह पर बाकिर ई एगो सत्य बा कि नामवर सिंह हिन्दी आलोचना के धुरी रहन आ आलोचकीय परंपरा के निर्वाह करत एगो बड़ लकीर छोड़ गइलन जेकरा आगे ओह से बड़ लकीर खींचल एगो कठिन काम बा। भोजपुरी में खोजेला पर भोजपुरी दधीचि, भोजपुरी शेक्सपियर, भोजपुरी इंसाइक्लोपीडिया, भोजपुरी तुलसी, अनगढ़ हीरा अउर बहुत कुछ मिल जाई। भोजपुरी साहित्य भिरी बा एकर भंडार बाकिर खोजलो पर मिकिको काकुतानी, चरीस ए.बेर्ड, जॉन जोश, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह आ मैनेजर पांडेय नइखन दिखाई पड़त। सोचे के होखी ई खालीपन काहे? कबीर आ गोरख के भाखा में ई अभाव काहे? भरे के होखी ओह खाली जगह के अपना बीच से। भोजपुरी में ई ताकत बा कि खड़ा करी अपना बीच से आपन नामवर के।एही से ई कहल गलत ना होखी कि भोजपुरी के एगो नामवर के जरूरत बा।

स्वस्थ आलोचना कवनो साहित्य के विस्तार आ गहराई के समझ खातिर आवश्यक होला।आज जब साहित्य पर बाजारवाद हावी बा त ओह स्थिति में रचनाकार के कलम ओकरा इच्छा से नइखे चलत, रचनाकार के चिंतन ओकरा रचना में नइखे रह जात, रह जात बा बाजार के मांग।दूसर शब्द में कहल जाए त रचना में रचनाकार के चिंतन आ कलात्मक सुंदरता नइखे रह पावत।अइसन स्थिति में आलोचना कर्म के जबाबदेहियो आजु बढ़ गइल बा। भोजपुरी साहित्य में का बा? हमनी के पच्चीस करोड़िया भोजपुरिया भले होखीं जा संख्या के हिसाब से बाकिर हमनी के साहित्यिक काया दूबर – पातर आ कमजोर बा।गोरख आ कबीर के भाखा के लोक–संस्कृति से जुड़ाव रहला से लोक भाषा के रूप में समृद्धता बा। वाचिक परंपरा बहुत मजबूत रहल बा बाकिर लिखित साहित्य ओह अनुरूप मजबूत नइखे एह के स्वीकार करे में हिचक ना होखे के चाहीं।कारण ओकर दोसरो बा बाकिर एगो मुख्य कारण पाठक वर्ग के आभाव आ बाजारवाद के जुगो में बाजार के आभाव बा। कवनो साहित्यिक कृति के थर्मामीटर पाठक होला।जब पाठक के आभाव बा तब समाज से साहित्य पर प्रतिक्रिया सही ना

मिल पावे। भोजपुरी के ना आजु ले राजाश्रय मिलल, ना भाषा के संवैधानिक मान्यता,ना कारपोरेट के गोदी अइसन स्थिति में लोकाश्रय एकमात्र सहारा बा जेह बल पर साहित्य संसार में भोजपुरी आपन मजबूत उपस्थिति दर्ज करे में सफल रहल बा। मजबूत पाठक वर्ग के आभाव में भोजपुरी साहित्य बाजार में आपन पैठ नइखे बना पावत जेकरा चलते आजुवो अर्थ के जुग में लेखक अपना घर के आटा गीला कके भोजपुरी समृद्ध करे में लागल बा। बाकिर रचनाकार के प्रोत्साहन आ पुरस्कार त छोड़ीं ओकर रचना के सही मूल्यांकन नइखे हो पावत एह इक्कीसवीं सदी में जे स्पष्ट इशारा करत बा कि भोजपुरी साहित्य में स्वस्थ आलोचना के आजुवो आभाव बा।

कवनो साहित्य में संवाद के आपन महत्व होला।लिखाय खूब,पढ़लो जाये बाकिर ओह पर बात बतकही ना होखे, ओकर गुण – दोष के चर्चा ना होखे त ऊ साहित्य लोकग्राही ना बन पाई। साहित्य संसार में आपन उपस्थिति दर्ज ना कर पाई। संवाद के आभाव में रचना के आकाल मृत्यु के शिकार होखे के पड़ जाई। संवाद आलोचना के अंग ह। नामवर सिंह के संवादी आलोचक के संज्ञा देल गइल बा। भोजपुरी साहित्य में संवाद,बात – बतकही लिखित में मिल जाई बाकिर व्याख्यानध्आख्यान के रूप में त खोजलो पर ना मिले। नाम के खानापूर्ति खातिर भोजपुरी संस्थानध् महाविद्यालयध् विश्वविद्यालय कबो – कबो संवाद आयोजित करेला अपना लगुआ के लाभ पहुंचावे खातिर, सम्मानित करे खातिर। डॉ नीरज सिंह के कार्यकाल में वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय,आरा एह दिसाई बढ़िया काम कइले रहे जेकरा खातिर आजुवो इयाद कइल जाला। जेतना सं ख्या में संस्थान,पाकिट संस्था आ व्यक्ति विशेष भोजपुरी के मान्यता के बात करेला हवा में ओतना सं ख्या में अगर भोजपुरी साहित्य पर व्याख्यान आयोजित कर देवे गिनती खातिर ना साहित्य समृद्धता खातिर त असहीं संवैधानिक मान्यता मिल जाई भोजपुरी के। जे बासे के बीच कहनाम इहे बा कि कामे काम आई नाम धरल रह जाई।एह से कहत बानीं कमवा के मापे खातिर, संवादहीनता के स्थिति हटावे,बात – बतकही के सिलसिला चलावे खातिर हमनी बीच एगो नामवर के जरूरत बा ई माने के पड़ी।

आलोचना खातिर आलोचक भिरी दृष्टिकोण आ विचारधारा दूनों होखे के चाहीं बाकिर दृष्टिकोण के विचारधारा से अधिक तरजीह देवे के होला। दृष्टिकोण में दृष्टि पर अधि ाका। काहे कि विचारधारा से अलगो साहित्य के सत्ता बा, तुलसी,सूर के देखल जा सकेला। आलोचना के राह कठिन होला एही से ई दू आँखि से काम ना चले आ तीसरा आँखि खोले के पड़ेला रचना के सत्य जाने खातिर आ तीसरा नेत्र के परख रचना के सत्य के परखि जुग के सत्य बना देला। आलोचक के तीसरे नेत्र अनेक मान्यता आ प्रतिमान से गुजर के आलोचक ऊ दृष्टि देला जे स्थापित करेला रचना के भीतर बइठल असली मूल के असली रूप में अपना आलोचना में। बाकिर आलोचक आपन स्थापित मान्यता आ प्रतिमान में बंध के ना रहे जरूरत अनुसार ओह मान्यतन के तुड़ आगे बढ़ेला जे से रचना के असली मूल से ना भटक पावे। आलोचना में असहमति होखे के चाहीं बाकिर विरोध खातिर ना विकास खातिर। अनुचित के स्वीकार कइल त आलोचना कर्म – धर्म के हत्या कइल ह।जे समय पर आलोचक के माथ के कलंक साबित हो जाला। साहित्य में आज गुटबाजी हावी हो गइल बा जे साहित्यकार के दूर दृष्टी त नाश करिये देले बा दिमागो पर परदा डाल देले बा। नतीजा समुदाय, जाति विशेष के लोग खाली अपने लोग के साहित्य गढ़े के आ अपना गुट के चारों तरफ चारदीवारी घेरे के अधि ाकारी समझ बइठल बा आ विरोध में बोले लिखे वाला के साहित्य के अस्वीकार कर दे रहल बा। आलोचक में एकर विरोध करे के नैतिक साहस हो खे के चाहीं। कहल गइल बा आलोचना रचना के मूल्यांकन ना होखे ऊ सही मायने में रचना के सा क्षात्कार ह।एह से आलोचक के रचना के गहराई में डूब रचना के अर्थ आ मरम समझे के चाहीं ना त रचना के आत्मा मर जाई आ ओह पर बतकही बतरस बन जाई। कवनो रचना के आलोचना में विषयगत गूंज सुनाई पड़े के चाहीं। आलोचक के दिमाग में ई बात हरदम रखे के चाहीं कि आला. चना पंचायत ना ह आ ऊ सरपंच ना। नामवर सिंह के आलोचना से गुजरला पर ई सब आला. चना के मापदंड, आलोचना के लोकतंत्र आ आलोचकीय परंपरा के निर्वाह मुखर होके बोलत मिली। भोजपुरी आलोचना में एकर आभाव त बड़ले बा साथे मित्र धर्म मुखर होके मित्र के पगड़ी पहिरावत जगह–जगह भेंटा जाई।त कहहीं के पड़ी भोजपुरी के एगो नामवर के जरूरत बा।अब रउवा कहब कि अब त जुगे प्रशंसात्मक आलोचना के आ गइल त नामवर के का जरूरत बा? नामवर के जरूरत आजुवो बा नामवर के ना रहला से आलोचना के मुँह पर करिखा पुता जाई, आलोचना जगत बिला जाई।अब विकल्प में जाये के जरूरत नइखे भल चाहीं आपन भोजपुरी के तऽ एगो भोजपुरिया नामवर के तलाश में लाग जाईं।अन्हरा में काना राजा के फेर छोड़ीं एगो बढ़िया आलोचक राजा ले आई जे त्रिनेत्री होखे नामवर जइसन।

ऊपर में आइल कुछ शब्द जइसे पंचायत, सरपंच, इतिहास,अन्हरा में काना राजा के हम फेर से एहिजा उपयोग में ले आइब, कारण विशेष से ऊ उपर के पुनरावृत्ति ना होखी। भोजपुरी आलोचना के इतिहास करीब 75 बरिस पुरान ह।एह 75 बरिस के लेखा–जोखा के देखला से भोजपुरी आलोचना के गति आ गुणवत्ता दूनो सामने आ जाई।जे देख अतना त कहले जा सकेला कि भोजपुरी में आलोचना पर काम कुछ भइल बा।ऊ आलोचना के काम हमनी के नामवर के भले ना दे सकल होखे बाकिर एगो अइसन जमीन तइयार कर गइल बा जे भोजपुरिया नामवर के काम तनी आसान कर दी। कुछ काट – छांट, जोड़ – घटाव कर आलोचना के लोकतंत्र में फिट करे में सहायक जोग सामग्री उपलब्ध करावे में जरूर सक्षम बा बाकिर उपयोग के पहिले तीसरा आँख से देख लेवे के होई कि आलोचकीय परंपरा के निर्वाह पर प्रश्न चिन्ह जनि खड़ा हो पावे।कहे के माने कि कच्चा माल काम लायक उपलब्ध बा बाकिर चाक पर चढ़ावे के पहिले पानी डाल के लाते – हाथे मिलाके चाक पर चढ़ावे के होखी।ई स्थिति काहे रहल भोजपुरी आलोचना के ओकर कारण खोजब आ भोजपुरिया कहावत में कहब त दूइये गो कहावत सटीक मिली पहिला ' अधजल गगरी छलकत जाय ' आ दूसरा ' अन्हरा में काना राजा ' । मित्र धर्म निर्वहन आ गुटबाजी के प्रश्रय एह खातिर जिम्मेवार रहल बा। भोजपुरिया आलोचक आलोचना के आपन पंचायत आ खुद के सरपंच मान आलोचना के खेती खुद भा बटइया पर करवलले बाड़े कहीं से खाद, कहीं से पानी बटोरके। नांव बड़ आ दर्शन छोटो जिम्मेवार बा आलोचना के स्तर गिरावे में।जे बा से कि शीर्षक बड़का जइसे भोजपुरी कविता उद्भव आ विकास, इक्कीसवीं सदी में भोजपुरी कविता आ काम सात गो भा एगारह गो कवि पर। भोजपुरी साहित्य से दूर के रिसता ना रहल आ लिखे बइठ गइनीं भोजपुरी साहित्य के इतिहास त कच्चा माल एने – ओने से बटोरे के होई आ प्लेगरिज्म के दोष मढ़इबे करी। भोजपुरिया नामवर एहू खातिर जरूरी बा कि भोजपुरी साहित्यिक माटी के फेर से चाक पर चढ़ा, गढ़,आवां में पका सुनहरा रूप में समाज आ साहित्य संसार के सामने भोजपुरी साहित्य के रख देवे।

भोजपुरी साहित्य के न्यायसंगत मूल्यांकन आजु ले ना हो पावल। आलोचकीय लोकतंत्र आ परंपरा के निर्वाह ना होखला से भोजपुरी आलोचना पर प्रश्न चिन्ह लागल।ओकरे नतीजा ह कि भोजपुरी आलोचना के करिया पक्षों सामने आइल उहो कमियन के तोप झांक रखला पर। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ राम. विलास शर्मा के आलोचना कर्मो पर दोष लागल बा आ कमी दिखाई पड़ेला।जहाँ काम होला ओहिजे कमी – बेसी रहेला। उन्हिन लोगिन पर लागल दोष के मुख्य कारण कुछ साहित्य आ साहित्यकार के, कुछ विधा के अनदेखा कइल बा। भोजपुरी आलोचना त एह तरह के रोग के शिकार रहल बा अपना जन्मे से। एकरा खातिर अधिकांश दोष त आलोचके के माथे मढ़ाई बाकिर कुछ व्यवस्थो के माथे। बीसवीं के तऽ बाति छोड़ीं आजु इक्कीसवीं सदी में ना त नियमित भोजपुरी के कवनो समाचार पत्र,ना कवनो नियमित पत्रिका,ना बढ़िया एगो पुस्तकालय, वाचनालय। विश्वविद्यालय में भोजपुरी के भवन बा, विभाग बा बाकिर सई गो किताब खोजब त ना मिली। दूसरा तरफ देखब त आलोचना के ताज भाषा कवनो होखे एकेडमिक व्यक्ति के पास रहल बा। एकेडमिक साइड के पास एह खातिर आवश्यक जानकारी त रहबे करेला,साथे देश – दुनिया के दूसरो भाषा के आलोचना साहित्य में हो रहल काम के जानकारी रहेला। बाकिर भोजपुरी एहू दिसाई छोट किस्मत रहल काहे कि एक दु गो छोड़ आजु ले भोजपुरी के आपन एकेडमिक व्याख्ता तक ना मिलल।एह कारण भोजपुरी भवन में हिन्दी के तबला वादक के बोलबाला रहल जेकर मानसिकता रहे कि हम हिन्दी के रोटी खात बानीं त भोजपुरी के बोल काहे बोलीं। भोजपुरी कुर्सी पर बइठल भा कबजइले हिन्दी के लोगिन से आस बेसी ना कइल जा सके। इहे कारण रहल कि कण्ठ के ऊपरे एकेडमिक में जय भोजपुरी सुनाला बाकिर दिल में हिन्दी के गूंज मिलेला। भोजपुरी ओहि दिसाई आपन नामवर के राह ताकत रहे जे ओकरा ना भेंटाइल। बाकिर मरद के भाषा ह भोजपुरी, हिम्मत नइखे हारल,ओह ओरि टकटकी लगवले बा। तब अइसन स्थिति में जे भोजपुरी आलोचना में आ पाइल बा ओकरा में कमी जरूर बा बाकिर ओकरो खातिर सभ आलोचक लोगिन साधुवाद के पात्र बा कि बिना कवनो सरकारी सहयोग के अपना बलबूते आलोचना के जमीन तइयार कर देलस। जमीन तइयार बा त मेहनत कर बढ़िया फसल उगावे के ताकत भोजपुरी में बा आ ओहि खातिर एगो नामवर के तलाश बा।

भोजपुरी आलोचना के क्रम में भोजपुरी साहित्य के इतिहासो पर एक नजर डालल जरूरी बा। साहित्य के इतिहास लिखे के कुछ सिद्धांत आ प्रतिमान होला।अलग – अलग विधा होखे भा संपूर्ण भोजपुरी साहित्य के इतिहास रउवा संपूर्णता ना भेंटाई। साहित्य इतिहास के सिद्धांत के अनदेखा कर के इतिहास लिखल गइल बा जे अपना जन्म काल से विवादित रहल बा। अइसन स्थिति में ओह

के इतिहास के संज्ञा देल इतिहास के कद छोट कइल होखी। नामवर सिंह के एगो आलेख बा ' साहित्यिक इतिहासः क्यों और कैसे ' ऊ ओह में कहत बाड़न कि ' सुंदर काल नहीं, कला है क्योंकि कला काल पर विजय है इसलिए हम कला या काव्य को कालजयी कहते हैं।' आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्यिक इतिहास के बारे में कह रहल बाड़न कि '' साहित्य के इतिहास के बुनियादी शर्त है साहित्य की ऐतिहासिक कल्पना में विश्वास,जिसका अर्थ है साहित्य की प्रकृति में परिवर्तन आ परंपरा का युगपत स्वीकार।'' '' नामवर सिंह के कथन ह कि '' साहित्य का इतिहास सम्भवतः ऐसे ही सार्थक परिवर्तनों की परंपरा है जो अपने संभाव्य गृहीता को भी इतिहास में परिवर्तनकारी भूमिका निभाने की प्रेरणा देती है।'' अब एह सिद्धांत के देखत भोजपुरी के इतिहास दे खला पर इतिहास के सच्चाई सामने आ जाई। हिन्दी साहित्य में झंकला पर नामवर सिंह के एगो चेहरा साहित्य के इतिहासकारो के रूप में सामने आवेला।जे बा से बा कि इहे देखि एगो भोजपुरिया नामवर के जरूरत महसूस हो रहल बा। अगर भोजपुरिया नामवर सामने ना मिलस त मिलजुल के भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखल ठीक रही।एह दिसाई हाले में डॉ सुनील कुमार पाठक के सोशल मीडिया पर बहुत सुंदर प्रस्ताव आइल रहे नाम के साथे। नाम में कुछ जोड़ – घटाव कर के एगो संपादक मंडल गठित कर कार्य क्षेत्र के विभाजन कर ई काम के अंतिम रूप देल भोजपुरी हित में होखी। इतिहास लिखे के क्रम में कवनो विवादित बाति आवे त मत विभाजन से बहुमत के विचार शामिल कइल ठीक रही। बाकिर एकरो खातिर केहू के सरपंच बनल ठीक ना होखी। कुछ लोग विवाद के डर से सच्चाई से भागेला। जिम्मेवारी से भागे से काम ना चले। रउवा ना बोलब,हम ना बोलब, कवनो दोसर केहू बोली, चुप ना रही।आ सामुहिक चुप्पी रहल त कवनो नामवर सामने आ बोलिहें।एह से भोजपुरी के एक अदद नामवर के जरूरत बा।

कवनो सफल साहित्य के समकाल के साथ चलल एगो जरूरी शर्त होला। बाकिर आलोचना में समकालीनता के समेटल एगो कठिन काम ह। समक.ालीनता के आलोचना कर्म से जोड़ल कठिन एह से होला कि खुद ओह काल से जुड़ल रहला के कारण पूर्वाग्रह – ग्रसित होखे के संभावना त रहबे करेला साथे – साथ समकाल के विषय लगातार बदलत रहेला आ बदलत समय के साथ बदलत साहित्य के मूल्यांकन खातिर मापदंड बदलत रहे के पड़ेला। भोजपुरी आलोचना में समकालीनता ढ़ंग से नइखे समेटा पाइल ना ओह विषय पर ढ़ंग से बतकही भइल बा। भोजपुरी के मूल स्वर माटी आ लोक संस्कृति ह। दूनो के एक शब्द में समेटला पर भोजपुरियत के संज्ञा देल जा सकेला। भोजपुरिया माटी आ लोक संस्कृति में ऊ ताकत बा कि अनपढ़ भिखारी के अनगढ़ हीरा आ शेक्सपियर से नवाज देले बा।ई दोसरा जगह ना भेंटाई। बाकिर एह भाषा के गझिन बुनावट आ बनावट पर,एकर समृद्ध साहित्य आ संस्कृति पर ओह गहराई से बात – बतकही नइखे हो पाइल। भोजपुरी के आपन ठेठ देशी ठाठ बा आ उहे कारण बा कि ओकरा के हिन्दी, अवधी, ब्रजभाषा अपना में समेटे से बाज ना आवे बाकिर हमनी का ओह देशज ठाठ के छोड़ि हिन्दवी बनल जात बानीं जा जेकर छाया आजु के साहित्य में दिखाई पड़ेला। कहे के माने कि समय आ समाज से अनवरत संवाद आलोचना में होखे के चाहीं जेकर अभाव खटकेला भोजपुरी साहित्य में।ई सब बिना नामवर के समेटल संभव नइखे बुझात।अइसन नइखे कि हमनी भिरी नामवर जस क्षमता आ मेधा वाला साहित्यकार नइखे, बा बाकिर भोजपुरी के प्रति सरकारी उदासीनता, विश्वविद्यालय में नाम खातिर उपस्थिति, बाजार आ लोक में भोजपुरी के पैठ के आभाव नामवर के सामने ना आवे देलस ।आजु एह दायित्व के निबाहो करे खातिर भोजपुरी साहित्यकारे के आपन हाथ आगे बढ़ावे के होखी अपना खातिर ना भोजपुरी खातिर। एक – दू अदद नामवर मिल जइहें बड़ी आसानी से।

आलोचना साहित्य में साहित्य से समृद्ध दोसर विषयन के परिवेश में रखि पड़ताल कर के देखे के चाहीं।देखल जाला कि परंपरा के परख के नाम पर आलोचक सरधा भाव प्रदर्शित कर के भा निंदा कर आगे बढ़ जाले।ई हमनी के साहित्य में बेसी मिलेला।ई गलत परंपरा बा।ओकरो आलोचकीय दृष्टिकोण से देखे के जरूरत बा, बतकही के जरूरत बा।ई कइला से पुरान साहित्य, पुरोधा के साहित्य के दशा – दिशा आ दृष्टि के जानकारी मिलेला। आपन भाषाई संस्कृति आ भाषाई विशिष्टता के जानकारी मिलेला।आजु हमनी का आपन ओह अक्षय स्रोत के भुलात बानीं जा जे लोकमानस से जुड़ल रहल बा आ ऊ लोक चेतना से प्रेरणा लेवे के आ जुड़ल रहे के बात करेला। तुलसी 'मानस' से जानल जालन। पुरोधा के रचना के पुनर्पाठ से आलोचना के बल मिल.ला।समय के साथ संदर्भ बदल जाला, अर्थों बदल जाला। पुनर्पाठ रचना में छिपल नया अर्थ के व्याख्या समय के अनुसार करेला। आलोचना खातिर इहो जरूरी होला एकरा पर अब ले भोजपुरी में

बल नइखे दियात। समय के साथ–साथ दउड़ल वै. श्विक जुग में बाध्यता बा,एह के समझ देश – दुनिया के साहित्य के साथ चले के पड़ी आपन धरती पकड़ के। नामवर सिंह एह सवाल पर कि रचना बड़ कि आलोचना, के जबाब में कहत रहन रचना बढ़िया हो खेला त आलोचनो बढ़िया होखेला, आलोचक कवनो लेखक के बड़का ना बनावे, उन्हिन के बड़प्पन स्वीकार करेला, करवावेला।ई भाव आलोचना में रख आगे के राह तय करे के प्रयास होखे के चाहीं। एकरा खातिर भोजपुरी में इहो जरूरी बा कि आजु के चेतन. ावान पाठी प्रतिभावान के भोजपुरी सिरिजना के उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर संवाद आ वाद – विवाद के आयोजन कर नामवर तइयार करे के ओरि बढ़े के होई। बढ़िया आलोचक के प्रतिभा एकरंग के ना होखे आ एक रंग के आधार पर विश्लेषण ना करे के चाहीं। अंत में फिर कहल चाहब कि बाजारवाद सबसे मजबूत हमला विचार पर कइले बा। विचार आलोचना संसार के मूल ह।एह से साहित्य के बाजारवाद से बचावे के पुरजोर कोशिश करे के चाहीं ना त साहित्य आ आलोचना के संसार उजड़ जाई।ई काम नामवर जस साहित्यकार आ ओलचक के बिना संभव नइखे। नामवर जस संवादी व्यक्तित्व आ वैचारिक सत्तावान व्यक्ति के खोजल कवनो खेल के काम ना ह बाकिर हमनी भोजपुरिया के शब्दकोष में मुश्किल शब्द नइ खे।संत साहित्य में कबीर,लोक नाट्य क्षेत्र में भिखारी, लोक गीत में महेंद्र मिश्र आ साहित्य अनेक विद्वान से भरल बा त आस रखीं भोजपुरी खातिर कवनो नामवर जल्दी सामने जरूर अइहें। भोजपुरी के शानी तबहीं लोग मानी जब हमनी बीच भोजपुरिया नामवर सिंह आ जइहें। भोजपुरी के अलख जगाईं जा, नामवर के आवे के पड़ी, स्वागत के तइयारी होखे।

❑❑

❍ राँची, झारखंड
चलभाष – 9102246536

दीपक तिवारी

बडी बा मुश्किल

बड़ी बा मुश्किल ए भाई,समझावल मेहरारू के,
मुर्गी मछरी खाए वाला,पीए वाला दारू के।

मरद मरदवा गल्फ में रोजे,झेलेतारे दुख,
कूलर पंखा ऐसी घर में, मेहरी करे सुख।

गाँवो के सब लोग कहे,पईसा बड़ी कामाला,
मुँहा मुहि चारो ओरी,ाई गईल बा हाला।

मेहनत केहू देखे ना, अपने गीत गावे,
ऊपर से चिकन चाकन,लउके उहे बतलावे।

खुश करे में सबका के,बहे रोज पसीना,
फक्र से बाप दादा,ौड़ा करें सीना।

सब सुविधा मिली त,के बुझी परेशानी के,
केकरा सोझा रोवब तू,के सुनी कहानी के।

रुपिया पईसा कमा के देब,तिया करी सेवा,
ना त झाडू देखा के कही,आव पूजा करीं देवा।

सब मतलब के साथी,हित मीत घर परिवार,
बिन स्वारथ चले नाही, आपन ई संसार।

कतनो कहब शराबी,तोहार एक ना सुनी,
नशा में जब रही त,अपने खाली धुनि।

सूझ–बूझ से जीवन के गाड़ी,आगे लेके जईह,
अइसन कुछ ना करिह,की बादे में पछतईह।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

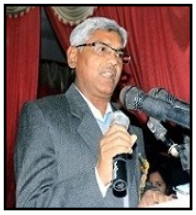

तीन गो कविता

डॉ हरेश्वर राय

लोगवा मुँह फेरि के हँसे

मुखिया चढ़ल बाड़न चनरा के कपार प
भों भों करत फिरे उखी में सियार प ना।

लमहर कुरुता बा सिअववले
ओह प भईंसा बा बनववले
खुरिआ पटकत फिरे चउक पर बाजार प
भों भों करत फिरे उखी में सियार प ना।

देसी दिन दिन भर डकरत बा
दिनभ अकर बकर फेंकरत बा
रहि रहि टूटत बाटे नेमुआ के आँचार प
भों भों करत फिरे उखी में सियार प ना।

चनरा चचिया के घर बइठे
आपन आठों अंग ऊ अंइठे
लोगवा मुँह फेरि के हँसे ओह मक्कार प
भों भों करत फिरे उखी में सियार प ना।

❑❑

घंटा

मोंछ सफाचट बा त मुंड़ाइब का घंटा
आँखि हमार कानी लड़ाइब का घंटा।

मंगरुआ दुआरे चढ़ि झोंके रोज गारी
लऊरि ना पनही तड़तड़ाइब का घंटा।

माल लेके जात बाड़न सेठजी अकेले
पेस्तउल त बा ना अड़ाइब का घंटा।

जाड़ा में पाहुनजी के होई जब आमद
राजाई में सइ छेद ओढ़ाइब का घंटा।

ना पोथी ना पतरा ना मानस ना गीता
लइकन के क्लास में पढ़ाइब का घंटा।

❑❑

मुखिअई लड़ीं

नोकरी सोकरी कइलीं नाहीं
कइलीं ना कमाई, मुखिअई लड़ीं
पिया तबे छूटी जिनिगी के काई, मुखिअई लड़ीं।

नैहर के साया साड़िन से
कब तक दिन कटाई जी
कतने फागुन अइहें जइहें
गलिया ना चिकनाई जी
पिया भाग रउरो अबकी अजमाईं, मुखिअई लड़ीं।

देवरु मुखिआ के मउगी
रोजहीं बदले ओठलाली जी
कई बरीस से रोज मनत बा
उनका घरे दीवाली जी
बा मोहाल एने लकठो के मिठाई, मुखिअई लड़ीं।

काठा कठुली बेंचि के राजा
माल थोरे गठिया लीं जी
दू –चार चोर लफंगन के
रउरा बलमा पोटिया लीं जी
रउरो राखीं अपना बगली में सलाई, मुखिअई लड़ीं।

❑❑

○ रतना, मध्य प्रदेश

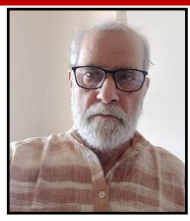

भोजपुरी माटी, भोजपुरी भाषा आ हमार लेखन

विजय कुमार तिवारी

हमरा खातिर सुखद संजोग बा कि फेरु भोजपुरी भाषा के खिंचाव अनुभव हो रहल बा। एकर कारन भाषा के लालित्य,चमत्कार आ शब्द सामर्थ्य बा। दुनिया के कवनो भाषा नइखे जेकरा शब्दकोष में एक भाव,एक सम्बन्ध खातिर एतना शब्द होखे। इ सब जाये दीं,बताईं,मन खुश कब होला? तबे नू,जब आपना बोली में,आपना भाषा में कहल–सुनल जाला। एह बात से,केहू बा जे सहमत ना होई? हमरो सगें अइसने बा,खांटी भोजपुरी जिला,बागी बलिया में जनम भइल बा। अंगरेजी हमरा कम बुझाला,हिन्दी में लिखत–पढ़त रहि गइनी।

भोजपुरी भाषा में लेखन के शुरुआत के पीछे एगो कहानी बा। आजु सुनावे में कवनो संकोच नइखे,बल्कि मन खुश बा कि जीवन के सच्चाई बतावे के मौका मिलल बा। एकरा पीछे केहू भोजपुरिया भाई के इयाद आवता। शायद हमार पहिलका भोजपुरी कविता रहे जे आकाशवाणी पटना से प्रसारित भइल रहे–

''अकसर चलेनी हम घरवा से जल्दी,
उनका गली में अबेर होइ जाला।''

शुरु–शुरु में,1981–82 में हम पटना अइनी, कबो–कबो रिक्शा से एने–ओने घूमत रहनी। मछुआटोली में निवास रहे। अइसहीं एक दिन समनहीं 'आकाशवाणी' के बोर्ड दिखाई दिहल। भीतर दूर तकले खाली–खाली लागल। एगो गोर–गार भाई जी केनियो से निकलनी आ हमरा से पूछनी,''केकरा के खोजतानी?''
हम कहनी,''ना, केहू के खोजत नइखी,अइसहीं देखे आइल बानी।''
उहाँ का पूछनी,''कुछु लिखेनी का–कविता, कहानी? हेने आईं।''

उनुका पीछे–पीछे एगो कमरा में गइनी, कुर्सी–टेबुल लागल रहे। उहें के कार्यालय रहे। हमरा बुझाइल, जरुर कवनो अधिकारी होखबि,सामने वाला कुर्सी पर बइठि गइनी। उहाँ का कहनी,'' रामजी यादव हमार नाम ह,हम भोजपुरी विभाग के काम देखेनी, जदि भोजपुरी में कुछु लिखले बानी,त आपन नाम,पता के साथ हमरा के दे दीं। अभी ना हो खे त बाद में भेजि देबि। ठीक–ठाक लागी आ पसंद आई त बोलावल जाई।''

संजोग देखीं,हमनी दूनो आदमी के घर बलिया रहे। जलदिए आकाशवाणी के चिट्ठी मिलल आ हमार हिन्दी–भोजपुरी कविता,कहानी,लेखन के प्रसारण होखे लागल। पटना में रहला के लाभ इहो रहे,जब कवनो दूर–दराज के रचनाकार समय पर ना पहुँचि पावसु त हमरा के फोन पर बुला लेत रहे लोग। ओह घरी,सीधा–प्रसारण होत रहे। बाद में रिकार्डिंग होखे लागल। हम गाँवे, बाबूजी के चिट्ठी लिख देत रहनी, प्रसारण के दिन,समय बता देत रहनी,गाँव भर में खबर हो जात रहे आ लोग रेडियो खोलि के हमार कविता,कहानी सुनत रहे। ओह घरी के आनंद कुछु अउरुवे रहे। गाँव के बाबा,चाचा लोग चिहात रहे आ खूब खुश होत रहे। पटना के अखबार में,भोजपुरी पत्रिका में कहानी छपे लागल। जब्बार साहब,प्रियरंजन राय के साथे मिलिके हमनी भोजपुरी में ''कलँगी'' पत्रिका निकाले लगनी जा। खूब आनन्द रहे,खूब लिखात रहे आ खूब चर्चा होत रहे। 1992 में हमार पटना–प्रवास खतम हो गइल आ भोजपुरी, हिन्दी लिखल,पढ़ल सब छूटे लागल। अब समझ में आवेला,हमार बाबा एही से नौकरी–चाकरी के आछा ना कहत रहले आ खेती–बारी के श्रेष्ठ बतावत रहले।

सेवा–मुक्त भइला के बाद फेरु से लेखन शुरु भइल बा आ एतना भरोसा बा कि फेसबुकिया लेखक त होइये जाइब। फेसबुक बढ़िया मंच बा, जे मन करे लिखीं,दू–चार लोग पसंद कइये दिहें आ मन बढ़ावे खातिर टिप्पणियों कर दिहें। हमरो कल्यान होखे लागल। लोग तारीफ करे लागल आ झाड़ पर चढ़ावे लागल। हमहूँ चढ़े लगनी। दे खीं,दुनिया में आछा लोगन के कमी नइखे,कुछ लोग सलाह देबे लागल कि पत्रिकन में भेजल जाव। अप्रैल–मई–जून 2021 अंक में गुजरात के संपादक पंकज त्रिवेदी जी आपना पत्रिका 'विश्वगाथा' मे एगो हमार लिखल कहानी छापि दिहले। लोग खूब सराहे लागल। हमरा बुझाइल कि अभी कुछ लेखन हमरा में बाकी बा। एगो अउरु संजोग बनल। कनाडा के टोरंटो विश्वविद्यालय में पढ़ावे वाली प्रवासी कथाकार, उपन्यासकार डा० हंसादीप जी से साहित्यिक चर्चा होखे लागल। हमरा लागल कि इ बातचीत साहित्य में कहीं दर्ज नइखे होत,हम उनुका से कहनी,''हमार मन करता कि अब समीक्षा लिखीं।'' उनुके कहानी संग्रह ''उम्र के शिखर पर खड़े लोग'' से हमरा समीक्षा लेखन के शुरुआत भइल। अहमदाबाद के पत्रिका मानवी में उ समीक्षा छपियो गइल। बाद में उ ''समीक्षा' जइसन मशहूर पत्रिका में छपल।

विजय कुमार तिवारी

'मानक भोजपुरी ब्याकरन' भोजपुरी लोगन खातिर जरूरी ग्रंथ

एगो अउरु संजोग देखीं, पिछला साल सितम्बर में हम बिहार,उत्तर प्रदेश गइल रहनी। तब तकले हमार लिखल कइगो समीक्षा छप चुकल आ लोगन के धियान जाए लागल रहे। छपरा के भाई विमलेन्दु भूषण पाण्डेय जी के किरपा भइल,उहाँ का छपरा से मोटरसाइकिल से आरा आ गइनी। हमरा पहिला बार समझ में आइल कि लेखन सचमुच एगो बहुत बड़ काम ह। ओह दिन हमरा लेखन के सम्मान अनुभव भइल। विमलेन्दु जी भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार राम नाथ पाण्डेय जी के सुपुत्र बानी। उहाँका आपना बाबूजी के लिखल दू गो भोजपुरी के उपन्यास ''बिदियाँ'' आ ''महेन्दर मिसिर'' दिहनी। उ दिन हमरा खातिर बहुत महत्वपूर्ण रहल। उहाँ का साथे दू–तीन गो अउरू लेखक लोग रहे। भोजपुरी के दूनो उपन्यास पाके मन गद्गद हो गइल। दूनो उपन्यास पर समीक्षा लिखनी आ दूनो समीक्षा छपल।

इहो संजोगे नू कहाई, हाले में गाजियाबाद जाये के अवसर मिलल। भोजपुरी पत्रिका ''भोजपुरी साहित्य सरिता'' के संपादक आ भोजपुरी भाषा के प्रसिद्ध लेखक डा० जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी से मिले के मौका मिलल। उहाँ का आपन दू गो पुस्तक आ पत्रिका के चारि गो अंक दिहनी। एही में हमार 'महेन्दर मिसिर' वाली समीक्षा भी छपल बा। हमरा बुझा गइल बा कि भगवानो जी चाहतारे कि हम भोजपुरी भाषा में लिखीं आ भोजपुरी के सेवा करीं। इ हमरा खातिर हमार सौभाग्य बा। सुखद बा कि आजु भोजपुरी लेखन खातिर छपे के समस्या नइखे,लोग खूब लिखता आ छपता। कवनो भाषा तबे विकसित होले जब ओह भाषा के आपन साहित्य,शब्दकोष, व्याकरण आ लिखे–पढ़े वाला लोग होले। भोजपुरी दुनिया के सौभाग्यशाली भाषा ह जेकर आपन लोकगीत,संस्कृति आ संस्कार बा। हमरा खूब खुशी, संतोष बा कि हमार जनम भोजपुरी माटी में भइल बा आ हम आपना भोजपुरी माटी के नमन करत बानी।

❑❑

❍ टाटा अरियाना
हाऊसिंग,टावर–4
फ्लैट–1002
पोस्ट–महालक्ष्मी
विहार–751029
भुवनेश्वर,उडीसा,भारत
मो०–9102939190

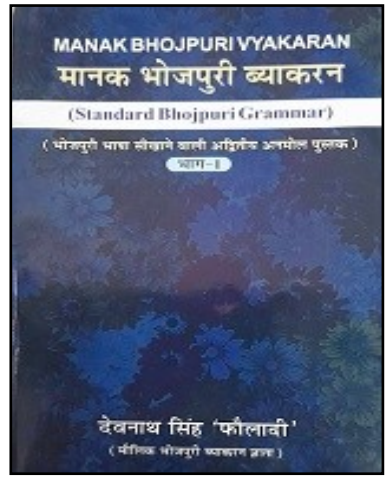

सब भाषा के आपन–आपन ब्याकरन होला। बिना ब्याकरन के भाषा के संस्कार ना बनि पावेला। एह से प्रबुद्ध लोग ब्याकरन पर जोर देला। महर्षि पाणिनि आठ अध्याय वाली अष्टाध्यायी के रचना कइके संस्कृत भाषा आ साहित्य के मजबूत आधार दे दिहले। आपना ब्याकरन के ग्रंथ के आधार पर उ अमर हो गइले। अष्टाध्यायी पर महामुनि कात्यायन विस्तृत वार्तिक ग्रन्थ लिखले। सूत्र आ वार्तिक पर भगवान पतंजलि विशद विवरणात्मक महाभाष्य लिखि दिहले। संक्षेप में सूत्र,वार्तिक आ महाभाष्य तीनों सम्मिलित रूप से 'पाणिनीय व्याकरण' कहाला। सूत्रकार पाणिनि, वार्तिककार कात्यायन आ भाष्यकार पतंजलि – तीनों लोग मिलिके व्याकरण के 'त्रिमुनि' कहल जाले। ओइसहीं अंग्रेजी के,हिन्दी के आ हर भाषा के आपन–आपन ब्याकरन लिखाइल बा। भोजपुरी भाषा के जस–जस विस्तार होत गइल, गीत–साहित्य लिखाए लागल,त ब्याकरन के जरुरत महसूस भइल। दुनिया विद्वान लोगन से भरल बिया। भोजपुरी भाषी लोगन में जानकार लोगन के कमी नइखे आ ओह लोगन के ध्यान एह दिशा में गइल।

कुछ दिन पहिले विशाखापट्टनम में बसल आ रोहतास,बिहार में जनमल, मौलिक भोजपुरी ब्याकरन ज्ञाता देवनाथ सिंह 'फौलादी' के ग्रंथ ''मानक भोजपुरी ब्याकरण'' हमरा मिलल। इ हमार कवनो सौभाग्य जागल होई, उनुका के डा० दीपक पाण्डेय जी हमरा बारे में बतवनी आ फोन से बात करववनी। देवनाथ सिंह जी के आदेश मिलल कि एह पुस्तक पर कुछ लिखि दी। भोजपुरी हमार आपन बोली, भाषा ह। पटना, आकाशवाणी से हमार लिखल भोजपुरी कविता,कहानी कबो खूब प्रसारित होत रहे। उ रेडियो के जमाना रहे। जहिया हमार कार्यक्रम होखे हमरा गाँव में दुआर पर रेडियो खोलि के लोग सुनत रहे। लोगन के विश्वासे

ना होखे,घर–परिवार के केहू आपन लइका बोल रहल बा। हमनी ओह घरी ''कलंगी'' भोजपुरी पत्रिका निकालत रहनी जा। पटना छूटल त भोजपुरी में लिखल–पढ़ल कम होत गइल।

सेवा–मुक्ति के बाद हम कविता–कहानी आ समीक्षा लेखन में लागि गइनी। छपरा के रामनाथ पाण्डेय जी के लिखल भोजपुरी भाषा के पहिलका उपन्यास 'बिंदियाँ' आ दोसरका उपन्यास ''महेन्दर मिसिर'' के समीक्षा लिखे के संयोग बनल। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के भोजपुरी गीत संग्रह ''आखर–आखर गीत'' के समीक्षा कइनी। उ सब समीक्षा भोजपुरी पत्रिका ''भोजपुरी साहित्य सरिता'' में छपल बा।

देवनाथ सिंह 'फौलादी' जी भोजपुरी भाषा खातिर बहुत मेहनत कइके 'मानक भोजपुरी ब्याकरण' के रचना कइले बानी। उहाँ का एह ग्रंथ के समर्पण आपना माई–बाबूजी के,आपना गुरु के, भिखारी ठाकुर जी के आ मॉरीशस के विद्वान ला. गन के कइले बानी। उहाँ के लिखल 'आमुख', 'आपन बात' आ 'कृतज्ञता ज्ञापन' में विस्तार से एह ग्रंथ के बारे में समझल जा सकेला। एकर प्रकाशन 'साहित्य संस्थान' गाजियाबाद से भइल बा। एह तरह से देखल जाउ त देवनाथ सिंह जी बहुत जरुरी आ बड़हन काम कइले बानी। उहाँ का लिखले बानी कि कवनो भाषा के सही बोले आउर लिखे के ग्यान करावे वाला शास्त्र के नाम 'ब्याकरन' ह। पहिले भाषा के जनम होला। बाद में भाषा के सही बोले खातिर ब्याकरण बनावल जाला। आगे ध्वनि,भाषा आ लिपि पर चर्चा कइले बानी। भोजपुरी भाषा खातिर देवनागरी लिपि के प्रयोग होला। बर्ण, बर्णमाला,स्वर आ ब्यंजन बर्ण सहित उच्चारण विधि पर विस्तार से लिखले बानी। बर्ण–संयुक्ताक्षर आ बर्ण–विच्छेद के साथे–साथे दुरुह अक्षर पर विचार कइले बानी। शब्द रचना,सार्थक शब्द,निरर्थक शब्द, तत्सम आ तद्भव शब्द,देशज आ विदेशी शब्द पर उदाहरण के साथे भोजपुरी भाषा में समझावे के कोशिश कइले बानी। एह ब्याकरण ग्रंथ पढ़ला से भोजपुरी भाषा के शब्द भंडार के जानकारी हो जाई। एकार्थी,अनेकार्थी,समानार्थी आ पर्यायवाची, विपरीतार्थी आ विलोम शब्द,भिन्न–भिन्न अर्थ वाला आ विकारी–अविकारी शब्दन के खूब उदाहरण लिखले बानी।

अक्षर मिलि के शब्द बनेला आ कई शब्द आ शब्द–खण्ड आपस में मिलिके नया शब्द बना देलनस। एह क्रम में उहाँ का विस्तार से उपसर्ग, प्रत्यय,संधि आ समास पर चर्चा कइले बानी। संभवतया संस्कृत आ हिन्दी भाषा के ब्याकरण उहाँ के एह ब्याकरण के लिखे में आधार रहल होई। जब देवनागरी लिपि में भोजपुरी लिखल–पढ़ल जा रहल बा त ओकर ब्याकरण खातिर हिन्दी आ संस्कृत ब्याकरण आधार–स्वरुप होखहीं के चाहीं।

❑❑

❍ टाटा अरियाना हाऊसिंग,
टावर–4 फ्लैट–1002
पोस्ट–महालक्ष्मी विहार–751029
भुवनेश्वर,उडीसा,भारत
मो०–9102939190

अजय साहनी

गजल

अँखिया भरल ,आऊर का
दिल बा दुखल, आऊर का?

घायल भइल, पागल भइल
माथा हमर , राऊर का ?

बकरा बली के भइनी हम
प्यार ह चना – चाऊर का ?

सब जगहा दुत्कारे मिलल
तहरो चलन – बाऊर का ?

मठ एक दिन बुझिहे 'अजय'
लिखते रहीं – आऊर का ?

❑❑

❍ **रोहिणी सेक्टर 7 नई दिल्ली**

सजग शब्द के रंग : शब्द साधक के साधना के फलाफल सयुक्त त्रिफला

कनक किशोर

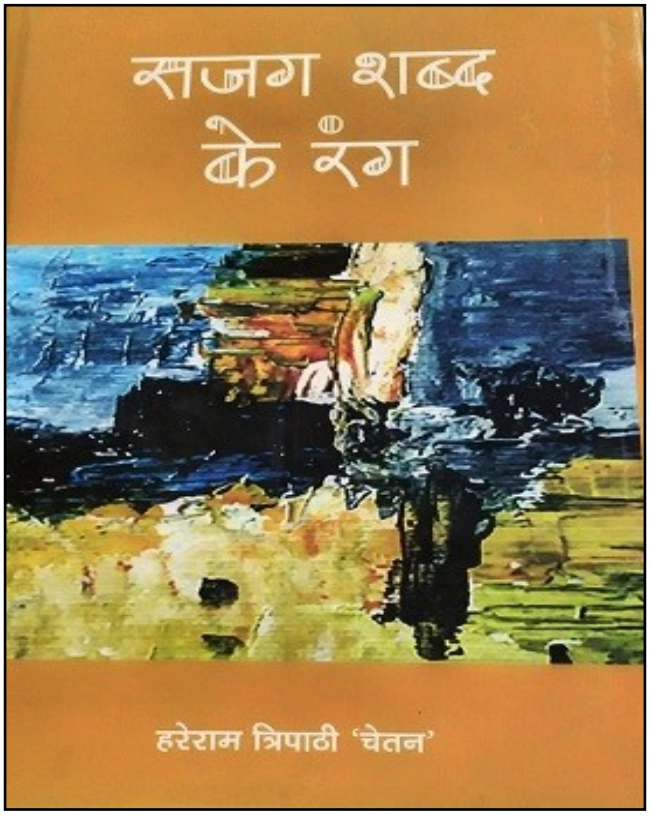

'छन्द छोर दू धनुष के, लय हऽ टानल डोर।
शब्द–धनुष, अनुभूति–शर,साधे कवि रस–बोरि।।'

एह दोहा में कवि कइसे कविता रचेला बतावल गइल बा।ई हम नइखी कहत।ई आचार्य श्री हरेराम त्रिपाठी ' चेतन ' के कथन ह। उहां के किताब ' सजग शब्द के रंग ' से लेल गइल बा। हिन्दी, भोजपुरी आ संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार चेतन जी कवनो परिचय के मोहताज नइखीं।दू दर्जन से अधिक किताब पद आ गद्य दूनो विधा में अबतक आ चुकल बा। बाकिर उहां के प्राण बसेला पद में आ खून के कतरा – कतरा में भोजपुरी विराजमान बा। उम्र के एह पड़ाव में उहां के रचनाशीलता, सक्रियता आ साहित्य के प्रति समर्पण युवा के मात दे रहल बा।ओकरे नतीजा ह कि साल में चार – पांच किताब हमनी बीच आ जा रहल बा आजुवो।' सजग शब्द के रंग ' वर्ष 2022 के काव्य संकलन ह जेह में कुल चौरानबे गो छंदयुक्त कविता संग्रहित बा।एह संकलन के साहित्यिक त्रिफला के संज्ञा देल उपयुक्त होई काहे कि अपना में ई संकलन दोहा,गीत आ कविता के तीन रसयुक्त विधा के समाहित कइले बा। विधा भले तीन गो नजर आवता बाकिर रंग अनेक नजर आवत बा एह किताब में। कहीं माटी आ भाषा के मिठास, कहीं प्रकृति के गान, कहीं देशभक्ति के प्राण, कहीं सांच के बखान, कहीं गाँव त कहीं समाज के बयान आ कहीं – कहीं इतिहास भूगोलो के विविध रंग उकेरल गइल बा एह संग्रह में उहो बड़ा गहिराह आ चटक रंग में सरल, सुबोध आ गंवई अंदाज में गाँव आ लोक के भाषा भोजपुरी में। शब्द सजग होला तब त शब्द के ब्रम्ह के संज्ञा देल गइल बा। शब्द के सजगता बढ़ जाला जब शब्द के साधक ओकरा के छंद में बान्हि के काव्य के रूप देला। शब्द के साधक सिद्ध साधक होखे त सजग शब्द चेतन में बदल जाला आ ओकर संप्रेषिणीयता आ सार्थकता पाठक के अपना लय में बान्हे में सफल हो जाला। आचार्य श्री चेतन एगो शब्द के सिद्ध साधक हईं जे एह संकलन में स्पष्ट दिखाई पड़ रहल बा। चेतन जी एह संकलित कवितन में पाठक के कल्पना लोक में ना घूमा के समय आ सांच से जोड़ले बाड़न।एह संकलन में करोना महामारी के दौरान रचल कवितो शामिल बा जे उदास माहौल में रचल गइल बा बाकिर ओह उदासी में उम्मीद जगावे के प्रयास कइल गइल बा।एक बात अउरी कवितन के देखे से पता चलत बा कि कवितन में भावुकता के कम जगह देल गइल बा आ तार्किकता के अधिका जे पाठको के जगह – जगह पर सोचे के मजबूर कर देता।हम कह सकिला कि ई संकलन चेतन जी के एगो ' शब्द सजग ' कवि के रूप में स्थापित करे में सफल बा। संकलन के कवितन से पता चल रहल बा कि कवि के वर्तमान के गहिर समझ बा जे काव्यन में पुष्पित – पल्लवित होत जगह – जगह दिखाई पड़ रहल बा। कवि के विचार आ अनुभूति के काव्यमय रूप में पुष्पित हो रहल कवितन के ओरि ध्यान खींचल चाहब एही संकलन के कुछ पंक्तियन के माध्यम से –

कवि उहे प्रेम रस पीये के आह्वान करत बाड़े जवन कबीर चखले रहन, राधा चखले रही आ कहत बाड़े –
पी – पी रस, रस – रूप के, चारो फल बेकाम।
भाव चाव से फरिछ हिय, छवि लउके घनश्याम।।
चाह आदमी के कहीं के ना छोड़े।सांच राह के पथिक खातिर त जहर होला चाह।तब कवि कह रहल बा –
चाहे जीव जंजाल हऽ, डहकावे दिन – रात।
चाह सँकोरीं, चढ़ादीं, इष्ट – चरण में गात।।
ओहि क्रम में सांच के महता बतावत कवि कह रहल बा –
सच के करीं सुभाव निज,सच सच साँसनि साँस।
साँच बनी संस्कार जब, सुरझी जीवन – गाँस।।
प्रकृति आ पर्यावरण के प्रति कवि के सजगता देखे जोग बा –
प्रकृति करे नर के सदा व्याख्या हँसि – मुस्काइ।
गलत लिखे नित भाष्य नर, बन संपदा – चुराई।।
बढ़िजाई कुछ साल में तापमान तिन अंश।
लाखनि संख्या में मिटी निश्चय मानव – बंश।।
चुप जंगल के सुर रही, धड़कन, सपना बन्द।
आँखिन में सीसा गड़ी,बस इयाद के छन्द।।
नइखे बूझत आदमी बन – धड़कन के अर्थ।
झील लोर के अरघ दे सूखत तन – मुँह जर्द।।
कारखाना वातावरण सभ मनुष्य उत्पाद।
खात – पियत,जागत – सुतत,झउरे में अहलाद।।
आज मरल जा रहल आदमीयत आ झूठ के बढ़त बाजार कवि के नजर से ओझल नइखे रह पावत –
बोलत आदमी झूठ सभ, बोलत झूठ बजार।
मोल लगावत झूठ ऊ, अदमी खरीदत खार।।
अहंकार के अश्व पऽ, बाटे सभे सवार।
सँच के मंजिल ना मिली, ना सपना साकार।।
व्यंग्य के धार देखीं आजु के आदमी पर –
अब अदमी के पीठि में, निकसल दू – दू पाँख।
सच, अदमी के पेट में, ऊगल दू– दू आँख।।
संस्कृति आ इतिहास के मोल के कवि समाज के अस्तित्व से जोड़ देख रहल बा आ कह रहल बा कि –
संस्कृति आ इतिहास के, चिन्ह अबो मौजूद।
तक्षशिला, नालन्द के, खँडहर देखीं खूद।।
हर कोना,हर धड़क पऽ, जब लउकी इतिहास।
पास बुला अँकवार दी, बढ़ी सदी के साँस।।
भूगोल पर नजर रखत देशप्रेम के गान कवि गा रहल बा –
तिब्बत से सेना हटा, झिनझियांग में भेज।
करे इशारा युद्ध के, कुटिल शत्रु बा तेज।।
तिब्बत से भूटान आ, सिक्किम तलक तिकोन।
दुश्मन के हरकत बढ़ल, गलवानो गोंग।।
आगे कहत बा –
कबो मटके ना देहब मान, तिरंगा –शान के प्रन बा।
हमेशा ई उड़ी ऊँचा आ'जनगन मण' गुँजी पहिले।।

कवि के देशप्रेम के नमूना गीत –
शब्द! जा सीमा पऽ रणभेरी बजादऽ।
अरथ अब विश्वास के अउरा गइल।।
छल के अजगर के उदर में बिखि भरल।
लुंगपा। दमचौक बा पलासी भइल।।
झारखंड कवि के कर्म भूमि रहल बा। झारखंड के संस्कृति के सुक्ष्म अवलोकन नीचे के पंक्ति में देखल जाय –
हिय धड़कन पल–पल कहे, अखड़ा,मान्दर, नृत्य।
टुहिला, बँसुरी, केन्दरा, सारंगी भल रीत।।
चलल नऋऊ, लय–ताल में, हर मुँह बोल संगीत।
मान्दर वृक्ष, नितम्ब – धुन, राग – रागिनी गीत।।
परिवार,समाज,गाँव, संस्कृति कवि के कविता से लय – ताल मिला डेग बढ़ा रहल बा जे अनेक रूप में कवितन में विराजमान बा –
आपन भाषा, परब, व्रत,हुलस तीज तेवहार।
अपनापन परिवार में, लय से छँटे अन्हार।।
धड़कन – धड़कन गाँव बा,साँस –साँस बा साँझ।
भोर – पराती प्रान बा, पलक उमर– पग झाँझ।।
आजु गाँव के का हाल बा ऊ जाने खातिर गुजरे के होई ' अब बा ऊ गाँव कहाँ ' से। बड़ा सुनर वर्णन बा गाँवन के आज के दसा के एह कविता में।
बाकिर समय के साथ बदलत गाँव आ संबंध के दरद कवि के आँखि देख बोल पड़त बा –
बदलल सूरत गाँव के,बदल गइल सभ ठांव।
सभ सम्बन्ध। बबूर के, काँट चुभावे दाँव।।
माई के ममता के इयाद करत कवि कह रहल बा –
माँ दुलार के पालकी, माई मंगल मंत्र।
माई दू – दू बंश के,मान शील – सयंत्र।।
माई के जिनगी सदा बस भट्ठी के आँच।
झूठन के इजलास में,माई बस एक साँच।।
बेटी पर कवि के उद्गार देखीं –
बेटी दुधिया। चान्दनी, बेटी सृष्टि – पसार।
बेटी धड़कत चेतना,दियना – जोति उदार।।
कोराना के त्रासदी के बीच कवि के कलम बोल रहल बा चुप नइखे बइठल –
लिपटि कसेला घेघ के, करे जीभ बेस्वाद।
फूल गमक ना नाक में, छन – छन चूकत नाद।।
.....
केहू ना पुछार जाता
सहमल सिहिंरल सभे बुझाता

फोन से शोक जतावल जाता
फेसबुक से बस सरग भेजाता
.....

उम्मीद के दीया जरावल साहित्यकार के धरम।कवि के कवि कर्म कोरोना के प्रति –

आजु दीया के टेम्ही सजग साँझ में
मद कोरोना के निश्चित झुका के रही।

कवि के गाँव गंगाकछार में बा। जन्मभूमि के माटी पर सभका गुमान होला।ओकर गुण कवि के शब्द में –

मान मिलर चाणक्यो से इहँवाँ के गजराजन के
पाणिनि सुत्र गिने कारूष संग आन राजराजन के
ए माटी के चुम्बक से वैकुण्ठो विवस खिंचाइल
अइले हरि बन नाट चरितवन बना रूप वामन के।

भोजपुरी के प्रति कवि के राग आ विचार देखीं –

भोजपुरी के हम कतना बहाल
भीतर सँगोरि जीहीं ले।
आवत–जात ज्वार सागर के,
छन–छन ध्रुपद–अलाप सुनींले।

भोजपुरी साहित्य के प्रति सजग करत कवि के अनुभवी आँख बहुत कुछ कह कुछ निदेशो दे गइल बा –

अधकचरा इतिहास लिखाइल/गोल घरौंदा चाकल बा/साँचा कवि साहित्यकार के/बाकी कूतल आँकल बा।

आगे ध्यान देवे जोग सुझावो बा –

अनकर चसमा पेन्हि पेन्हि के/ भोजपुरी के जनि आँकीं/अपना आँखि, कसौटी अपना से/कवि के रचना जाँचीं।

भोजपुरी के एगो बड़ तटस्थ साहित्यकार के एह बाति के मरम बूझे के होखी आ आँखि खोले के होखी ना त आँख अछइत आन्हर में त नाम लिखाइले बा।कवि कर्म ह इशारा कइल समझे के काम हमनी के माथे।

चेतन जी के शब्द उधार लेके उहां के एह संकलन खातिर कहल चाहब कि उहां के निर्धारित पैमाना पर ई संकलन खरा उतरत बा।

चिपकि रहे अभिव्यंजना अनुभूतिन के संग।
कवि के चेतन – सिरिजना वेग संयमी ढंग।।

जहाँ तक भाषा के सवाल बा त समीक्ष्य संग्रह के भाषा सहज,सरल आ लोक प्रचलित बा। लोक भाषा के लुप्त हो रहल आ जनजीवन में रमे वालन शब्दन के प्रयोग कवितन के मिठास बढ़ा दे रहल बा। संग्रह में संकलित कविता कवि के भाषाई संवेदनशीलता अउर सामाजिक सरोकार के गवाही दे रहल बाड़ी स। एगो पठनीय सुनर कविता संग्रह जेकर कविता बिना हल्ला गुल्ला कइले पाठक पर आपन छाप छोड़त आगे बढ़ल जात बा। चेतन जी अनुभूति आ विचार के समन्वय के उत्कृष्ट कवि हईं ई हम ना संग्रह कह रहल बा।

किताब – सजग शब्द के रंग
कवि – हरेराम त्रिपाठी ' चेतन '
विधा – कविता संग्रह
प्रकाशक – सर्व भाषा ट्रस्ट,नई दिल्ली
मूल्य – 250/–
पृष्ठ संख्या – 116

❑❑

राँची झारखंड

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

गीत

कागा जनि उचरा खटराग
दुनियाँ जरी बुताई हो।

कतों ना बाचल बाटे समझिया
गंगा जमुनी संस्कृति सझिया
अगते अनेसा छाई हो।

इरिखा लीहले डोलत ह मनई
तीत बोलिये भर बोलत मनई
सियापा सोझे पाई हो।

बेतरे विष बेलियन के बोअत
बेंची बरध बिसभोर हो सोवत
बाउर अलम भेंटाई हो।

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

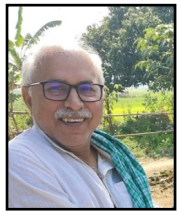

डॉ बलभद्र

सदय के कहानी-संग्रह 'मनसा' के बारे में

किताब चाहे कवनो भाषा के होखे, पढ़े के जरूरत हमेशा बनल रहेला। जब जब पढ़ल जाई, कुछ ना कुछ बात जरूर कहे जोग निकल आई। पढ़लको कितबिया से नया कुछ निकल आई। भोजपुरी किताबन के संदर्भ में ई बात अउरी जरूरी आ प्रासंगिक बा। काहे कि भोजपुरी कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध भा वैचारिक किताबन प अपेक्षाकृत कम बात भइल बा। एह कड़ी में 1976 में प्रकाशित कन्हैया सिंह 'सदय' के कहानी संग्रह 'मनसा' प बात कइल जा रहल बा। कन्हैया सिंह भोजपुरी कहानीकार लोग में अइसन नांव बा जेके अनदेखा ना कइल जा सके।

कन्हैया सिंह 'सदय' के कहानी–संग्रह 'मनसा' प कुछ बात करे से पहिले सदय जी से कहे में हमरा कवनो गुरेज नइखे कि हम उनकर एह संग्रह के कहानी अब जाके पढ़नी ह। पढ़े में देर जरूर भइल बा। अबले बात ना कर पावे के असल इहे कारन बा। पढ़े में देरी बस अतने जाने के बा कि हो गइल बा। जानबूझ के नइखे कइल गइल। सदय जी भोजपुरी के ओह पीढ़ी के लेखक हवें जे भोजपुरी साहित्य के बढंती खातिर बहुत कुछ कइले बा। संस्था गठन से लेके लिखे, पढ़े, छपावे आ परचार– परसार करे तक। लिखल के छपवावल आ ओकरा के लेखक आ पाठक लोग तक पहुंचावल, आसान ना होला। अपना मेहनत के कमाई से किताब छपावल देखे के होखे त सदय जी सहित भोजपुरी के अनेक लोगन के देखे के चाहीं। आ ई आजो जारी बा। आजो भोजपुरी के कवि–लेखक लोग अपने आग–खर्रे बरत बाड़न। एह बात के महत्व अपना जगह प बा आ कवनो लेखक आ ओकर कृति के मूल्यांकन अपना जगह। एह में कवनो रकम के घ ाालमेल ठीक ना होई।

कन्हैया सिंह 'सदय' बीसवीं सदी के आठवां दशक में लिखे शुरू करत बाड़न। भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर से मार्च 1976 में उनकर 'मनसा' कहानी संग्रह छपल बा । रसिक बिहारी ओझा लेखक के परिचय लिखले बाड़न। एह संग्रह के बारे में कुछ विद्वानन के विचारो छपल बा। डॉ. बच्चन पाठक सलिल, कुमुद कुमार 'कमल' आ निर्मल मिलिंद के टिप्पणी बा। संग्रह में कुल सात गो कहानी बा। ई रहल प्रकाशन डिटेल। भोजपुरी कहानी के इतिहास प बात करे खातिर एह कुलि के भी देखे के चाहीं।

मार्च 1976 में ई संग्रह आइल बा। भारत के राजनीति, साहित्य आ संस्कृति प बात विचार करत समय आठवां दशक के सामाजिक राजनीतिक आंदा. `लन के ख्याल में राखे के चाहीं। आठवां दशक आपा. तकाल आ जे. पी. मूवमेंट वाला दशक रहल बा। नक्सलवादी आंदोलन के उभार आ ओकर क्रूर दमन के इतिहास वाला दशक ह। कला , साहित्य आ संस्कृ ति– कर्म के अनेक रूपन प जेपी मूवमेंट आ नक्सल. वादी आंदोलन के व्यापक प्रभाव रहल बा। हिंदी सहित देश के अन्य भाषा के साहित्य प एकर प्रभाव देखल गइल बा। एहिजा हम इहो कहल चाहब कि एह आंदोलन के प्रभाव के कई गो रूप आ स्तर बा। कहीं ई मोट रूप में बा त कहीं महीन रूप में, दर्शन के रूप में। कहीं कहीं त अइसन कि पकड़ में ना आई झट दे। गरीबी, बेरोजगारी, सामंती उत्पीड़न, रोजगार के संकट, नारी उत्पीड़न, महंगाई, सत्ता के जन विरोधी चरित्र आ व्यवहार आठवां दशक के जन आक्रोश के वजह रहल बा। आठवां दशक के भोजपुरी कहानी पर भी एकर प्रभाव बा। एह के समझे के होई।

सदय के कहानियन में राजनीतिक आंदा. `लन के सीधा असर त नइखे लउकत ना, ना ओकर कवनो सीधा अभिव्यक्ति बा बाकी ओह समय के सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति आ बहस के स्वर बेशक दर्ज बा। 'मनसा' इनकर पहिलका कहानी संग्रह ह। एहिजे से ऊ कहानी लेखन में सक्रिय होत बाड़न। सदय के एह संग्रह के कहानियन में समय के धड़कन बा आ प्रस्तुति आ भाषा के गढ़न में नयापन बा। एह लिहाजे 'ना' शीर्षक कहानी ध्यान खींचेले। 'ना' कहानी में उच्च जाति के समिलात परिवार में औरत के यातना भरल जिनगी बा। बाकी अतने से कवनो कहानी कहानी ना हो सके, नीमन त बेलकुल ना। सदय के कहानी में अपना के पढ़ा लेवे आ नया कुछ देखावे के कूबत बा। अंत में जवन 'ना' बा, नारीपात्र के मन के भीतर से परिस्थिति के पेंच से निकलल, ओह में नयापन बा। ई 'ना' अनसोहाते नइखे निकलत। पति–पत्नी रात में एक कमरा में एक बिछवना प बाड़न , बिछवना बहुत पुरान बा, पत्नी के सुनरई भी बिला चुकल बा, ठोकच बइठ गइल बा। पति साल भर बाद बहरा से आइल बाड़न। साल भितरे पत्नी के अइसन दसा हो जाता। ऊ एकर वजह

से नावाकिफ बाड़न । ओने पति के भी बहरा में हालत ठीक नइखे रहल। नोकरी छूट जाता। ऊ साल भर के आखिरी कमाई दू सौ रोपेया आ डिस्चार्ज लेटर लेके आइल बाड़न । पत्नी घर में आपन अनदेखी आ उत्पीड़न के बात बतावत बाड़ी आ पति परदेस के आपन जीवन के। पति के मन में उमेद रहे कि उनकर आपन तनाव आ दुख के बात सुन के पत्नी उनका से सहानुभूति देखाई। बाकी ना, ऊ सहानुभूति का देखाई , डिस्चार्ज के बात सुनते ओकरा मुंह से 'ना' निकलत बा। ' ई का भइल ?' – निकलत बा। ऊ एह स्थिति के, नोकरी छूटे के स्थिति के कबूल नइखे पावत। वजह ई बा कि आर्थिक स्थिति डांवाडोल बा, समिलात परिवार अब रहे लायक नइखे आ जवन उमेद नोकरी से रहे, उहो छूट गइल । एह नकार में ई सब शामिल बा आ भोजपुरी कहानी खातिर ई नया बा।

कहानी, रात के जब परिवार के लोग खा–पी के सूते –परे जाला, ओह समय शुरू होले आ भोर में जब चुचुहिया बोले ले, तवना समय पूरा होत बिया। तब, खासकर आठवां दशक में, समिलात परिवार में पति–पत्नी के भेंट के इहे समय होत रहे। आ कहानी में जवन 'ना' गूंजत बा, तवन भोर के बेरा में गूंजत बा। सूते के बेरा से शुरू होके जागे के बेरा तक कहानी चलत बिया। एह के देखल जरूरी बा आ एही बेरा में 'झुरकि पुरवा रस बेनिया डोलावे' जइसन श्रृंगारिक गीत के गूंज बा।

केहू कह सकेला कि सदय के समूचा कहानी कर्म प बात करे के जगहा प महज एगो संग्रह, जवन 1976 में छपल बा, प बात करे के का मतलब! एह संदर्भ में हमार आपन बात ई बा कि एह तरह के अध्ययन के जरिए हमरा समूचा अध्ययन तक पहुंचे में मदद मिली। अच्छा त ई होइत कि आठवां दशक में छपल कहानी आ कहानी संग्रह सब के एक जगे रख के ओकर मूल्यांकन कइल जाए।

संग्रह के कहानी 'मिरिगजल' में यूनियन आ हड़ताल के संदर्भ बा।कुछ राजनीतिक गंध बा। बाकी ओह तरह के कवनो तनाव नइखे जवन 'ना' में बा। बेतनाव के कवनो कहानी ना मार्मिक हो सके आ ना ऊ कहीं ले जा सके। 'मिरिगजल' में सोना के सुंदर–सलोना रूप बा आ ओकरा लेके आकर्षण। सोना के पति के नोकरी से बेदखली के वजह सोना के सुग्घड़ रूपे बा। सोना के पति जीतू के कहां त प्रोमोशन होखे वाला रहे, हाकिम के बात ना मनला के चलते, नोकरियो गंवावे पड़त बा। कहानी में कामगार यूनियन के जिकिर बा, बाकी ओकर कवनो रंग–ढंग, कवनो ऐक्टिविटी के ब्योरा नइखे। जीतू के चरित्र लड़ाकू होइयो के बहुत सपाट बा आ सोना के चरित्र के भी कवनो खास पहलू नइखे उभरत। खाली सुंदर भइला के सूचना से कहानी ना बने। जीतू के नोकरी छुटला के बाद होटल खोले आ चलावे के वर्णनो सपाट बा।

'बूंद से सागर ले' पढ़े लायक कहानी बा। गंवई चरित्र आ संस्कृति के गज्झिन बुनावट मिली एह में। कथा में जे मुख्य चरित्र बा, अइसन चरित्र कमबेसी हर गांव देखे–सुने के मिल जालें। अनपढ़, सोझिया। कुछ– कुछ अल्बटाह। अल्बटाह रामरूप के कहानी के प्रमुख किरदार बनावे में सदय के कल्पनाशीलता के भी योगदान बा। लोककथा के टेकनीक अपनवला के चलते पठनीयता बरकरार बा। रामरूप के चरित्र में जवन बदलाव देखावल बा, ऊ आरोपित ना होके, परिस्थिति आ घटना के स्वाभाविक विकास क्रम में सृजित बा। रामरूप जहां तक सोझिया भा अल्बटाह बाड़न उहां तक हर गांव में मिलेलें। जहां से बदलत मिलत बाड़न, कहानीकार के सृजन बाड़न आ ई एह कहानी के हासिल कहाई । रामरूप के साथे साथ विधवा फुलमतिया भी गतिशील चरित्र बिया।

गांव में पहिले लइका होखे भा लइकी, ओकर बिआह के एगो आपन सिस्टम रहे। देखनहरू आ अगुआ के भूमिका प्रमुख होत रहे। एकरा संगे बिआह कटवा भी होत रहलें। बिआह कटवा आन जाति के कम, जाति भितरे के जादे होत रहलें। अगुआ के ठीक उल्टा भूमिका होत रहे बिआह कटवा के। रामरूप के बिआह एक त उनका अनपढ़ आ गंवार भइला के चलते भइल मुश्किल रहे, ऊपर से बिआह कटवा भी तत्पर रहलें। एह के मूल में रहे उनकर जमीन जे पर पट्टीदार लोग के नजर रहे। बाकी, माई आ बाबू के मुअला के बाद, अकसरुआ रामरतन के सोच के प्रक्रिया बदल जाला आ तीस पैंतीस के उमर में पढ़े शुरू करत बाड़न । जब सब रहे तब ना पढ़लें। बाकी जब अपना प परल आ कुछ समझ में आवे लागल त बदल गइलें। गांव के केवल साह के विधवा पत्नी फुलमतिया से बिआह कर लेत बाड़न। गांव के जीवन के कुलि दाव पेंच के सजीव अभिव्यक्ति के चलते भी ई पठनीय कहानी बिया।

ऊपर जवन तीन गो कहानी के जिकिर बा, ओह के देखत ई समझ में आवत बा कि नारी पात्र आ जीवन देने कहानीकार के खास ध्यान बा। तीनों कहानियन में नारी पात्र के प्रमुखता से उपस्थिति बा । नारी के उपस्थिति के बिना कवनो कहानी ना हो सके, ई तय बा। बाकी सवाल ई बा कि उपस्थिति कवना रंग ढंग के बा। ओकरा के देखे के आंख

कइसन बा। कतना न्याय हो सकल बा। देखे में आवत बा कि रूप के बखान से लेके बेलाउज के अगिला खुलल बटाम तक के कवनो ना कवनो विधि देखा देल बा। ना खाली रूपलोभी पुरुष आं ख के देखल गइल बा, बलुक रूपलोभी पुरुष आं ख से देखल गइल बा। 'ना' कहानी में त समिलात परिवार के भीतर यौन उत्पीड़न पर फोकस त बा बाकी 'मिरिगजल' में रूप के ही केंद्र में राखल बा। 'ना' में त थोरिका नारी प्रतिवाद जगह पवले बा, 'मिरिगजल' में त ओकर कवनो गुंजाइश तक ना बा।

विषय–वस्तु के लिहाज से 'ध ारकोसवा' एगो अलग कहानी बिया। छोट लइका–लइकिन के लोग डेरवा के राखत रहे। भूत के, बुढ़िया के डर देखा के लोग सुतावे, ि खआवे, दूध पिआवे। कवनो बात के जिद के इहे इलाज रहे। बाल मनोविज्ञान प परे वाला असर के कवनो खेयाल ना रहत रहे। हमनियो के अपना लरिकाईं में अइसन कुलि सुने के मिलल बा। ओह डर के स्मृति आज ले बा। साइत , एह के केहू समुझ ना पावत रहे। एह के लेके कवनो बहस भा जागरूकता के अभाव रहे। कहानी के छोट कलेवर में एह जरूरी बात के उठावल गइल बा। धरकोसवा के जवन भेयावन रूप बालमन में टंका जाता, ऊ एगो छोट लइकी खातिर जानलेवा साबित होता। आ अतने ले ना, दोसरो खातिर खतरनाक साबित होता। एगो कुष्ठ रोगी के जान चल जाता। छोट लइकी कुष्ठ रोगी के देख के, जवन झोरा लेले रहे, मइल कुचइल कपड़ा में रहे, 'धरकोसवा' समुझ के मारे डर बेहोसे ना, मर जात बिया आ लोग ओह रोगी के भी पीट–पीट के मुआ देता बेबूझले – समुझले। भीड़ हिंसा के ऊ शिकार हो जाता । भोजपुरी में एह विषय के कहानी के अबहियो जरूरत बा।

कवनो सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन के प्रभाव कला, साहित्य आ संस्कृति प जरूरी ना होला कि सीधे पड़े । एकदम सीधे अभिव्यक्त होखे। ओकर प्रभाव तनी घूम–घुमा के भी होला। युगबोध समूचा कृति में होला। एक रूप में ना, कई रूप में। एह के समझे के समझ चाहीं । कहीं कही त भाषिक संकेत में होला। जाति के जकड़न प चोट होखे भा यथास्थिति के लेके स्त्री के नकार, धार्मिक आडम्बर के आलोचना, युगबोध के ही अभिव्यक्ति ह। सदय के कहानियन में ई बहुत मद्धिम रूप में बा।

सदय के कहानी के भाषा प भी बात जरूरी बा। कुछ लोग तारीफ में कहेला कि भाषा ठेठ भोजपुरी बा। खांटी भोजपुरी बा। हमरा समझ से भोजपुरी कहानी के भाषा के बारे में ई कहल जरूरी नइखे । ओकरा त अइसन होखहीं के चाहीं । ना त भोजपुरी कहानी भइला के का अर्थ रह जाई। भाषा हमेशा कथ्य तय करेला, कथा के पात्र आ परिस्थिति से तय होला। सदय के भाषा एह लिहाजे बढ़िया बा , रचनात्मक बा। रेवंथत भोजपुरी नइखे, ई नीमन बात बा। सदय के अउरो संग्रह छपल बा। पहिले संग्रह से भोजपुरी कहानी में उनकर हस्तक्षेप सार्थक रहल। एह आलेख के कन्हैया सिंह 'सदय' के बहाने भोजपुरी कहानी के अध्ययन के प्रक्रिया के तहत समझल जाए, आग्रह बा।

❑❑

गिरिडीह कालेज गिरिडीह
झारखंड

केहू आइल का

मेहरिया राग भैरवी गवलस,केहू आइल का।
खटिया उठा मचिया बइठवलस ,केहू आइल का।।

गाँवे से अइहें बाबूजी,जनते मुँह फुलल कुप्पा
भर दिन रार मचवले बाटे, मरद भइलें चुप्पा।
रिस्ता नाता क टाँग उठवलस ,केहू आइल का।
मेहरिया ————————

भाई बहिन लगैं तितलौकी,माई ललका मरिचा
गाँव घरे क नउवाँ सुनते,जरि के होलीं करिखा।
अचके राई पहाड़ बनवलस, केहू आइल का।।
मेहरिया————————

गाँव घर गिरहस्ती भूलल, भूल गइल बगइचा।
लेन–देन के बतिया भूलल, भूलल पाहुर पइचा।
जान बूझ के मुँहवों बिजुकवल, केहू आइल का।।
मेहरिया———

हीत मीत त का बतलाईं, दुसमन लागे पीहर
उनुका माई, बाबू,भाई, बहिन जोगावत नइहर।
इनका छोड़ि के आँखि नचवलस, केहू आइल का।।
मेहरिया ————————

❑❑

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भगवती प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध संग्रह : 'जइसे आमवाँ के मोजरा से रस चूवेला'

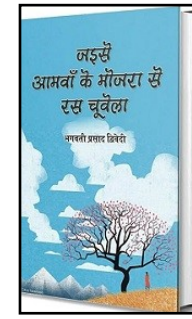

डॉ. सुनील कुमार पाठक

कवनों भाषा के साहित्य में गद्य–लेखन से जादे काव्य रचने होला।भोजपुरियो के साथ इहे बात बा।बाकिर खड़ी बोली हिन्दिये लेखाँ भोजपुरियो में एगो प्रवृत्ति इहो विकसित भइल बा कि कवि खूब जम के गद्यो लिख रहल बाड़ें। संस्कृत काव्यशास्त्र में कवि के अपार काव्य–संसार के प्रजापति बतावला के साथे –साथे इहो कहल गइल बा कि ''गद्यं कव. ीनां निकषं वदन्ति।'' माने कि गद्य–लेखने कवि के परीक्षा के कसौटी होला।विद्वान सभके ई कहे के पीछे का मकसद रहे–ई समझल जरूरी बा।छंदन के बंधन में अपना भावना विचार,कल्पना ,बोध,संवेदना आदि के अभिव्यक्ति त जादे कठिन होला– फेर अइसन कहे के का मकसद रहे?गद्य–लेखन के मै. दान आ पाट त बहुते बड़हन होला जवना में कवनों बात बहुते आसानी से राखल जा सकत बा। कवि एजवा आउरो जादे सहजता अनुभव कर सकत बा।अइसनका में गद्य–लेखन के कवियन के परीक्षा के कसौटी बतावे के काहे जरूरत पड़ल –ई सोचे वाली बात बिया।हमरा समझ से पद्य–लेखन में तनिका कल्पनाशीलता के सहारा लेके प्रतिपाद्य के वर्णन में ऊँच–खाल चल सकत बा बाकिर गद्य में ई आजादी लिहल थोरिके कठिन हो जाला।एजवा जवन होला –जथारथ पर आधारित आ साँच के एकदम करीबी होला।बनावटी आ बुनावटी बातन के गुंजाइश बहुत कम होला।बाकिर कवि त भाई कवि ठहरल–''यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्त्तते।'' –ऊ गद्य–रचनो में आपन राह ढूँढ़ि लिहलस।कल्पना के पाँखि लगाके उड़े के,रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्दन के प्रयोग करे के ,गंभीर से गंभीर विचारन के रसपेशलता आ लालित्य के साथे रुचिर बना के परोसे में – कवि के एजवा भरपूर सफलता मिल. ल।।साँच पूछीं ते गद्य–लेखन के क्षेत्र में ललित निबंधन के जनम अइसनके रचनात्मक प्रयत्न के परिणाम रहल होई।

भोजपुरी ललित निबंधन के इतिहास कवनो बहुत पुरान नइखे। आचार्य महेन्द्र शास्त्री के निबंध 'पानी'(1947) भोजपुरी के पहिलका भावात्मक ललित निबंध आ विवेकी राय जी के 21 गो निबंधन के संग्रह–' के कहल चुनरी रंगाले' (1968)भोजपुरी के पहिलका ललित निबंध संग्रह मानल जाला।शुरुआती ललित निबंध संग्रहन में अविनाशचंद्र विद्यार्थी के 'घर के गूर' , विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के 'मन के मौज', जितराम पाठक,शालिग्राम उपाध्याय आ अनिल कुमार आंजनेय के संपादन में निकलल 'ललित निबंधावली',प्रफुल्ल ओझा मुक्त के 'जीअल सीखीं,डा.बच्चन पाठक 'सलिल' के संपादन में छपल 'ललित निबंधावली'आदि प्रमुख रहल बा।डा.विवेकी राय आ श्री सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के संपादन में 1977 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित किताब 'भोजपुरी निबंध निकुंज'में भावा. त्मक निबंधन के श्रेणी में बीस गो निबंधन के स्थान मिलल बा।एमें हास्य–व्यंग्यात्मक,ललित व्यंग्यात्मक, ललित चिंतनात्मक,ललित समीक्षात्मक आ ललित वितरणात्मक संज्ञा से जवन निबंध छपल ऊ सब ललित निबंधन के कोटि में परिगित हो जाये लायेक बाड़न सँ।बाकिर ललित निबंधन के विभिन्न श्रेणियन के बतावे–झलकावे के उद्देश्य से शायिद ई विभाजन कइल गइल रहे।

हाल के कुछ महत्वपूर्ण ललित निबंध संग. हन में – 'ए बचवा फूले फरे' (डा.आशारानी लाल–1996) ,'कलमिया नाहीं बस में' (सत्यवादी छपरिया–1970), 'गाँधी जी के बकरी' (डा.प्रभुनाथ सिंह–1988),'छठ परमेसरी' (सिपाही सिंह श्रीमंत–2009), 'गुलर के फूल' (राजेश्वरी शांडिल्य–1998), 'नइया बीच भँवर में' (करूणा निध ान केशव–1997), 'राम झरोखा बैइठ क' (विवेकी राय–1997) 'मानिक मोर हेरइले ' (विद्यानिवास मिश्र–2006), ' रामजी के सुगना' (अशोक द्विवेदी –1994), 'सुरतिया नाहीं बिसरे'(परमेश्वर दूबे शाहाबादी), 'हमहूँ माई घरे गइनीं' (आशारानी लाल–2001),'माया महाठगिनी' (गदाधर सिंह–2008), 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' (गदाधर सिंह –2019) , 'झनकि बाजे हो' (बलभद्र–2021) आदि प्रमुख बा। 'भोजपुरी अमन'पत्रिका के ललित निबंध विशेषांक डा .ममता पांडेय के संपादन में निकलल रहे जेमें कुछ उत्कृष्ट कोटि के निबंध प्रकाशित भइल रहे।भोजपुरी में ललित निबंधन के एह विकास के देख के ई स्पष्ट हो जात बा कि एह विधो के विकास के दिसाईं भोजपुरी साहित्यकारन के प्रयास बहुत गंभीर रहल बा।

भोजपुरी साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार भगवती प्रसाद द्विवेदी के हाले में सर्वभाषा प्रकाशन

से एगो ललित निबंध संग्रह छप के आइल बा–'जइसे आमवाँ के मोजरा से रस चूवेला' एमें कुल 59 गो निबंध संग्रहित बाड़ें सँ।(हालांकि मुद्रण के त्रुटि के चलते ई संख्या विषय सूची में संतावने गो बतावल गइल बा।) एह निबंधन के तीन गो खंड– 'लोक','लालित्य' आ 'बदलाव के सुगबुगाहट' ।एह खंडन के नामकरने से एह निबंधन के प्रकृति के बारे में बहुत कुछ आभास मिल जात बा। 'लोक' खंड में लोक जीवन के लय, गीत– संगीत ,संस्कृति, संवेदना, भाव –विचार, परम्परा–मान्यता,प्रकृतिप्रियता, सहजता, मौलिकता , पर्व–त्यौहार– उत्सव, रीति–रिवाज,मेला–बाजार आदि विषयन के समेटले बहुते मजिगर 19 गो ललित निबंध संग्रहित बाड़े सँ। 'लालित्य' खंड में भोजपुरी जन–जीवन से जुड़ल गाछ–बिरिछ,गाँव–ज्वार,गमछा ,लोटा ,सतुआ , बैलगाड़ी साइकिल, तिलकहरू, नदी ,दीया–बाती, मकइया,निंनिया, आ आमवा के मोजरा से चुअत रस –सबकुछ के प्रतिपाद्य बनावत बड़ी अनुरंजक आ रुचिर ढंग से एकनीं के बारे में 24 गो निबंधन के जरिये परोसल गइल बा।तीसरका आ अंतिम खंड में सामाजिक जीवन में आ रहल बदलाव के सुगबुगाहट के सुने–समझे के कोसिस कइल गइल बा।एह खंड में कुल 16 गो निबंध संग्रहित बाड़े सँ।

एह किताब के शुरुये में लिखल 'हमार जिनिगी:हमार सिरिजना' शीर्षक से लेखक भगवती प्रसाद द्विवेदी के आलेखो एगो ललित निबंधे के सवाद आ आनंद देत बा।एमें लेखक अपना जिनिगी के कहानी बालपन से लेके आज ले बड़ी ईमानदारी आ सच्चाई के साथे बयान कइले बाड़ें। जिनिगी के चुनौती आ ओसे निबटे बदे संकल्प के कथा ते ई आलेख सुनावते बा ,ई ओह सब उपलब्धियनो के ब खानत साफ करत बा कि एगो लेखक के रूप में भगवती प्रसाद द्विवेदी के पढ़ल काहे जरूरी बा।ले खक अपना एह आलेख में अपना रचना–प्रकियो के बारे में बतवले बाड़ें आ इहो सँकारे में उनकरा कवनो झिझक नइखे भइल कि ऊ लिखले ते सबकुछ बाड़ें बाकिर एगो रचनाकार के रूप में उनका सर्वाधिक आनंद कहानी लिखे में मिलल बा। ऊ इहो सँकरले बाड़ें कि ''लड़िकन खातिर लड़िका बनिके हम जिम्मेवारी से लिखीले। '' भगवती जी के साफ कहनाम बा कि ''आजुओ हम खुद के एगो विद्यार्थी बूझेनीं आ सब केहू से किछु ना किछु सीखे के कोसिस करीले।साहित्य सिरिजना के बदउलते हम तमाम झंझावात के झेलत आ रहल बानीं ना ते कबे मू गइल रहितीं।'' –ई एगो अइसन वक्तव्य बा जवना से लेखन के प्रति द्विवेदी जी के गंभीरता ना ओह समरपनो के झलक मिलत बा जवना से ऊ अपना जीवन खातिर संजीवनी अरजेलें। ई बात बिल्कुल सही बा कि कवनों सिरिजना से आस्वादक के त आनंद मिलबे करेला, सर्जको के कम आनंद आ ऊर्जा ना मिले।

पहिलका खंड के रचनन में – 'लोक मे राम राम में लोक' , 'लोक परब के सकारात्मक सोच ', 'रीत गइल मन के फिचुकारी','निमिया के डाढ़ि मइया' , 'डोमकचःजियतार स्वाँग', 'आइल चइत उतपतिया हो रामा','गूँजत मंगल गीत मनोहर', 'ई गारी प्रेम पियारी जी','माई के जिउवा गाई अस', 'आदरा के अगवानी आ समहुत के सुतार', 'अल्हर करेज के टीस के सरस अनुगूंज' –शीर्षक से कुछ अइसन ललित निबंध संग्रहित बाड़े सँ जवनन से जीवन आ समाज के बहुरंगी छवियन के संवेदना,धड़कन,संगीत,संघर्ष आ उद्वेलन के बीच एगो जीवंत साधना आ संकल्प से भरल रूप के दर्शन मिलत बा। एह खंड में लोक मेला ददरी के लोकानुरंजक रूप देखे लायेक बा।साथही खरबिरवा से सेहत सुधारे के लोकप्रचलित जवन तौर–तरीका रहल बा –ओकरो झलक मिलत बा।एही खंड में चिरई–चुरुंग आ गोरू–माल से जुड़ल रोचक संदेशपरक बात ते बड़ले बा, भोजपुरी लोकोक्तियन के जरिये भोजपुरी क्षेत्र के मेहरारून के उभरत छवियो के मार्मिक ढंग से उकेरे के कोसिस भइल बा।

दूसरका खंड 'लालित्य' के नामे से स्पष्ट बा कि एह निबंधन में विषय के लालित्यपूर्ण भाषा, रुचिर भावाभिव्यंजना आ मार्मिक संवेदना के साथे परोसल गइल होई।एह खंड के सब शीर्षकनो में लालित्य के दर्शन होत बा।अगर शीर्षकने के जोड़िया दिआव त एगो सार्थक समकालीन कविता बनि जाई।'उगे रे मोर सुगना','दीनानाथ कचहरिया में न्याय होला','गमछा बा त का गम बा','सवाद के सरताज–फुटेहरी', 'पिपरा के पतवा सरीखे डोले मनवा', 'मन के बातःचाह के साथ','सबसे अगाड़ी हमार बैलगाड़ी', 'सेहत आ सवाद के खजाना', 'कहाँ गइल लरिकइयाँ हो', 'जिनिगी के नदिया के दू गो किनारा','दिल के दीया नेह के बाती','आउ रे निनिया निनर वन से', 'मकइया रे ! तोर गुन गूँथब माला', 'जइसे आमवाँ के मोजरा से रस चूवेला' आदि ललित निबंधन में भावना के अतिरेक ,कल्पना के उड़ान,विचारन के गंभीरता आ काव्यात्मक भाषा के अइसनका मनमोहन समाहार बा कि एकसुरुकिये एगो निबंध ते ठाट से पढ़ले जा सकत बा दूसरको खातिर मन में सहजे ललक जाग जात बा।

तीसरका खंड 'बदलाव के सुगबुगाहट' में सामाजिक बदलाव के हर क्षेत्रन पर पड़ रहल व्यापक प्रभावन के यथार्थपरक दृष्टिकोण से

झलकावल गइल बा।भोजपुरी समाज के बदलत तेवर पहिलके निबंध ई बतावत बा कि भोजपुरी समाज कबो जड़ इकाई नइखे रहल।ई एगो अइसन जीवंत समाज रहल बा जवन आपन विरासत के सम्हारे के साथे–साथे नवागतो के खूब सजोर स्वागत कइले बा।जड़ता भोजपुरी समाज के कबो पहचान नइखे रहल।आदिमी– आदिमी के बीच बराबरी के पक्षधर ई समाज अतिचार कबो बर्दास्त नइखे कइले।कवनो जोर –जबरदस्ती के खिलाफ ई बराबर मुखर आ प्रतिरोधी बनल रहल बा। 'अश्लील गायकी आ भोजपुरिया समाज', ' वाह पढ़ाई !आह पढ़ाई', 'गइलीं गाँवः गाँव से भगलीं', 'कोरोना–काल में करम योग', ' हती चुकी बेमारी अखड़ेरे में ', 'आइल खोले आ देखावे के दिन', 'तीन जाति अलगरजी' , 'भोजपुरी के मूल लिपि', 'बर–पीपर के छाँह', 'शीलहरन के सिलसिला','अनकर सुख : आपन दुख','रसम अदाएगी' ,'केतना विज्ञान सम्मत बा विक्रम संवत' आदि कुछ अइसन निबंध बाड़े सँ जवनन में शिक्षा के प्रसार के असर आ ओकर सामाजिक बदलाव में भूमिका ,भोजपुरी गीतन में अश्लीलता परोसे के पीछे बाजारवाद आ असंस्कृति के दबाव,कोरोना जइसन महामारियो में मनुजता के विजयिनी गाथा आदि के सफलतापूर्वक उकेरल गइल बा।

अपना निबंधन में भगवती जी अइसनकाभोजपुरी भाषा–शैली के प्रयोग में ले आइल बाड़ें जवना में खूब रवानी बा।हर तरे के भाव आ विचारन के अभिव्यंजना में भोजपुरी के सामर्थ्य एजवा देखते बनत बा।द्विवेदीजी के कवि ललित निबंध– लेखन में उनकरा गद्यकार के खूब मदद कइले बा।नमूना के तौर पर दू–तीन गो उद्ध रण देखल जा सकत बा–

1–''आजुओ धनुर्धर रामे लोकमान्य के राजा राम बाड़न।तुलसियो बाबा 'कानन' के 'शत अवध सम. ाना' कहले रहलन। लोक खातिर समर्पित लोक में रचल–बसल राम जब ले सृष्टि के अस्तित्व बरकरार रही ,जन–जन में एही तरी रचल–बसल रहिंहन आ आपन लोक आधारित भारतीय संस्कृति अइसहीं जियतार बनल रही,राम मड़इया गह–गह करत रही।''(लोक में राम, राम में लोक)

2– ''भोजपुरिया समाज में मेहनतकशन आ किसान –मजूरन के जाँगर ठेठावे वाला समाज रहल बा।एह से इहाँ निष्काम करमयोग के प्रधानता रहल बा आ अभावो में रहिके बिपत–कलेस काटत नेह–छोह आ प्रीत–प्यार के पइसार इहाँ के खासियत होला।''(दीनानाथ कचहरिया में न्याय होला)

3– ''जब ले बुतरुन के ओठ पर मुसुकी आ हिया हँसी के हिलोर ना उठी तब ले कवनों समाज के विकसित ,समृद्ध आ प्रगतिशील कइसे कहल जा सकेला?भोजपुरिया जिम्मेदार रचनिहार लोग के लरिकन खातिर,लरिकाई बचावे खातिर लगातार जियतार रचहीं के पड़ी ,तबे बचपन बाची।''(कहवाँ गइल लरिकइया हो)

भगवती जी के ललित निबंधन से लिहल ऊपर के पाँतिन के पढ़िके सहजे ई अनुमान लगावल जा सकत बा कि मार्मिकता,रुचिरता,सहजता,स्पष्टता आ प्रभावकता भरल गद्य–लेखन में उनकर लेखनी केतना कमाल देखा सकत बिया। भगवती प्रसाद द्वि वेदी जी बेशक भोजपुरी के एगो अइसनका शीर्षस्थ रचनाकार बानीं जे भोजपुरी साहित्य के समर्थ आ समृद्ध करके पाँत में पूजाये लायेक बना रहल बान. ीं।एतना सुन्दर कृति के सिरिजना खातिर भगवती बाबू आ सर्वभाषा प्रकाशन दूनू बधाई के हकदार बा। बाकिर एह किताब के एगो बात तनिका खटक जात बिया।ऊ ई कि एकरा शीर्षक के अनुरूप मुखपृष्ठ तइयार करे में थोरिके लापरवाही भइल बा।कवरपेज के आम के गाछ आ ओकरा पर के लाल मोजर –दूनू अस्वाभाविक लागत बा।किताब के विषय–विन्यास से खूब रस टपकत बा,लेकिन चित्रो में चारुता रहित ते कृति के सुन्दरता आउरो बढ़ि जाइत।

❑❑

आवास संख्या–जी.3,आफिसर्स फ्लैट ,
न्यू पुनाईचक, पटना–800023(बिहार)
मोबाइल नंबर– 9431283596

'अइसन गारी के गारी जनि जानी' के बहाने लोक के बतकही

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी भाषा के मधुरता आ मिठास से सभे सुपरिचित बाटे। भोजपुरिया लोक के विशिष्ट पहिचानो बाटे। कहल जाला कि विविधता जहां के पहिचान आ परिभाषा होखे,अइसन लोक के बाति बरबस मन के मोह लेवेले। लोक जवन अपने संगे अपने संस्कृति के संवारत आ संइहारत आगु बढ़ेला। ओकर बढ़न्ति ओकरे जीवंतता के पहिचान होले।ओह पहिचान के जोगावे क श्रमसाध्य काम भोजपुरिया समाज के मेहरारू लोगन के कान्ही दर कान्ही चलत चलल आ रहल बा। अपने सुघरई आ मिठास के जोगवले सनकिरवा लेखा जुगजुगा रहल बा। भोजपुरिया समाज के समुझे आ जाने खातिर ओकरे लोकगीतन के जानल आ समुझल जरूरी बाटे। भोजपुरिया समाज में अलग–अलग अवसर पर अलग–अलग गीत गावल जानी सन। भोजपुरिया समाज में कई गो अइसन अवसर आवेला जब गारी 'मंगल गारी' बनि जाले, सत्कार के एगो बरियार सुभाव हो जाले। लोग गारी न सुनला के अपमान बुझेला मने गारी सुने के जोहेला आ सुनला का बाद ओकरा सनमानों करेला। गारी गवउवा नेगो देला। गारी दीहल, गारी बकल आ गारी गवला के मरम के बहुते विस्तार से लेखक समुझवले बाड़ें। भोजपुरी संस्कृति में भोजपुरिया समाज अपने समधी के ऊंच पीढ़ा देला। उनुका से अंगेया लेके उत्सव के शुरुवात कइल जाला। अपना तन, मन आ धन के परेम से समरपित करत भोजपुरिया समाज अपने समधी के भोजन करावे के बेरा जेवनार गीत से उनुका सोवागत करेला। अइसन बहुते तथ्यन के उकेरे वाला हिन्दी–भोजपुरी के एगो वरिष्ठ साहित्यकार डॉ शंकर मुनि राय जी जिनगी के एह अनुभव के बहुते मनोयोग से 'भोजपुरी के संस्कार गीत – अइसन गारी के गारी जनि जानी' में परोसे के परयास कइले बाड़न।

'भोजपुरी के संस्कार गीत – अइसन गारी के गारी जनि जानी' के लेखक डॉ शंकर मुनि राय जी अपना एगो आलेख के एह किताबि के आमुख बनवले बानी। एह आलेख में उहाँ के भोजपुरी गारी के रूप आ ओकरे महातिम के मनगर ढंग से परोसले बानी।कवना बेरा आ कवना घरी गारी गावल जाले ओकरा के नीमन से निरूपित कइले बानी। अलग–अलग बेरा में गावे जाए वाली गारी गीतन के अलग अलग नांव से जानल जाला । एह किताबि में भोजपुरिया समाज में प्रचलित तीन तरह(सोवागत गारी, जेवनार आ हटका) के कुछ बहुत प्रचलित गीतन संकलित कइल गइल बा। एह गीतन के अर्थ के संगे विश्लेषितो कइल गइल बा।अ. जुवो भोजपुरिया क्षेत्र में थोड़–ढेर फेर बदल का संगे ई कुल्हि गीत चलन में बाड़ी सन।

बैदिक ग्रंथन में 16 संस्कार के बात कहल गइल बा। भोजपुरी लोक में एह कुल्हि संस्कारन खातिर अलग–अलग गीत–गवनई के विधान बा । ढेर संस्कार एह घरी बिला चुकल बाड़न सन । तबो अबहियों कुछ संस्कारन के लोग छाव का संगे मनवेला। हिन्दू समाज संस्क. ारन में बन्हाइल बाटे आ एहमें ओके सुखो मिल. ला। भोजपुरी भाषा में जवन लोकगीत मिलेलीं, ओहमें संस्कार गीतन के बहुलता बा। संस्कार गीतन में स्त्री समाज के हाव–भाव, बिरह–हुलास आ मनोभाव के सगरे चित्र भेंटा जाला। एह किताबि में गारी गीतन का संगे संस्कार गीतनो के संकलन कइल गइल बा। जवन देवी गीत से शुरू होके जनमोत्सव के गीत (सोहर, खेलवना), मुंडन आ जनेव के गीत का संगे , बेटा आ बेटी बियाह के गीत आ कनिया देखाई के गीतो एह संकलन में बाड़ी सन। किताबि के अंतिम अध्याय में भोजपुरी कहाउतनो के संकलन अर्थ का संगे कइल गइल बाटे। एह किताबि के सभेले खास विशेषता ई बाटे कि गीतन में आइल कठिन शबदन के अर्थ का संगही गीतन के भवार्थो दीहल गइल बा। किताबि के भाषा हिन्दी बा, जवना के उद्देश्य अपना भाषा के संगही हिन्दी भाषा भासियनो के भोजपुरिया संस्कार आ संस्कृति से परिचित करावे के भाव लेखक के मन में रहल होखी। अपने एह भाव के लेखक अपने आमुख में दीहलो बाड़न।

सभेले सुखद बाति लेखक डॉ शंकर मुनि राय अपना एह किताबि के अपना जीवन संगिनी के समर्पित कइले बानी आ ओकर कारनो बतवले बानी।भोजपुरिया समाज के आधी आबादी जे पीढ़ी दर पीढ़ी एह संस्कार गीतन जोगवले आ रहल बा, ओह खातिर ओह समाज के प्रतिनिधि के एह किताबि के समरपन मन के हुलसित करे वाला बा। भोजपुरी के शबदन के अर्थ नवहा पढ़निहार लोगन के समुझे में ढेर मदत करी, अइसन हमरो बिसवास बा।

144 पेज के एह किताबि में पाँच गो अध्याय बाटे। पहिलका अध्याय किताबि के माथेला पर केन्द्रित बाटे। जवना के प्रकाशन सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली से भइल बा।

सर्वभाषा प्रकाशन अपने गुणवत्ता के खातिर दिनो–दिन एगो नामचीन प्रकाशन बनल जा रहल बा। एहु किताबि का संगे प्रकाशन भरपूर न्याय कइले बा। अइसन कुल्हि किताबि माई भाषा भोजपुरी के भंडार भर रहल बाड़ी सन। डॉ शंकर मुनि राय जी के श्रम सराहे जोग बाटे। ई कृति पढ़निहार लोगन के मन के त भइबे करी संगही कई गो भ्रमों के दूर करे में सहजोगी बनी । एह अनुपम कृति ला लेखक के अनघा बधाई आ ढेर ढेर शुभकामना!

पुस्तक भोजपुरी संस्कार गीत – अइसन गारी के गारी जनि जानी
लेखक – डॉ शंकर मुनि राय
मूल्य– रु 250/– मात्र
प्रकाशन– सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली

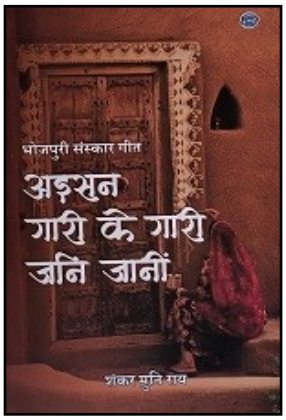

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

शिकार पर शिकार : भोजपुरी के पहिल शिकार–कथा

जितेन्द्र कुमार

कथाकार लव शर्मा 'प्रशांत 'के नेपाली, हिंदी आ भोजपुरी साहित्य में विपुल अवदान बा। ऊहां के कथा, लघुकथा, उपन्यास,निबंध, समीक्षा,संस्मरण,यात्रा –संस्मरण, धार्मिक आ ऐतिहासिक शोध, अनुवाद में प्रचुर सृजन कइले बानीं। ऊहां के बहुआयामी प्रतिभा के धनी रहीं। ऊहां के जबर्दस्त शिकारियो रहलीं। शिकार खेलल ऊहां के नशा रहे। शिकार खेले के ना मिले त ऊहां के मन उदास हो जाए।एगो मंजल कथाकार आ संस्मरणकार होखे का चलते ऊहां के शिकार कथा वर्णन में प्रवाह बा, रोचकता बा, भाषाई सौंदर्य बा। ऊहां के तितिर,चित्तल, घड़ियाल, जंगली सुअर आ बाघ के शिकार कइबे कइले रहीं। शिकार –कथा संग्रह में लेखक 'प्रशांत 'जी के सात गो शिकार कथा संकलित बा।अद् भुत संजोग बा कि लव शर्मा 'प्रशांत 'जतने बढ़िया लेखक रहलीं ओतने हिम्मती,निर्भीक आ निशानेबाज रहलीं।अगर ऊहां के खाली शिकारी रहितीं आ लेखक ना रहितीं त ई 'शिकार पर शिकार 'कथा–संग्रह के शिकार कथा भोजपुरी कथा –संसार बंचित रहित। लेखक जनहित में जंगली खूंखार जानवरन आ घड़ियाल के शिकार कइले बान. ीं।मनुष्य सर्वभक्षी प्राणी ह,ऊ मांसाहारो करेला।एह शिकार कथा में तितर –बटेर,चित्तल आ सूअर के शिकार मांसाहारे खातिर भइल बा।एह शिकार कथा के कथा –भूमि नेपाल के तराई के गौर शहर के आसपास के इलाका, नेपालगंज के जलकुंडी जंगल, कंचनपुर के जंगल,तौलिहवा जिला के जंगल,पोखरा उपत्यका, कंचनपुर जंगल के रामपुर गांव,आ पछिमी नेपाल तराई के कैलाली जिला के जंगल बा।

कथाकार लव शर्मा 'प्रशांत 'के जनम 15जनवरी,1941 ई के मोतिहारी जिला के रघुनाथपुर गांव में भइल रहे। रघुनाथपुर धनउती नदी के किनारे बसल बा।नदी किनारे बेंत के बहुत बड़ जंगल रहे जवना में नीलगाय,हरिन,बाघ,भालू,चीता आ नदी में घड़ियाल के बास रहे।लेखक बतवले बानीं कि ऊ कइसे जंगली जानवरन के शिकार का ओरि प्रवृत भइलीं।

लेखक के चाचा नेपाल तराई के रौतहट के अमीनी कचहरी में सुब्बा रहले।चाचा के बोलावा पर ऊ रौतहट गइले।ओहिजे शिकारी जयंत प्रधान से परिचय आ दोस्ती भइल।जयंते प्रधान उनका के राइफल –बनूक चलावे के प्रशिक्षण दिहले। एक दिन लेखक लव शर्मा शिकारी जयंत प्रधान का साथे चिरईं के

शिकार करे गइलन।एगो तितिर पर बनूक के निशाना लगावे के सब बात समझा देले।लेखक बनूक के निशाना तितिर पर लगवले बाकी बनूक के कुंदा बांह के बगल में ठीक से दबा के ना रखले।बनूक फायर कइला पर कस के धक्का पीछे मरलसु।उनका बांहि में बनूक के कुंदा से बड़ी चोट लागल।ऊ गिरि गइलन बाकी असफलता सफलता के कुंजी ह।जयंत प्रधान हिम्मति देलन।नदी के धार में एगो चिरईं पंवरत रहे।ओही पर शर्मा जी जयंत प्रधान के 476बोर के राइफल से फायर क दिहले।ऊहे चिरईं प्रशांत जी के पहिला शिकार भइल।बड़ा रोचक वर्णन बा एह शिकार कथा के।जयंत प्रधान लेखक के आऊ किछु दिन गौर शहर में राखि लिहले शिकार खातिर।'पहिलका शिकार कथा 'सन1975ई में जमशेदपुर के मासिक पत्रिका 'ललकार 'में प्रकाशित

एकरा बाद लव शर्मा 'प्रशांत अइसन शिकारी भइलन कि एके दिन में शिकार पर शिकार करे लगलन। जलकुंडी जंगल में 'शिकार पर शिकार 'के रोमांचक वर्णन बा।शिकार वर्णन के साथे जलकुंडी जंगल के दिलचस्प वर्णन बा।लेखक शिकारी के अलावे प्रकृति के गहिर प्रेमी लउकत बाड़न। जल. कुंडी जंगल में थारू जाति के लोगन के निवास बा।ओह लोग के थारू भाषा भोजपुरी भाषा से मिलत जुलत बा।थारू जाति पर शिकार लेखक के नृशास्त्रीय टिप्पणी उनकर बहुआयामी ज्ञान के परिचायक बा।शिकारी 'प्रशांत'के मन जंगल में एकदम एकाग्र बा।ऊ जंगल के हर आवाज के सूक्ष्मता से सुनत बा।ई सब वर्णन शिकार कथा के पठनीय आ ज्ञानवर्धक बनावत बा।पहिला पड़ाव पर लेखक नेपाल सरकार के एगो ऑफिसर राम सिंह थापा साथे राइफल लेके शिकार खेले चल देलन। गेहूं के खेत के आर पार एगो चित्तल लउकल।लेखक प्रशांत निशाना साध के फायर क देलन।चित्तल गिरल आ उठ के भाग गइल।राम सिंह थापा लेखक के निशाना के खूब मजाक उड़ावे लगलन।दोसरा दिन चित्तल दूर झाड़ी में मरल मिलल।तब थापा लजइलन।दोसरा दिन थापा जंगल में एगो खरहा आ तीन गो तितिर मरलन।एह कथा में लेखक एगो आदमखोर घड़ियाल के शिकार के वर्णन कइले बाड़न। घड़ियाल नदी के रेत पर पटाइल बा।लेखक के शिकार –चेतना अतना सावधान बा कि ऊ गते –गते राइफल लेले घड़ियाल के बहुत नगीच पहुंच के ओकरा गरदन में एगो गोली आ फेर पीठ पेट में पांच गोली मारत बा।गांव के लोगन के आदमखोर घड़ियाल से मुक्ति मिलत बा।एही यात्रा में लेखक आ उनकर साथी जयंत प्रधान जंगल में एगो बाघ के शिकार करत बाड़न।एकर रोंगटा खड़ा करे वाला वर्णन बा।बाघ पहिला गोली लगला पर पेड़ पर बान्हल मचान का ओरी छलांग लगावत बा।जमीन पर बाघ गिर जाता।लेखक एगो आउर गोली दाग दे ताड़न।अगर तनी मनी थरथरइतन घबरइतन त बहुत खतरा रहे।

'दोहरा शिकार 'में शिकारी लेखक के परीक्षा हो गइल बा।ऊ नेपाल के तौलिहवा जिला के एगो जमींदार नर बहादुर के नेवता पर रामपुर में शिकार खेले गइल रहसु। जमींदार नर बहादुर कहलसि कि एह बार तोहरा दोहरा शिकार के मजा मिली।लेखक दोहरा शिकार के रहस्य पूछसि त नर बहादुर मुस्किया के रहि जाए।एह शिकार कथा में जमींदार नर बहादुर के अपना परजा पर आतंक आ अत्याचार के वर्णन पढ़ि के जमींदारी सिस्टम के प्रति तीव्र आक्रोश होता।रात में गाछ पर बान्हल मचान पर चहुंपे के पहिलहीं रास्ता में बाघ से सामना हो जाता।नर बहादुर साथ हीं बा।ऊ बाघ पर फायर क देलक।बाघ इनका लोग ओरि छरकल।लेखक एगो गाछ ओरि सरक गइलन।नर बहादुर बांचे के कोशिश में गिर गइलन।बाकी बाघ मरा गइल।राति खानी नर बहादुर दोहरा शिकार गांव से अपना लठैइतन से पकड़वा के मंगवइलक।दोहरा शिकार दू गो गरीब लइकी रहली सन पहाड़ी गांव के।एगो के नर बहादुर अपना कोठरी में ले गइल।दोसरी लइकी ले खक से रो –रो के आपन दुख –दरद बेयान कइलसि।तब पढ़ीं कि लेखक जमींदार नर बहादुर के काहे कहलन कि 'हम ना जानत रहीं कि रउवा इहो नीच काम करीला।'नरबहादुर से लेखक के दोस्ती ओही दिन टूट गइल।ऊ बनूक उठवलन ओह लइकी के ओकरा गांवे चहुंपा देलन।

'मउवत के मुंह में 'रोंगटा खड़ा करेवाला शिकार कथा बा।एह में एगो खतरनाक चीता के शिकार कथा बा।एह शिकार कथा में साथी बाड़न दिल बहादुर गुरुंग। आदम खोर चीता से कंचनपुर गांव के आसपास के किसान त्रस्त बाड़न।पहिला दिन एगो भईंस के दबोचले चीता मिल जाता।दिल बहादुर गुरुंग हड़बड़ा के दू फायर क क देत बाड़न।घायल चीता भाग जाता।ऊ अपना मांद में छिप जाता।दोसरा दिन दूनो शिकारी चीता के मांद तक चहुंप जाताड़न।चीता मांद से गरजत निकलल आ ले खक पर हमला क दिहलसु।लेखक के हाथ में ओकर दू गो नोह धंसि गाइल।ऊ पत्थल पर गिर गइलन।उनकर कपार फूट गइल।लोमहर्षक वर्णन बा।

अइसहीं 'अजगर के पेट में 'केआश्चर्यजनक वर्णन बा।एकदम जादुई कथा बा।एगो लकड़हारा के एगो अजगर निगल गइल।ऊ लकड़हारा अजगर के पेट अपना खुखरी से चीर के बहरी निकलि आइल।अद् भुत कथा बा।

लेखक लगे शिकार कथा में हास्य –विनोद के प्रसंग पिरोवे के गजबे हुनर बा।'कंचनपूर का जंगल में 'शिकारी दोस्त जयंत प्रधान के अतिरिक्त बंगाली दोस्त सोहन दास जी हास्य –विनोद के प्रतीक बाड़न।ऊ एकदम फेंकू आ भांजू बाड़न।ऊ अपना के सुपर शिकारी बतावत बाड़न।उनका उर्दू के बहुत शेरो शायरी इयाद बा। दिलचस्प बा कि लेखक ओह शेरो शायरी के कथा में भरपूर इस्तेमाल कइले बाड़न।सोहन दास जी के दावा बा कि ऊ सुंदर बन में ना जाने कतना बंगाल टाइगर्स के शिकार क घललन कंचनपुर के जंगल में एगो लम्मा गाछ पर एगो मचान बन्हाइल बा। एगो बाघ का शिकार का फेर में सोहन दास जी, प्रशांत जी आ जयंत प्रधान मचाने पर बइठल बाड़न।दास बाबू निफिकिरे अऊंघात बाडन।बाघ आवता।जयंत प्रधान गोली दागत बाडंन।बाघ दहाड़त बा।दास बाबू के धोती खराब हो जाता।बंगाल टाइगर्स के शिकारी के इ हालि बा।

एक दिन अइसनो आवत बा कि लेखक के शिकार के नशा उतरि जाता।इ कइसे होता ?लेखक के माई का कहली कि शिकार के नशा उतरि गइल।

''शिकार पर शिकार 'का माध्यम से लेखक लव शर्मा 'प्रशांत भोजपुरी साहित्य के स्मरणीय सेवा कइले बानीं।25अप्रैल,2015 के प्रशांत जी के निधन हो गइल।

❑❑

मदनजी का हाता,
आरा –802301, बिहार।
9931171611

अमरेंद्र पाण्डेय

माई हमरे गांव से बस एही से ना शहर आवे

नेवता–हकारी सब, पाहुर–पुड़िया छूट जइहें,
खोली–दरखोली के सब लेहन–पताई लूट जइहें,
माई हमरे गांव से बस एही से ना शहर आवे,
कि अंगना में लागल हमार तुलसी माई सूख जइहें।

ढेकी, ओखरी, मूसर, लोढ़ा सबके संभारी के,
रखले बिया सिकहर अउर मेटा–मेटी झारी के,
चुहानी में लेवरी अउर अंगना में गोबरी,
कहेले के रहब ना ता कोठिली के पारी के।

परसो ले मंगरु के भईसी गिराई,
मोहन के लइकी के चौथी भी आई,
नरसो झेंगुरिया के होई विदाई,
देखब कइसे झांपी में का का दियाई।

पुनवासी के सोमारू बो हांडी गमकइहें,
पचमी के घरवा में माता पूजइहें,
कहला पर तोहरा, जदि चल जाइब अबही,
कइसे के चौबे जी अंगउवा ले जइहें।

गउवाँ में गमकत सब खेत खलिहान बा,
सरसो सिवाने आ हेठे मचान बा,
बोले बतियावे वाला लउके ना केहू,
शहर में खाली बाबू भेड़िया धसान बा।

नीमक–रोटी छूछ बा,
तबो इहवाँ सुख बा,
उहवाँ तनल दुतल्ला भलहीं,
रोवत ओहमें भूत बा।।

❑❑

ग्राम–पोस्ट–खजुरा, ब्लॉक–रामपुर,
जिला–कैमूर, बिहार पिन कोड–821101
मोबाइल नंबर–6390001008

घर-दुआर, गाँव-जवार के देखल-सुनल कहानी

डा0 अशोक प्रियदर्शी

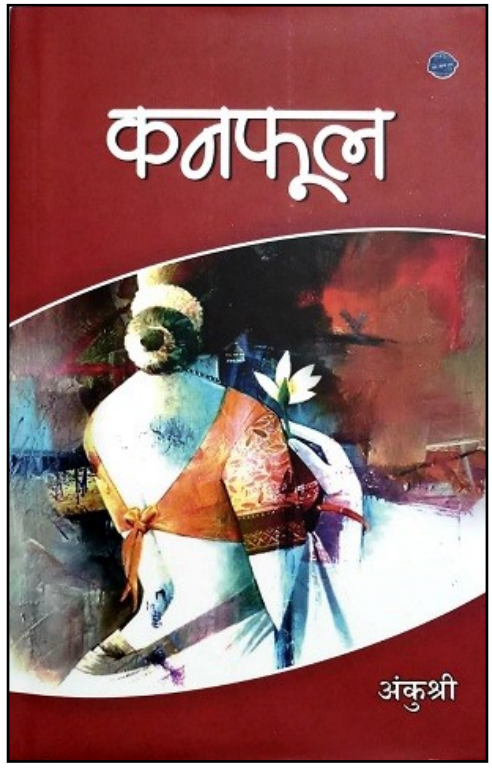

अंकुश्री के साहित्यिक सक्रियता देख के मन में देखजरनी के भाव उठेला। कहानी, लघु कथा, गीत-कविता, वन्य-जीवन के प्रसंग, लघु कथा, आह-जाह, अंकुश्री के कलम हर-हमेशा चलते रहेला आ भोजपुरी साहित्य के संपुष्ट करत रहेला। अइसे ई हिंदिओ में लिखत रहेलन। भोजपुरी चाहे हिंदी के कवनो पत्र-पत्रिका उठाईं, अंकुश्री के कवनो-न-कवनो रचना लउक जाई।

अइसे त कहावत बा कि कोस-कोस पर पानी आ चार कोस पर बानी बदल जाला। मतलब एक्के भोजपुरी आरा, सासाराम, बक्सर, भभुआ, बनारस, गोरखपुर, बलिया, छपरा में अलग-अलग ढ़ँग से बोलल जाला। बेतिया के लोग तनी रेघा के बतियाई – खाएब नूँ-ऊँ-अँ! आज रहब नूँ-ऊँ-अँ! बनारस में सर्वनाम त आदरसूचक रही बाकी क्रियापद एकबचन हो जाइ – आप कहाँ जात हउअ? गोरखपुर के महिला लोग आपस में बहिनी कह के बतिआई। छपरा के भोजपुरी में मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी के उच्चारण के प्रभाव आ जाला, 'ड़' के 'र' बोलल जाला। बाकी ई वैविध्य भोजपुरी के फूलन के गुलदस्ता बनावेला। दुर्योग से अबहीं ले भोजपुरी के मानक उच्चारण स्थापित नइखे भइल। त छूट बा जइसे बोलीं।

अंकुश्री के भोजपुरी में ई कुल रउरा लउकी, तबो इनका लिखल में अइसन प्रवाह होला कि एक हाली इनकर कौनो रचना पढ़ल शुरू करब त पूरा कइला बिना ना छोड़ब (छपरा में कहाई – छोड़ेब)।

ई कुल्ही बात हमरा दिमाग में आइल अंकुश्री के भोजपुरी कथा संकलन 'कनफूल' पढ़ के। 'कनफूल' में सब मिला के 15 गो कहानी बा आ सब वैसने करुण, रोचक, मन के बाँधे वाला। एगो अउरी बात एहिजे जोड़ दीं ना त भोर पड़ जाई, आ ऊ ई कि अंकुश्री अन्हारा में तीर ना चलावस, इनकर लिखल प्रायः सोद्देश्य, प्रेरक आ मारक होला।

कहनियन के रउआ सभे खुदे पढ़ीं, हम सुना देब त राउर कुतूहल समाप्त हो जाई। चाउर सीझल कि ना सीझल, ई देखे खातिर हंड़िया के सब चाउर ना देखल जाला। एगो चाउर मीस के अंदाज़ लाग जाला कि हंड़िया के चाउर सीझ गइल। तसहीं एह संकलन के एक-दू गो कहानी के बात करत बानी। बाकी किताब रउरा हवाले।

संकलन के तीसर कहानी बा 'कनफूल'। इहे नाम कितबियो के दिआइल बा। मेहरारून के अपना गहना-गुरिया से प्रेम होला, ई सभे जानेला। रतन के उनकर मेहरारू आपन कनफूल तली लगावे खातिर देले रही। आ बबुआ के दवाई में पइसा कम पड़ल त रतन ऊ कनफुलवा बेच देलन। उनका मेहरारू के गुस्सा स्वाभाविके रहे। भाई के दिहल कन. फूल रहे। रतन अपना मेहरारू के असरा धरवलन कि हाथ में पइसा आवते ऊ उनका के नाया कनफूल खरीद दीहें। बाकी संयोग अइसन बनत गइल कि पइसा खरच होत गइल। कबो बेटी के बिआह, कबो दूसर कार्य-पर्योजन। कनफूल खरिदाए के दिन टरल गइल। संक्षेप में ई बूझीं कि रतन के मेहरारू रामपियारी एक दिन पछाड़ खाके गिर पड़ली आ उनका मुँह से आखिरी शब्द निकलल 'कनफूल'। मध्यवर्गीय जीवन के लाचारी के अइसन कहानी कौनो भाषा के कहानी से टक्कर ले सकेला।

मध्यवर्गीय परिवार के त्रासदी के एगो अउरी कहानी के चर्चा करके रउआ सभे के ई किताब पढ़े खातिर न्योत रहल बानी। कहानी के शीर्षक बा 'दुलहिन के बाबूजी'। बेटी के घरे बाबूजी जास त पाहुर लेइए जाए के चाहीं। बेटी के ससुरार में नइहर के सिकाइत ना सुने के पड़े एहसे लइकी के बाबूजी अपना घरे के बड़बरगी बतिआवते रहेलन। बाकी सच्चाई ई बा कि पाहुर ले जाए के उनकर औकात नइखे। देखावे खातिर ऊ एगो गठरी में आम के पतई बान्ह के बेटी घरे जात बाड़न । जब गठरी खोलाता त ओकरा में खाली आम के पतई भरल बा। पड़ोसी सेवीलाल कहत बाड़न कि सवगात ह, फेंकाए के ना चाहीं, गाँव भर में थोड़–थोड़ बँटाए के चाहीं।

त देरी काहे के? कहीं से खरीद के, माँग–चाँग के, अमेजन से ऑनलाइन मँगवा के, कइसहूं 'कनफूल' किताब ऊपराईं आ पढ़ घाली। आनंद आई।

कनफूल (कथा संकलन)
अंकुश्री
सर्वभाषा प्रकाशन, जे 49, गली सं0 38, राजापुरी, मेनरोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110 059 (मो0 81786 95606)
मूल्य – रुपये 300/– (सजिल्द, 123 पृष्ठ, आकर्षक आवरण)

लेखक–संपर्क – अंकुश्री, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010
(मो0 88099 72549)

❑❑

एम.आई.जी. 82, सहजानंद चौक,
हरमू हाउसिंग कॉलोनी,
राँची–834 002

कौशल मुहब्बतपुरी

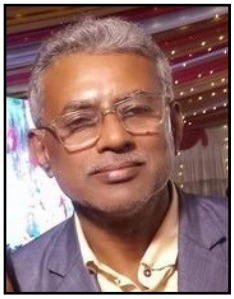

बदल रहल सामाजिक मूल्यन के बीच बेकतीगत महत्वाकांक्षा खातिर संघर्ष के आईना:"जुगेसर"

'जुगेसर' जइसन कि उपन्यास के नाम बा,युगईश्वर =योगेश्वर के आम बोलचाल में भोजपुरी के सब्द के अर्थ स्पष्ट कर रहल बा यानी युगेश्वर 'जुगेसर' के रूप में भोजपुरी में स्वीकृत आ प्रयुक्त सब्द बा। ई कहे में हमरा इचको ना संकोच हो रहल बाटे कि उपन्यासकार श्री हरेंद्र कुमार 'जुगेसर 'सब्द के चुनाव कर के कहीं–न–कहीं समाज में आगे चलेवाला जुग प्रवर्तक के रूप में बदल रहल जनजीवन आउर सोच–विचार के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उदाहरण के रूप में धरातल पर ले आ के रखे के अक्षुण्ण प्रयास बा।एह नाम से उपन्यास के नायक, कथानक आउर परिदृश्य के प्रतीकात्मक झलक उपलब्ध करावल गइल बा।एह अर्थ में उपन्यासकार नामकरण सहित तत्कालीन समय में चल रहल आम जनजीवन के प्रभाव से भविष्य के सामाजिक रूपरेखा खींचे में एगो सीमा तक सफल सिद्ध हो रहल बाड़न।

जुगेसर भोजपुरिहा माटी में जनमल जिनगी के उर्वरक क्षमता से भरल मजबूत मस्तिष्क आ शरीर के साँच प्रतिनिधि के रूप में उभर के आइल बाड़न। आर्थिक चाहे सामाजिक रूप से बहुत लमहर चर्चित परिवार के प्रतिनिधि ना भइला का बादो आपन निम्न–मध्यवर्गीय उतजोग के क्षमता सहित संघर्ष करत छात्र–जीवन के पराकाष्ठा का ओर ले जायेवाला सिद्ध होत बाड़न। परिवार के सदस्य आ पास–पड़ोस के लोगन के परदेस के माटी में रह के आमदनी के साथे बढ़न्ती के प्रवृति से ई बात सहज लाग रहल बा कि जुगेसरो पढ़–लिख के कवनो ऊँच पद पर बइठ के बड़हन आदमी जइसन समाज में नाम रोशन करे के चाह राखत बाड़न।उनकर परिवार आ समाजो के इहे इच्छा

रहे।उपन्यास के कथा में एह उपलब्धि खातिर प्रयास, ओकर सार्थकता आऊर सफलता में नया तरह के बुनावट सहित कथा–प्रवाह आकर्षक रूप से परोसल गइला से एगो नया तरह के संवेदना के स्वरूप उपलब्ध हो रहल बा जे सही मायना में उपन्यास में सफल चित्रण आऊर उद्देश्यपरकता पर सफलता के मोहर लगा रहल बा।

लरिकाईं से शिक्षा का प्रति समर्पित आ संघ र्षशील रहल जुगेसर सेयान भइला पर पटना विश्वविद्यालय, पटना में उच्चतर शिक्षा खातिर पहुंच गइलन जहवाँ उनका ई जल्दिए समझ में आ गइल कि ज्ञान के साथे–साथे बाहरी पहुँचो एह जमाना के एगो बड़का निर्धारक तत्व बा।शिक्षा खातिर समरपन में ऊ आपन परिवार–समाज के दुःख–सुख, परब–तेवहार आ मेल–जोल सगरे भुला कर के आगे बढ़ रहल बाड़न।जुगेसर ओह माई–बाप के ईयाद तेयाग देत बाड़न जेह लोग आपन पूत के बरकत खातिर सुबह–साँझ उमेद पर जिनगी काट रहल बाड़न। एह क्रम में दुखद ई रहल कि जुगेसर मरे घ ारी आपन माई के दरसन ना करे पवलन आ हुनका पश्चाताप के सिवा कछुओ हासिल ना भइल।इहाँ ई सवाल आ सकत बा कि ओह जमाना में संचार आ यातायात के एतना समृद्ध साधन ना रहे।लेखको जुगेसर के मन में उठत कचोट के उभारे के प्रयास कर ताड़न बाकिर आधुनिकता चकाचौंध के असर आगे के संदर्भ में परिलक्षित भइल बा।आपन परिवार आ समाज से बिलगाव के बेवहार के उपन्यासकार एतहीं बीजारोपण दिखा रहल बाड़न। मन में केतना बेर माई–बाप से भेंट करे के इच्छा भइला के बादो आपन बेवसाय के प्रति समर्पण आ बेकतीगत उपलब्धि पर धेयान केन्द्रित करे प्रवृत्ति,जे आधुनिक शहरीकरण के मुख्य दोष के रूप में बा, इनका बेवहार में झलकत बा।जिनगी सफल करे के प्रयास में जुगेसर जब जन्म–भुईं से नेह–छोह छोड़ के पत्नी सहित एक पल में गाँव छोड़त बाड़न तब ई एगो बड़का समाजशास्त्रीय परिघटना के बेशक सीमित बरनन होखे बाकिर लेखकीय दृष्टिकोण से कमजोर निशाना नइखे।ई घटना के सामाजिक आ पारिवारिक संरचना के परिघटन सहित पारंपरिक जीवन के विघटन के रूप में लिहल जाए त उपन्यास के जोगदान कम नइखे आँकल जा सकत।

जवान मन के कालांतर में पढ़ाई आ डिग्री से फुर्सत भइला पर शारीरिक माँग के अनुरूप भटकाव के पटाक्षेप प्रेम–प्रसंग में परिवर्तित हो के शिक्षित समाज में अन्तर्जातीय प्रेम–विवाह के रूप परिघटन के एगो उदाहरण जुगेसरो बाड़न। इहाँ ई दीगर बात बा कि शिक्षा के फलस्वरूप रूढ़िगत बंधन से मुक्त होखे के परंपरा शुरू भइल जे वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में कमोबेश स्वीकृत रूप से चल रहल बा।ऊ कवनो परिवार जे आपन संतान के भारी दान–दहेज के साथे जातिगत बियाह के परिकल्पना में डूबल रहल ऊ आपन खून में चारित्रिक गिरावट के लांछन के साथे प्रेम बियाह अस्वीकृत कर के आपन पारंपरिक प्रतिष्ठा के बचावे में लागल रहल। एह संदर्भ में एगो तुलनात्मक उदाहरणो आइल बा।जुगेसर का प्रेम बियाह के अस्वीकरन के खामियाजा भोगे के पड़ल जबकि भारी मात्रा में दान–दहेज के साथे आइल बहुरिया के साथे वरीय साथी प्रोफेसर के घुट–घुट के जिये के साथे शराब के आदि हो जाए के पड़ल। जुगेसर दहेज से बेहतर आपन शिक्षित साथी खुद चुन के बदलत समाज का ओर चलत बाड़न। इहाँ ई जरूर अखरता कि अपने मकान मालिक के बेटी ,जे इनकर शिष्या बाड़िन,से बियाह पूर्व शारीरिक संबंध हो जात बा।ई उत्तर–आध ुनिकता के स्वाद दे रहल बा जेकर मंजूरी पश्चिम का सभ्यता में संभव लागत बा।वस्तुतः उपन्यास समकालीन समाज में आवत बदलाव आऊर भविष्य के ओर के दिशा के ऊभारे के एगो चित्रणो बा।

तेज–तर्रार आदमी अवसर के ढंग से उपयोग करेला।व्याख्याता के नोकरी खातिर जुगेसर आपन वरीय मित्र के प्रयोग कइलन आऊर अवसर अइला पर आपन पत्नी पूजा के उच्च विद्यालय में शिक्षिका बनावे खातिर पद आ पैरवी के अनुचित लाभ ले के आगे बढ़त बाड़न। अवसर के लाभ खातिर मनई के पतन के एगो उदाहरण जुगेसरो बन के आवत बाड़न।राजनीति के शिक्षा के साथ कुव्यवस्था के गठजोड़ के खेल पर दृश्य उभारत ले खक देह–दर्शना स्त्री के मेल से संगीत नृत्य के कार्यक्रम के माध्यम से व्याप्त चारित्रिक दोष के उभारे के प्रयास कइल गइल बा।एह क्रम में लेखक के बांग्ला भाखा के ज्ञान के परिचय मिल रहल बा।

एह सबके अलावे माई के देहावसान,ससूर के बियाह से पहिले मृत्यु के बाद सास के पीड़ित जिनगी में सहयोग, आदि दुखमय जिनगी में परीक्षा दे रहल जुगेसर आगे बढ़त त बाड़न बाकिर आपन पिता के घर वापसी के इंतजार के शायद उनका पर असर ना रहल। एह कठिन जिम्मेवारी के निबाह में उनकर आपन स्वास्थ्य साथ ना दिहलक आऊर कमे उमिर में चल बसला पर उनकर पत्नी आपन माई आ ससूर सहित परिवार के प्रति फर्ज के बागडोर संभाल लेत बाड़िन ।भारतीय समाज में नारी का समय के साथे जूझे के एगो आपन आंतरिक क्षमता बा जेकर परिचय ऊ दे रहल

बाड़िन।जे पतोहू जवानी के आपन दिनन में ससूर सेवा से विलग बाड़िन ऊ समय अवते सारा विपत्ति झेल के जिए के ससूर के साथ ले के जिए के शुरूआत करत बाड़िन।इहाँ भारतीय परंपरागत परिवार के सौहार्द्र के गुण आ आवश्यकता नजर आवत बा।

अब एगो सवाल इहो बा कि जुगेसर के जिनगी केतना सफल चाहे असफल रहल?भोजपुरिहा समाज में विश्व–स्तर के नागरिक बन जाये वाला भोजपुरियनो पर ई सवाल उठत बा कि बेकतीगत जिनगी में केहू केतनो सफल हो जाए बाकिर ऊ आपन जन्म–भुई के समाज, परिवार आ परिवेश में का जोगदान दे रहल बाड़न चर्चा अनुकरणीय चाहे आदर्श होखे?एह उपन्यास के माध्यम से लेखक परंपरागत जीवन आ आधुनिक जीवन के बीच समरसता,सौहार्द्र आऊर बिकासवादी कार्य के समीक्षा करे के प्रवृत्ति के साथे कई तरह के सवाल उठा रहल बाड़न आ नवका जमाना के जुगेसर के तलाश पर जोर दे रहल बाड़न।

उपन्यास के भाखा सहज,सरल आ स्पष्ट भइला के साथे कम सब्दन के प्रयोग का माध्यम से सम्पूर्ण कथानक उपस्थापित कर रहल बा।एह उपन्यास में प्रकृति–चित्रण, संवाद आ सिंगारपरक दृश्यन के अभाव खटकत बा बाकिर जुगेसर के ज्ञान के माध्यम से शिक्षण कार्य में रसायन शास्त्रीय पदावली के उपयोग से ई बात सामने आवत बा कि उपन्यास के भाखा आ वर्ण्य–विन्दु में पश्चिम के लेखन कला के झलक भी बा।कभी–कभार इहो लागत बा कि लेखक के बेकतीगत जिनगी आ अनभूति के गहन असर उभर के आ रहल बा।एह सबके अलावे कथा–प्रवाह के साथे सब्द संयोजन लेखक के समृद्ध कथावाचक होखे के परिचय देत बा जेकरा चलते हर पाठक एक साँस में पूरा उपन्यास के पढ़ के दम लेवे के चाही। निश्चित तौर पर एह दुखांत पटकथा में एक के बाद एक दृश्यन के समायोजन सफल आ सशक्त बा।उपन्यास के अंत में प्रेमचंद के 'गोदान'में जइसे समय आऊर समाज से जूझत धनिया आपन पति होरी के मरे घरी'गोदान' के सपना येन–केन–प्रकारेण पूरा करके समाज के बीच अकूत शक्ति से भरल भारतीय नारी–पात्र होखे के परिचय देत बाड़िन ओसहीं जुगेसर के पत्नी आधुनिक सामाजिक परिवेश में आपन दम पर परिवार के समाज के बीच सम्हार के आगे बढ़े के संबल दिखावत बाड़िन। एगो संघर्षरत स्तंभ के रूप में परंपरा आ आधुनिक परिचलन के आपन एके अंचरा में समेट के चले के ताकत आऊर बुद्धि के परिचय देवे के प्रयास कर रहल बाड़िन।

अंत में,हम डा केदार नाथ सिंह से सहमती व्यक्त कर रहल बानी कि ''एह उपन्यास में पाठक के संवेदना जगावे आ झकझोरे के ताकत बा।अंतर्जातीय बियाह से ले के शिक्षा आ राजनीति के क्षेत्र के संकट एह उपन्यास में देखल जा सकत बा।''लेखक श्री हरेंद्र कुमार आपन औपन्यासिक कृति 'जुगेसर 'से भोजपुरी के न खाली समृद्ध कर रहल बाड़न बलुक भोजपुरी के लेखक, पाठक आ समाज के कलम के माध्यम से मार्गदर्शन दे रहल बाड़न। एह खातिर उनका के बारंबार बधाई सहित उनकर नवका कृति के इन्तजार बा।

❑❑

ग्राम–मुहब्बतपुर,
भाया–देवरिया कोठी ,
जिला–मुजफ्फरपुर, बिहार
पिनकोड–843120
चलभाष–9934918535

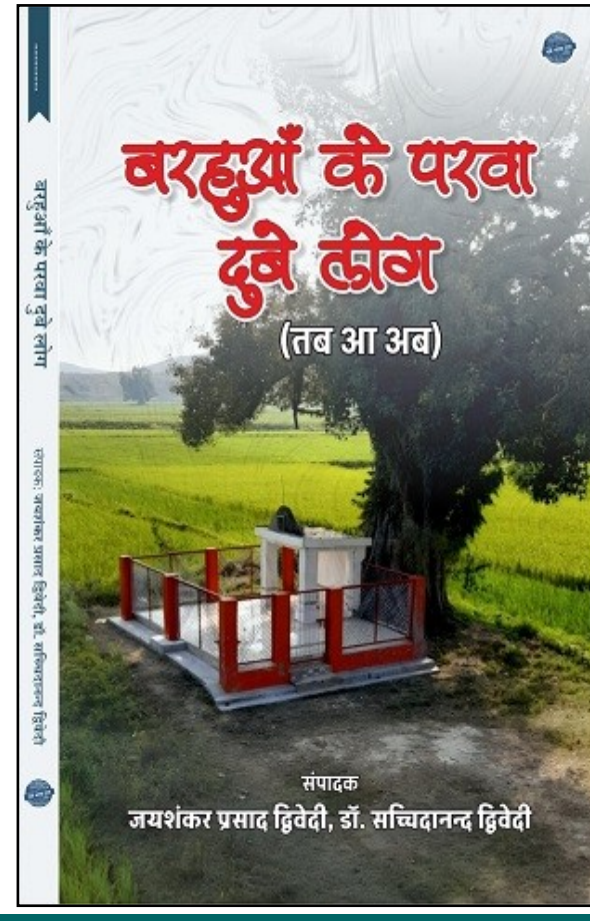

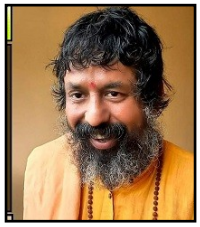

लऽ बाबू, मुंडी लऽ

स्वामी स्वर्गानन्द

हमार मुंड़ी काट के लेलऽ
आ बिटोर लऽ सगरी खून,
एगो साफ सुथरा बाल्टी में
एक एक बूंद गर जाए दऽ
आ पूरा बाल्टी भर जाए दऽ।

तब कुशवा के कूंची बना के
हमरा खूनवा में डूबा डूबा के
ले जाके छिरीक दिहऽ
गाँवा गांईं
दुआरी दुआरी
देहा देहीं।

कि हो जाव पबितर धरती,
मेट जाव कुल्हि सराप,
रूक जाव बिटियन संगे
सामूहिक दुष्कर्म आ पाप,
निसा पूरा उतर जाव
बिखियाइल भीड़ के,
खुल जाव आंख
लालच में आन्हर राजनीति के,
बंद हो जाव
आरोप प्रत्यारोप के बेसरमी,
भंग हो जाव नवहिन के
असमय नरक रैली,
चौनलन के चीख,
इन्टरनेटिया हाहाकार,
महारोग के वायरस।

जहां जहां सुनाव दंगा,
मातल पंथ के भिड़ंत,
ले जाके छिरीक दिहऽ
हमरा खून के कुछ बून,
सब सांत हो जाई।
बिस्वास करऽ,
ई एगो साधु के खून हऽ
कबो बांव ना जाई।

दु चार कूंची अउरी
छिरीक दिहऽ आसमान काओर,
कि दमघोंटू हवा के उमस ओरा जाव,
मनवां के दनवां दइंत
भसम हो जाव सबदिना खातिर,
आ पसर जाव सगरो
सांति के सीतल बेयार,
उतर आवे सबका भीतर
सिद्धि समरिद्धि /गाँवां गांईं लवटे
सनेहिया के सावन,
देहा देही चमके
सतजुग आ स्वर्गानन्द।
लऽ बाबू , हई मुंड़ी लऽ...
बोलऽऽ बोलऽऽ सिरी सतनाराएन भगवान कीऽऽऽऽ
जय जय हो।

❑❑

संपर्क चलभाष – 9987247593

केशव मोहन पाण्डेय

दँवरी

ई दुनिया /दँवरी हे /उमकल दरिआव के
फेंटा लेत /भँवरी हे।

ई दुनिया /मथेले विचार से
देखाव के शिक्षा से
बनाव के /संस्कार से।

ई दुनिया में /जीवन मेह हे
कर्तव्य के बैल बनिके /रौंदे के बा
मन के भावना के,/अनाज भले भुलावा के निकले
तब का/मिलिए जाला /लिप्सा के पुआल
जीनगी में /बिछवाना के।

त कबो /बहकल मनवा के बैला
तुरा दे पगहा /त चिहुँकी मत,/कहाँ जाई
दँवरी में नधाइल /बैल ?/जीवन /बनल रहे
सहज आ सरल /खाली धोअत रहीं /मन के मैल।

❑❑

राजापुर, नई दिल्ली–59

कँवल के फूल

गीता चौबे गूँज

''दादी माँ ! कहानी सुनाइए न३''
पिंकी की आवाज सुनकर दादी की उदासी पल भर में छूमंतर हो गयी।

पिंकी के दादाजी के निधन के बाद पिंकी के पापा अपनी माँ को शहर में ले आए थे। कहा तो यही था कि गाँव में अकेले मन नहीं लगेगा, पर यहाँ सभी के बीच में रहकर भी अकेली ही तो थी वह३ किसी के पास समय कहाँ था जो दो पल उसके पास बैठते। गाँव में तो काम से फुर्सत पाते ही आसपास के लोग घेर लेते थे। वहाँ वह किसी की काकी, किसी की ताई तो किसी की भौजी थी। पार्वती नाम तो जैसे मायके में ही छूट गया था। पुकार का नाम परबतिया तो शायद खुद भी भूल चुकी थी।

बच्चों के शहर में बस जाने पर भी दोनों बुजुर्गों ने गाँव में ही रहना पसंद किया। आए दिन सबकी मदद करना, उनकी बातें सुनना और नहीं तो कम–से–कम पेड़–पौधों से बतियाना३। दिन कैसे सरक जाते थे पता ही नहीं चलता था। यहाँ वे ही दिन पहाड़ की तरह लगते जो काटे नहीं कटते थे। सभी अपने–अपने कार्यों में या फिर मोबाइल में व्यस्त। घर में बच्चा रहने के बावजूद सन्नाटा–सा छाया रहता। सभी अनुश. ासन की डोरी में बँधे रहते। बस आवश्यकता भर ही बातें होतीं।

''अचानक तोहे कहानी कइसे इयाद आया बिटिया?'' पिंकी के साथ थोड़ी–बहुत हिंदी बोलने लगी थी दादी।

''आज मेरे स्कूल में मिस ने यही होमवर्क दिया है और कहा कि नानी–दादी की कहानियाँ काफी इंट्रेस्टिंग होती हैं। अपने कल्चर को जिंदा रखने के लिए हमें उसे भी जानना चाहिए। सुनाइए न दादी३! ''

'' कहानी तऽ सुना देंगे, बाकी तोहे समझ में आएगा? हम ऊ नौमन हिंदी नहीं बोल पाते ना।''
''डोंट वरी दादी माँ! आप सुनाइए, मैं रेकार्ड कर लूँगी और गुगल ट्रांसलेटर से समझ जाऊँगी।

कल स्कूल में मेरी धाक जम जाएगी, क्योंकि किसी के यहाँ दानी–नानी नहीं रहतीं। आई एम सो लकी!

दादी को पिंकी की अंग्रेजी गिटपिट तो समझ नहीं आयी, पर बचपन से कहानियों की शौकीन थी। कितने दिनों बाद किसी ने बचपन का झरोखा खोला था।
''ठीक है बिटिया! हम तोह के कहानी सुनाएँगे, बाकी जइसे मेरी अजिया सुनाती थी वइसेही। हमलोग अपनी दादी माँ को अजिया कहते थे।''

''ओऽ३ नाइस! वह तो और रियलिस्टिक होगा। आप शुरू कीजिए, मैं वॉयस रेकार्डर आन कर लेती हूँ।''

अजिया का नाम लेते ही परबतिया नाम कौंध गया दादी के जेहन में और वह सीधे बचपन के गलियारे में पहुँच गयी३

यूँ तो परबतिया छोटी उमर से ही बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियाँ वहन करने लगी थी, परंतु थी तो बच्ची ही। कभी–कभार एक बात की जिद कर बैठती थी। वह थी अजिया (परबतिया की दादी) से कहानी सुनना। उसे कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता था। इसके लिए वह अजिया के सारे काम कर देती। उनके हाथ–पाँव दबाती। कहानी सुनने का ही लालच था जो अजिया के ट्रैक्टर जैसे खर्राटों के बावजूद उनके पास सोने को मजबूर कर देता था। ''कँवल का फूल'' वाली कहानी तो इतनी बार सुनी कि उसे पूरी तरह याद हो गयी थी फिर भी बार–बार उसी कहानी को सुनाने की जिद करती। जिम्मेदारी के बोझ से असमय ही बड़ी हो जाने वाली मातृहीन परबतिया के इस बालसुलभ जिद को अजिया भी बड़े प्यार से मान लिया करती थी।

''तऽ सुनो ३ राजकुमारी की कहानी परबतिया की अजिया के जुबानी३

एगो राजा रहन। उनका एगो लइका आ एगो लइकी रही। लइकी जतने सुंदर रही, ओतने गुनी रहली। बाकी लइका महतारी के दुलार में बिगड़ गइल रहन। उनका पढ़े–लिखे में मन ना लागत रहे। उनकर संगत लखैरा लइकन से हो गइल रहे जवना के चलते राजा बड़ा कूफूत में रहत रहन। राजा उनका के खूब समझावस, ना समझला पऽ मारहूँ चलस बाकी, उनकर महतारी अपना अँचरा त लुकवा लेत रही। आ राजा से ककरहट करे लागत रही।

एने राजकुमारी खूब मन लगा के पढ़ल करस। सगरो उनकर जतने बड़ाई होखे, राजकुमार के ओतने सिकाइत। एह से रानी खिसियाइल रहत रही राजकुमारी से।३

अजिया दीर्घ साँस लेने के लिए थोड़ी देर को चुप होती कि परबतिया उतावली हो उठती,

''फिर का भइल?'' वह स्वयं को उस राजकुमारी की जगह कल्पना करने लगती।

कहानी का सिरा पुनः जुड़ जाता ३

'' एक दिन राजकुमार जुआ में सब पइसा हार गइलन। अगिला दाँव लगावे खाती कुछ ना रहे त जीते ओला बदमशवा कहलस कि राजकुमारी के दाँव पऽ लगा द। जीत जइब त सभ तोहार हो जाई, केहू के पतो ना चली। राजकुमार मान गइलन आ बहिन के दाँव पऽ लगा देलन।

'ई ठीक ना कईलन राजकुमार३ ' परबतिया बीच–बीच में अपनी राय भी देती जाती।

''हँ! ठीक तऽ नाहिंए कइलन। अबकियो बेर दाँव हार गइलन। अब जीते ओला उनका माथा पऽ चढ़ गइल कि तोहार बहिन अब हमार भइली। उनका के हमरा भीरी ले आव, हम उनका से बियाह करब३

'आह! बेचारी राजकुमारी! ३ ' परबतिया राजकुमारी के दुःख को महसूस कर दुःखी हो उठती।

दादी आगे कहानी बढ़ाती३

''राजकुमार फेरा में पड़लन कि कइसे आपन जान छोड़ाई। बाबुजी तऽ बियाह होखहिं ना दीहन। तब सोच–विचार के एगो पलान बनवलन। जवन जीतले रहे ओकरा से कहलन कि

' काल्ह हम आपन बहिन के तलाब के किनारे ले के आइब। तू तलाब में भीतरे लुकाइल रहिह। कमल के फूल में रस्सी बाँध के पानी के ऊपरे रखिह। बहिन के भेजब फूल ले आवे त तू फूल घसकावत जइह।जब डूबे भर पानी में बहिन पहुँचिहें त हम डूबे के हाल्ला कऽ के आदमी बटोरे जाइब त तू उनका के ले के भाग जइह।'

बिहान भइला पऽ राजकुमार रानी से कहलन,

ए माई! बाबुजी हमरा के नालायक कहकह के ताना मारेलन। आज हम खेत पऽ काम करे जाइब। उनका के देखा देब कि हमहुँ कुछ कर सकीले। बुचिया से हमार खाए ले के भेज दीह दुपहरिया में। बाबुजी के मत बतइह आ कवनो नोकर के साथे मत भेजिह। हम नइखीं चाहत कि नोकर हमरा के काम करत देख के हमार मजाक उड़ावस।

महतारी बेटा के बात मान लीहली आ बेटी के भेज दीहली खाए ले के। राजकुमारी खूब खुस होके आपन भइया के खाए ले के गइली।

'फिर?'

''फिर राजकुमारी जब गइली त उनकर भाई तलाब पऽ ले गइलन आ हाथ–मुँह धो के खाए के शुरू कइलन। ओही घरी तलाब में घाट के नजदीक एगो खूब सुंदर कँवल के फूल खिलल देख के राजकुमारी कहली,

'' ए भइया! कातना सुंदर फूल बा३ हम तूर लीहीं? ''

'' हँ ए बहिनी जा तूर लऽ। ''

राजकुमारी किनारे से हाथ बढ़वली तऽ फूल तनिका दूर घसक गइल। राजकुमारी भइया से कहली,

'हथवा लफवनी ए भइया, तबहुँ ना मिले कँवल के फूल!

त भाई कहलन३

' दीप जरत जाए, सूप बीनत जाए बहिनी तनिका आउर आगे जा। '

परबतिया बीच में टोकती,

' दीप आ सूप कहाँ से आ गइल एहिजा? '

अजिया बताती कि तलाब में छुपे आदमी के लिए संकेत था ताकि वह फूल खिसकाता चला जाए। कहानी आगे बढ़ाती हुई अजिया राजकुमारी की बात कहती३

''घुट्टी भर पनिया में गइनी ए भइया! तबहुँ ना मिलले कँवल के फूल३''

भाई खाते–खाते फिर कहस३

' दीप जरत जाए, सूप बीनत जाए, बहिनी तनी आउर आगे जा..'

असहिं करत–करत राजकुमारी ठेहुना भऽ, डाँड़ भऽ आ फिर गर्दन भर पानी में चल गइली३

'गर्दन भर पनिया में अइनी ए भइया! तबहुँ ना मिलले कँवल के फूल३

ओकरा बाद राजकुमारी डुबुक–डुबुक करे लगली। राजकुमार हाल्ला गुल्ला करे लगलन कि हमार बहिन के बचाव जा, डूबल जात बाड़ी३

तुरंतले ओहिजा भीड़ जुट गइल। तलाब में के अदीमी के मोका ना मिलल भागे के।

खबर राजा तक भी पहुँच गइल। राजा अइलन आ तलाब के पानी उलीचे के हुकुम दीहलन।

खूब पानी उचीलाए लागल। ओह में दूगो मुड़ी लउकल। दूनो के बहरी निकालल गइल। राजा के देख के उ अदिमिया थर–थर काँपे लागल आ सभ बात कह देलस राजा से कि कइसे राजकुमार जुआ में आपन बहिन के हार गइलन आ तलाब में कँवल फूल के बहाने बहिन के भेजलन कि हम उनका के ले भागीं। बाकी हम पकड़ा गइनी। एह में हमार कवनो दोस नइखे। हमरा के छोड़ दीहल जाय। राजा सोचलन कि ठीके कहता एकर का दोस? दोसी त हमार आपन खून बा।

राजा खिसिया के आपन लइका के देसनिकाला दे देलन आ सब राज–पाट राजकुमारी के नाँवे कऽ देलन३ ।

कहानी गइल वन में, सोच आपना मन में३। ''

''वाउ! सो नाइस स्टोरी दादी माँ! अब तो पक्का प्राइज मुझे ही मिलेगा३ ''कहती हुई पिंकी मोबाइल लेकर अपने रूम में।

दादी जानती थी कि अब पिंकी तभी दिखेगी, जब उसे कोई काम होगा। फिर भी वह खुश थी कि पिंकी के ही बहाने वह अपने बचपन की गलियों में विचरण कर सकी। कुछ दिन तो बीतेंगे उन यादों को सहलाते हुए।

❑❑ ❍ बेंगलूरु

उपरवार

अंकुश्री

रामचरितर बाबू के दू गो बेटा रहस – रविकिशन आ हरिकिशन। रविकिशन के पुलिस जमादार के नोकरी मिल गइल। दू बरिस बाद हरिकिशनो सरकारी शिक्षक बन गइलन।

रविकिशन के पोस्टिंग कोयला क्षेत्र में रहे। ऊ खूब उपरवार कमात रहस। एने–ओने भागमभाग में अतना लागल रहत रहस कि घर–परिवार के बारे में सोचे के उनका मवके ना मिल पावत रहे। दू बेटा आ तीन बेटी रही। उनकर मेहरारू सिपाही के बेटी रहस। ऊ लइकाइयें से उड़ावे के सिखले रहस, जोगावे के ना जानत रहस। घर में सुख–सुविधा के सब सरजाम रहे। बाकिरघर में ऊ सब छितराइल रहे, कुछुओ जोगाके–सजाके ना रखल रहे। वाशिंग मशीन आ महँगा इलेक्ट्रीक आयरन रहलो पर धोबिए किहवाँ कपड़ा धोआत रहे। घर में पकवान बनावे के सब

सामान रहे, बाकिर ऊ जादेतर बजारे से खाना मँगवा के खात रहस। नास्ता त ऊ कबहीं बनावते ना रहस, बजारे से चल आवत रहे।

हरिकिशन के गिनल–गुथल रुपया मिलत रहे। घर में उहे सामान रखले रहस, जवन जादे जरूरी आ काम के रहे। बाकिर सब सामान उनकर दू कमरा के मकान में सजा–जोगा के राखल रहे। घर के संस्कार दुआरिए पर से झाँकत रहे। ऊहवाँ चप्पल–जूता सरिआ के लाइन में राखल रहे। घरे अवनिहार के दिल खुश आ मन शांत हो जात रहे। उनकरा एगो बेटा आ एगो बेटी रही।

रामचरितर बाबू के बहुत दिन से बेटा लोग किहवाँ जाए के मन रहे। ऊ सोचत रहस कि बड़का बेटा के उपरवार कमाई बा त उहवाँ सुखो जादे मिली। एक–दू हफ्ता उनका इहवाँ रहके जिनिगी के सुख भोगे के चाहत रहस। मनेमन ऊ सोचत रहस कि छोटका बेटा के गिनल–गुथल कमाई में उहवाँ जा के बोझ बनल ठीक ना होई, दू दिन रहके चल आएब।

बाबूजी आवे के जानकारी मिल त रविकिशन कहलन कि अबहीं बाहर बानी, दू दिन के बाद आईं। एहसे ऊ दू दिन खातिर पहिले हरिकिशने किहवाँ चल गइलन। बेटा–पतोह, पोता–पोती सब उनकर सेवा में लाग गइल। उहवाँ अतना मन लागल कि ऊ हफ्ता भर से जादे रह गइलन। ओकरा बाद बड़का बेटा किहवाँ गइलन।

बड़का बेटा किहवाँ दुआरिये पर ढ़ेर सामान छितराइल रहे। देखके उनका नीमन ना लागल। घर के भीतर गइला पर त उनकर मन एकदम छोट भ गइल। खूब बन्हिआ सोफा रहे, बाकिर ओपर सामान भरल रहे। एगो बड़का पलंग रहे। ओकरो पर साड़ी–कपड़ा अइसन फइलल रहे कि कोई बइठ ना सकत रहे। पतोह भीतर वाला कमरा में मोबाइल पर बिडियो देखत रहली। मोबाइल के अवाज अतना जादे रहे कि उनकर आइल ऊ ना जान पवली। पाँचों बचवन में से कवनो घ र में ना लउकल। अतना आदमी के घर, बाकिर एकदम उंझास लागत रहे। एगो प्लास्टिक कुर्सी पर के सामान हटा के ऊ बइठ गइलन। बड़का बेटा के कमाई सुन के मन में जवन खुशी भइल रहे, उनका घरे अइला पर ऊ सब बिला गइल। उनकर मन बहुत छोट भ गइल। आधा घंटा ले कुर्सी पर बइठला के बाद ऊ जूता खटखटात उहवाँ से चल देलन। ऊ कब अइलन आ कब गइलन घर में कोई ना जान पाइल। सप्ताह भर बाद जब रविकिशन सी.सी.टी.भी. देखलन त मालूम भइल कि बाबूजी आइल रहस। बाकिर बाबूजी से बात करे खतिर ऊ फुरसत ना निकाल पइलन।

❑❑ ❍ **8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, रांची (झारखण्ड)**

हमरा जबाब चाही

अभियन्ता सौरभ कुमार

आज रमेश भी बोले लगले आपन घर वाला के साथे । रिया के रमेश से ई उम्मीद ना रहे । खैर रिया अब अपना के गुलाम नीयन जिनगी जिये के आदी कर लेले बाड़ी ।

आज रिया बड़ा हिम्मत करी के रमेश से कहली की सुनी ना ! ना होखे ता चली एगो बच्चा गोद ले लिहल जव ! अतना सुन के रमेश आग बाबुला हो गइले । आ चिल्लाये लगले की तू अपना साथे साथे समाज में हमरा के बदनाम करे पर लागल बाड़ू। हमार दोस्त ईयार का ? सोचिहे हमरा बारे में ? जग हँसाई होइ हमार ! सब केहु हमरा के नपुंसक समझी ! आज के बाद ई कबो सोचबो मत करीहे। बच्चा के सवख बा ता हम दोसर बियाह कर लेत बानी ! आ जब बच्चा हो जाई ता तू ओकरे के आपन बेटा समझहिये ! रिया के दोसर बियाह के बात सुन के गोड़ के नीचे से जमीन खिसक गईल ।

रिया समझ गईली की दुनिया के कवनो मर्द अपना के समाज में उच्च देखावे खातीर ई कर्म करे ला । हमेसा जमाना औरत के ही नीचा गिरावे ला । आखीर खाली ईगो औरत के ही जामाना काहे बाँझ के ताना मारे ला ! मर्द आपन कमी काहे ना समाज में बतावे ला ! रिया शुन्य में खो गईली ।

जब रमेश दस बारिश पाहिले सुहाग रात के हमरा के जान कही के बोलावले । हमारा हर सुख दुःख में साथ निभावे के वादा कइले ! आ ई जनत बाड़े रमेश की कमी उनकरा अंदर में तबो दोसर बियाह के बात ! ना दादा ना हम अब दोसर कवनो लईकी के जीवन बर्बाद ना होखे देम ।

कहाँ खो गैईलु ! हमरा आज जबाब चाही हा भा ना! रमेश के चिलाइला से रिया के ध्यान टूटल । रिया के लगे कवनो जबाब ना रहे । काहे ई एगो रमेश ही त रहले ह जेकरा के देख के जेकरा सहारे रिया दस साल से दुनिया भर के लोग के ताना सुनत सहत आ रहल बाड़ी । बाकीर आज रमेश भी साथ छोड़ देहले । आज रिया सचमुच अकेला हो गईल रहली ।

रमेश फेर चिलाइल्ले का सोचत बाड़ू जबाब द ।रमेश के चिलाइला सुन के रिया होश में आइली । बस करा + + रमेश सहन शक्ति के एगो सीमा होला । का भूल गईल जब दसन गो डॉक्टर तहरे में कमी बतवले रहे । बाकिर हम सबकरा से झुठ बोलनी की कमी हमरा में बा । ईगो ढोंगी फकीर के बात में आके तु इ बात मान लेहला की कमी तहरा में ना कमी हमरा अंदर बा ? तहरा याद बा उ ढोंगी का कहले रहे की जब हमार मानशिक चक्र आई उ दिन के पाँचवा दिन से हमरा सात दिन ले ओकरा लगे रात में जाये के पड़ी ।आ उ पुजा आ झाड़ फुक के नाम पर हमरा जिस्म से खेली ? का हमार इहे कशुर बा की हम ओकरा लगे जाये से माना कर देहनी ? का कशुर ई बा कि हम कवनो अनाथ आश्रम से बच्चा गोद लेबे के कह देहनी ? का कशुर बा की हम दस साल से तहरा परिवार रिस्ते दार के ताना सहत आइनी कबो जबाब ना देहनी तहरा कहला पर ? का कशुर बा हमार इहे की हम माई नइखी बन सकत ता का एकर अकेले हमही जिम्मेदार बानी ? तू दुनिया आ समाज में मुँह बंद करे के चाहत बाडा दोसर शादी करके ? उ समय काहे ना मुँह बंद कर देला जब हमरा से आधा उमिर के तहार बहिन हमरा के ताना मारेले ? जब छोट देयादिन आपन बच्चा ना देली खेलावे के ? आखिर कब ले ई समाज जामान खाली एगो औरत के ही बाँझ बोली ताना मारी ? जबकि इहे समाज कहेला की मर्द औरत जीवन रूपी रथ के दू गो पहिया ह ? हर सुख दुःख के आधा आधा के भागीदारी ह ता ताना हमही काहे सुनी ! रिया फफक – फफक के रौवे लागली । रोवला के बाद जब मन शांत भईल ता रमेश के जबाब देहली ।

रमेश तहरा जबाब चाही ना ता जबाब हमहुँ अभिये देम । तु दूसर शादी कर ल । हमरा के तलाक दे द । आ जवना मंडप में तहार शादी होइ ओही मंडप पे हमहुँ शादी करेम । जैसे तहार माई बहिन दोसर लईकी देख लेले बाड़ी आइसे ही हमरो मन में ईगो मर्द बा जवना के बीबी छः महीने के बच्चा छोड़ के एह दुनिया से चल गईल बाड़ी ।

अब जबाब हमरा चाही बोला हा भा ना पुछ ला..... इ समाज से .....आपन रिस्तेदार.... से आ सात दिन के अंदर जबाब द आ जबाब खाली हा होखे के चाही ।।

रमेश आज ले जबाब ना दे पावले जबाब रउवा दी ।

❑❑

○ सिवान, बिहार

जेकर केहू न होला,ओकर भगवान होले

राजू साहनी

गरीबी ऐगो अभिशाप के तरह होले , जवन कबो चौन से न रहे देले काहे कि गरीबी जब आवेले तब सब लोग साथ छोड़े के चल देला ।
आपन भी बेगाना हो जाला केहू भी साथ चले के तईयार ना होला , गरीब के केहू दोस्त ना होला ना के केहू साथी होला सबके भाव बदल जाला देखते ही रास्ता बदल देला लोग , ई सोच के कि कुछ मांगी ता देबे के परी ।
बाकिर गरीब बहुत स्वाभिमानी होला केहू के आगे हाथ ना फइलावेला , सभे केहू भले साथ छोड़ देला।
लेकिन गरीब कबों बुरा ना माने लन ई हरदम कहेलन की उनका पास समय ना होई ऐहि से ना मिले आवेलन ।
भगवान हमरा किस्मत में लागता ई हे लिखले बाना, ई हे मानिके भगवान में अटूट विश्वास रखेले गरीब ।
'' काहे कि जेकर केहू ना होला ओकर भगवान होले ''

इहे सब मनें मन सोचत रहले से सुखई काका रिक्शा चलावत के समय अउर सवारी से पुछले की कहा जायेके बा ?
वहा आपके छोड़ी दी , रिक्शा में जे बईठल रहे ऊ डॉक्टर रहे लोग सरकारी अस्पताल के ता कहेले कि अस्पताल छोड़ दीजिए ठीक है । सुखई काका कहले, ठीक बा साहेब छोड़ देब
सुखई काका एकदम शांत स्वभाव के व्यक्ति रहले , बाकिर बहुत परिश्रमी रहले सुबह 4 बजे से लेके रात्रि के 10 बजे ले रिक्शा चलावे तब जाके घर के भरण पोषण होखे ।
नाम सुखई रहे बाकिर सुख का होला इ जानते ना रहलन काहे की बचपन से लेके जवानी , जवानी से लेके बुढ़ापा तक कष्ट में जिनगी बितत रहे ।
कभी सुख के दाना ना खाए के मिलल होखे पर केतनो दुख रहे बाकिर हमेशा मुस्कुराते रहे । कबो केहू के आगे हाथ ना फईलवले मतलब अपना मेहनत से कमईले आ खईले ।
लेकिन अब बहुत कमजोर हो गइल रहलन फिर भी कवनों सहारा ना रहे अब करस ता का करा।
बहुत उदास मन से रिक्शा चालावत जात रहलन ।
उनका रिक्शा में बईठल सवारी दूनो परानी देखी के ई अपने में बतियावे लोग की इतना बुढ़ हो के काका रिक्शा चला रहे है ।
देखके दया आ रही हैं , मन करता है की इनको साथ में रख लिया जाए ।
सोचते सोचते मैडम पुछली बाबा आपकी कोई संतान नहीं है ? जो आप इतनी उम्र में रिक्शा चला रहे है।
सुखई काका जब इ सुनलन ता भावुक हो गईलन आंख से आंसू गिरे लागल फूट फूट के रोवे लगलन।
मैडम ता उनके रोवल देख के हक्का बक्का रह गईले अउर सोचे लगली की अईसन का कह देहनी कि बाबा अइसे रोवे लगले।
बाबा क्या हुआ जो आप ईतना रोने लगे कृपा करके बताइए प्लीज अगर नही बताना तो रोइए मत ।
सुखई काका रोवते रोवते बतवले की बेटी हमर एगो बेटा रहे जवन कैंसर से मर गईल ओकरा कुछ दिन बाद हमर पतोह भी मर गइल अउर हम अभी ले जियते बानी एगो पोता के लेके ओहि के भरण पोषण खातिर हम रिक्शा चलाई ले ।
अउर अब हमरो कमर से उठ बैठ ना जाला लेकिन का करी ?
अब मैडम के भी आंख से लोर ढरे लागल ई सब सुनीके डॉक्टर साहेब कहलन की आप चुप हो जाइए हमारे आवास पे आइए ।
इ हे सब बात करत में समय के पता ना लागल अउर अस्पताल आ गइल फिर का सुखई काका कहले की साहेब आपके मंजिल आ गईल।
डॉक्टर साहेब अपना पत्नी के कहले चलो चला जाए बाकिर मैडम के मन पिघिल गइल आ कहली कि बाबा आप कल अस्पताल में आइए ठीक हैं।
सुखई काका कहले कि ठीक बा साहेब हम काल्ही फिर आईब संजोग से मैडम अउर डॉक्टर के कवनो औलाद ना रहे नाही बाप महतारी रहले ।
मैडम डॉक्टर साहेब से कहली की ऐ जी सुनते है अगर हम लोग बाबा को और उनके पोते को अपने घर रखले तो हमारा घर भी घर लगने लगेगा ।
डॉक्टर साहेब ता सुनते नाराज हो गईले आ –

कहले की मैडम कुछ भी बोलती हो !

लेकिन मैडम जी जिद पे आड़ गईली अउर पुछली की अच्छा ए बताइए हमारी शादी को पच्चीस वर्ष हो गए लेकिन कोई संतान नहीं हुई । मुझे घर में अच्छा नहीं लगता है हमेशा ही अकेलापन सताता है आपको क्या लोग हमे बांझ कहके ताने मारते हैं कभी कभी तो जी करता है कि आत्महत्या करलू , इतना कहने के फूट फूट के रोने लगी ।

डॉक्टर साहेब भी भावुक हो गईलन अउर कहलन की ठीक है बुलालो कल उनको और उनके पोते को हम उनके पोते को गोद ले लेंगे ठीक है अब मुस्कुराओ रोओ मत , जब मैडम जी ई बात सुनली त डॉक्टर साहेब के अकवारी में धके मुस्कुराए लगली । अउर कहली की फिर चलिए इन्तजार नहीं करना है डॉक्टर साहेब बोले कहा ? मैडम बोली रिक्शा स्टैंड डॉक्टर साहेब बोले चलो ।

सुखई काका बईठके सुस्तात रहलान तबले डॉक्टर साहेब पहुचले आ कहके की " बाबा आप आज से हमारे साथ हमारे घर रहेंगे और आपके पोते को हम गोद लेंगे "

जब ई बात सुखई काका सुनलन ता एकदम निस्ब्द हो गईलन अउर डॉक्टर साहेब धके रोवे लगलन मैडम चुप करवली अउर कहली की " बाबा चलिए और हमके अपने पोते से मिलवाइए क्योंकि हमारा मन व्याकुल हो रहा है "

सुखई काका के खुशी के ठिकाना न रहल अउर जइसे ही घरे पहुंचले ता उनके पोता रोहन दौड़त घर से बाहर आइल अउर सुखई काका से पुछलस की ई के ह तब काका कहलन की तुहर मम्मी पापा हवे लोग अब का रोहन ता चट से मैडम के मम्मी मामी कहके धके झूल गइल अउर मैडम भी अपने मातृ प्रेम भाव विभोर हो गईली।

रोहन कहलस की मम्मी तू हमके छोड़ के कहा चल गइल रहलु ह अब मत जईहा कबों छोड़ के ई हे कहके मैडम के धके रोवे लागल अब का मैडम भी अपना छाती से सटा के चुपवावे लागली अउर कहली की बेटा अब कभी नहीं जाऊंगी आपको छोड़ के , डॉक्टर साहेब रोहन से कहलन कि चलो बेटा अपने घर चलते है ।

सुखई काका ई सब देख के मने मन भगवान धन्यवाद कईलन अउर खुशी से रहे लगलन ।

ऐही कहल जाला की "जेकर केहू ना होला ओकर भगवान होले "

❑❑

मदनपुर देवरिया (उ०प्र०)

अनूप पांडेय

खाली जय किसान कहला से किसान के हालत ना सुधरी!

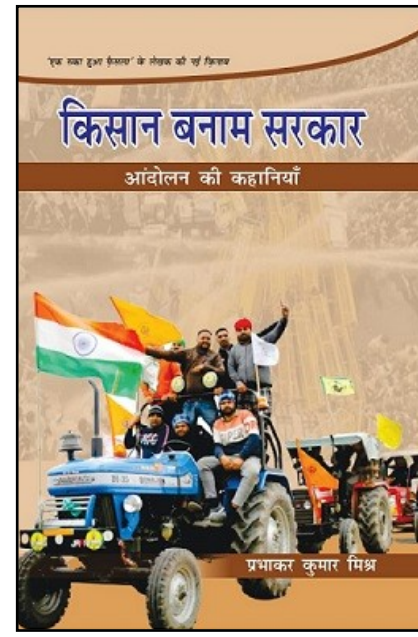

साल 2020 के आखिरी महीना में देश के राजधानी दिल्ली के चारो ओर गाँव बस गइल रहे। आंदोलकारी किसानन के गाँव। पूरे सालभर तक देश भर से हजारो किसान अपना लाव लश्कर के साथ दिल्ली के सीमा पर धरना देत रहे लोग। ढ़ेर बरियार सरकार त छोट–मोट ध रना प्रदर्शन के कबो भाव ना देला। एहू बेरी इहे भइल। शुरू–शुरू में सरकार के लागल कि खेत में काम करे वाला किसान, केतना दिन आपन खेत–खरिहान छोड़–छाड़ के आंदोलन करिहें। काहे से कि एकरा पहिले भी त कई कई बार सरकार से आपन माँग मनवावे खातिर किसान लोग दिल्ली आइल रहे, आ हल्ला गुल्ला क के, उनका लोगिन के वापिस जाएके पड़ल।

लेकिन सरकार के ई सोच ए बार गलत निकलल। ए बेरी कमजोर किसान, मजबूत इरादा के साथे आइल रहे लोग। मजबूत सरकार के झुके के पड़ल। जवना कृषि कानून के

लोग विरोध करत रहें, ओकरा के वापस लेबे के पड़ल। केंद्र सरकार तीन गो कृषि कानून लेके आइल रहे। सरकार कहे कि ई कानून से अपना देश के किसान के हालत सुधर जाई। लेकिन देश के अधिकतर किसान ए कानूनन के खिलाफ रहे लोग। उनका डर रहे कि ई कानून के लागू भइला से देश के किसान पूंजीपति–व्यापारी के चंगुल में फंस के बर्बाद हो जाई।

एही किसान आंदोलन के बारे में हाल ही में एगो किताब आइल बा। किताब के नाम बा 'किसान बनाम सरकारः आंदोलन की कहानियाँ' अउरी प्रकाशक के नाम बा 'द फ्री पेन'। किताब के लेखक प्रभाकर कुमार मिश्र, एगो पत्रकार बाड़न।

प्रभाकर मिश्र पूरे सालभर तक ए आंदोलन के रिपोर्टिंग कइलें रहलें। ए सालभर में ढ़ेर कुल घ टना घटल। कबो किसान लोग पर, कबो किसान नेता लोगिन पर, त कबो सरकार पर ढ़ेर खनि आरोप लागल। प्रभाकर मिश्र अपनी किताब में उ सब बातन के विस्तार से लिखले बाड़न। एकरा पि हले प्रभाकर मिश्र के एगो अउरी किताब आइल रहे। उनके पहिलकी किताब 'एक रुका हुआ फैसलाः अयोध्या विवाद के आखिरी चालीस दिन' अयोध्या के रामजन्मभूमि– बाबरी मस्जिद विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के फैसला के लेके आइल रहे। ई किताब पेंग्विन प्रकाशन से प्रकाशित भइल रहे।

आपन पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी एगो नारा देहले रहीं 'जय जवान, जय किसान।' एके वजह रहे। अपना देश के अर्थव्यवस्था में खेती किसानी के बहुत महत्वपूर्ण जगहि बा। खेती–किसानी भारत के आर्थिक, सामाजिक अउरी आध्यात्मिक उन्नति के जरिया हवे। अपना देश के किसान लोग खातिर खेती–किसानी परब त्यौहार जइसन हवे। इहे नाहीं, पेड़–पौधा, जंगल–जमीन, पशु–पक्षी, गोरु–मवेशी, नदी–नाला, ताल–तलैया के रख–रखाव अउरी बचावे के जिमेदारी भी ई लोग खूब निमन से निभावेला।

अपना देश में किसान आंदोलन के एगो लंबा चौड़ा इतिहास रहल बा। आजादी के पहिले से लेके आजतक, देश के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के साजे संवारे में किसान आंदोलन के बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहल बा। जब–जब खेतिहर–किसान पर कवनो अत्याचार भइल, तब–तब किसान लोग एक जुटता देखाके विद्रोह के दुंदुभी बजावे में पाछे ना रहल। चंपारण के सत्याग्रह होखे चाहे खेड़ा, बारदोली, तेभागा .. ई तमाम किसान आंदोलन बाद में राष्ट्रवाद के विचार से मिलके आजादी के लड़ाई में बदल गइल। जवना के नतीजा भइल कि 1947 में देश आजाद हो गइल।

चर्चित लेखक और पत्रकार प्रभाकर कुमार मिश्र अपना किताब 'किसान बनाम सरकार' में आम बोलचाल की भाषा में बतवले बाड़ें कि कइसे कइसे 2020–2021 किसान आंदोलन के साल बन गइल। किसान लोग के भलाई खातिर जवन तीन गो कानून सरकार ले के आइल रहे, कइसे कइसे किसान लोग ओ कानून के विरोध में मरे–जीये खातिर तैयार हो गइल लोग।

सरकार लगातार ए प्रयास में रहे कि कवनो तरह से किसान लोगन के ई समझावे में कामयाब हो जाव कि ई कानून से किसान लोग के फायदा होई। सरकार के कवनो कोशिश काम ना आइल। कई कई बार सरकार अउरी किसान नेता लोग में पंचायत भइल, लेकिन बात ना बनल। ओकरा बाद शुरू भइल किसान आंदोलन के बदनाम करे के सिलसिला। ए काम में केहू पीछे ना रहे। अउर त अउर, टीवी–अखबार जवना के मेन स्ट्रीम मीडिया कहल जाला, उहो आंदोलन के खिलाफ रहे। किसान लोग के बारे में उल्टा सीधा कि ई लोग खालिस्तानी है, किसान नेता लोग के बारे में भी अनाप शनाप बोलल शुरू रहे। ई त भला हो, सोशल मीडिया के कि आंदोलन के सही बात अउरी सही तस्वीर ओकरा जरिये दुनिया के सामने आवत रहे। प्रभाकर मिश्र, खुद पत्रकार बाड़ें, एसे अपनी किताब में बहुत विस्तार से लिखले बाड़ें कि आजकल मेन स्ट्रीम मीडिया के हालत केतना खराब बा। काहे लोग मीडिया पर तनिको भरोसा नइखे करत।

एकरा पहिले भी देश में ढ़ेर खानी आंदोलन भइल रहे। लेकिन ये आंदोलन के लेके जेतना सवाल खड़ा भइल, आजतक कवनो आंदोलन के बारे में ना भइल रहे। ढाई राज्य के आंदोलन, आढतीयन के आंदोलन, बीएमडब्ल्यू वाले किसानों के आंदोलन, विपक्ष प्रायोजित आंदोलन, अउरी पता ना कवन–कवन नाम धराइल रहे ये आंदोलन के। आंदोलन के फंडिंग कहाँ से आवता, कइसे आंदा. लन में शामिल किसानन के बढ़िया–बढ़िया पकवान मिलता, एतना पइसा कहाँ से आवत बा? अइसन सब सवाल के जवाब प्रभाकर मिश्र के किताब में देबे के कोशिश कइल बा।

किसान भी इंसान होला। उ कवनो मशीन ना ह। खेत–खलिहान के बाहर भी ओकर कुछ अरमान होला। ओकर भी आपन कुछ मान–सम्मान होला। बेटी के पढ़ावे के बा। अपना मेहरारू के फरमाइश पूरा करके बा। ओकरो एगो गाड़ी खरीदे के सपना बा। घर बनवावे के बा। ओकरो कहीं बाहर देश दुनिया घूमे के मन होला। लेकिन ई बात त बाकी लोग माने के तइयारे नइखे। तबे त,

बस एतना बात पर कि किसान के ओकरा उपज के वाजिब दाम मिले के चाहीं, जइसन माँग पर लोग किसानन के भला बुरा कहल शुरू क देला।

प्रभाकर कुमार मिश्र के लेखनी से साफ–साफ झलकता कि उनका अपना देश के किसान के दुर्दशा के बारे में बहुत कुछ पता बा। ओह के वजह भी बा। प्रभाकर मिश्र खुद किसान माता– पिता के घर में पैदा भइलें अउरी खेती किसानी आ किसान के दुःख दर्द झेल के बड़ भइल बाड़न।

सात सौ से ऊपर किसान अइसन रहलें, जे आंदोलन से वापस लौटके अपना घरे ना जा पवलें। कुछ लोग सरकार के अनदेखी से दुःखी होके आत्महत्या कई लिहल, त कुछ लोग बीमार होके अउरी कुछ लोग दुर्घटना में जान गंवा दिहल। प्रभाकर के किताब उहे सात सौ लोग के समर्पित बा।

किताबः किसान बनाम सरकारः आंदोलन की कहानियाँ
लेखक– प्रभाकर कुमार मिश्र
प्रकाशकः द फ्री पेन

❑❑

❍ गाजियाबाद, (उ0प्र0)

राजेश भोजपुरिया

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वा राष्ट्रीय अधिवेशन, तुलसी भवन, जमशेदपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वा दू दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन स्थानीय बिष्टुपुर स्थित तुलसी भवन के सभागार में सम्पन्न भईल, जवना मे देश विदेश से प्रतिनिधि आ सदस्य एह मे शामिल भइले। आयोजन के अध्यक्षता करत रही डा ब्रजभूषण मिश्र(मुजफ्फरपुर) आ मंच के संचालन करत रही डा संध्या सिन्हा(जमशेदपुर)।

उदघाटन सत्र... अधिवेशन के उदघाटन मु ख्य अतिथि जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय आ बिहार विधान परिषद सदस्य आ राष्ट्रीय प्रवक्ता डा संजय मयूख का साथ मारीशस भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन अध्यक्ष डा सरिता बुद्धू, नेपाल भाषा आयोग अध्यक्ष गोपाल ठाकुर,गोपाल अश्क आ उपस्थित अन्य अतिथियन द्वारा दीप प्रज्जवलित कके कईल गइल।कार्यक्रम के शुरुआत मंगलाचरण ' गाय के गोबरे महादेव..से भईल जवना के प्रस्तुति वीना पाण्डेय,माधवी उपाध्याय आ उपासना सिंह द्व ारा कईल प्रस्तुति लोगन के मंत्रमुग्ध कर देलस। ओकरा बाद भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत ' बटोहिया' के प्रस्तुति छपरा से चल के आइल लोक गायक

' उदयनारायन सिंह आ रामेश्वर गोप द्वारा बड़ा तन्मयता से प्रस्तुत कईल गइल आ श्रोता समूह के ताली बिटोरल लोग। पूरा सभागार भोजपुरी मय भइल रहे।

आपन संबोधन में विधायक सरयू राय के कहनाम रहे कि भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के पूरा उम्मीद बा।

डा सरिता बुद्धू के कहनाम रहे कि हम चालीस साल से सुनत आवत बानी की भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के बात कईल जात बा।

डा संजय मयूख के कहनाम रहे कि हमरो अंदर दरद बा एह बात के की भोजपुरी के जवन सम्मान मिले के चाहत रहे ऊ अभी ले नइखे मिलल। बाकिर एकरा खातिर जवन प्रयास होई कईल जाई।

मंच से कई गो पुस्तक के लोकार्पण भी भइल जवना में प्रमुख रूप से अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका ''अकियान'', भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अधिवेशन अंक, डॉ० ब्रजभूषण मिश्र के कृति भोजपुरी गजल संग्रह ''उफनत दरिया बाटे रात'' संपादक– गुलरेज शहजाद, नागेंद्र प्रसाद सिंह, भोजपुरी के श्लाका पुरुष''संपादक– डॉ० संध्या सिन्हा, सौरभ पाण्डेय के लिखल ''बात–बात बतकुचन'', ई० राजेश्वर सिंह के ''भोजपुरी योगी कथामृत'', राम प्रसाद साह
के ''भोजपुरी संजीवनी'', सरिता बुद्धू के '' गीत–गवई'', भूषण कुमार के ''भूषण भजनावली'', पत्रिका ''हम भोजपुरिया'' के गांधी विशेषांक, संपादक– मनोज भावुक, महंथ राय यादव के कृति ''भोजपुरी संजीवनी'',संपादक– रामप्रसाद साह आ हीरालाल लीलाधर के एकांकी संग्रह '' घर के मा. लिक'' के मिला के दस गो किताब के लोकार्पण भइल।

कई लोगन के सम्मेलन का ओर से सम्मान आ पुरस्कार भी प्रदान कईल गईल,जवना में सर्वतोभावेन भोजपुरी सेवा सम्मान माधव सिंह पुरस्कार से शिवप. जन लाल विद्यार्थी,कन्हैया सिंह सदय,गंगा प्रसाद अरुण,अरविंद विद्रोही आ माधव पाण्डेय निर्मल के सम्मान से सम्मानित कईल गइल।

महिला रचनाकार खातिर ''चित्रलेखा पुरस्कार'' डॉ० शारदा पाण्डेय के, निबंध आ शोध खातिर ''हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'', ''जइसे अमवा का मोजरा से रस चुवेला'' खातिर भगवती प्रसाद द्विवेदी के, नाटक खातिर दिहल जाये वाला '' जगन्नाथ सिंह पुरस्कार'' नाटक के किताब ''दरद न जाने कोय'' सुरेश काँटक के, ''पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय'' पुरस्कार डॉ० रंजन विकास के, ''पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार'' कहानी संग्रह ''कुछ हमार कुछ राउर'' खातिर तुषार कांत उपाध्याय के, ''अभय आनंद पुरस्कार'' उपन्यास ''हम गुरुदक्षिणा हईं'' खातिर मुंगालाल शास्त्री के,

नर्मदेश्वर सहाय पत्रकारिता पुरस्कार **जयशंकर प्रसाद द्विवेदी** के, ''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह पुरस्कार'' शोध आ आलोचना के किताब ''भोजपुरियत के थाती'' खातिर प्रमोद कुमार तिवारी के, ''राम नगीना राय पुरस्कार'' कविता संग्रह ''धध ाकत सुरुज पियासल धरती'' खातिर कनक किशोर के, निबंध आ शोध खातिर दिहल जाये वाला ''हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'' ई० राजेश्वर के उनकर किताब ''श्याम पियारा साधु संत'', महेंद्र शास्त्री पुरस्कार'' कविता संग्रह ''अँखुआइल शब्द'' खातिर डॉ० मधुबाला सिन्हा के, ''राम नगीना राय पुरस्कार'' सूर्य प्रकाश उपाध्याय के उनकर किताब ''गीत कवन गाईं हम'', शोध आ आलोचना खातिर दिहल जाये वाला ''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह पुरस्कार'' डॉ० विक्रम सिंह के उनकर किताब ''भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे'' आ संगीत (कला) के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान खातिर दिहल जाये वाला ''महंथ लाल दास पुरस्कार'' लोकगायक प्रेम रंजन के दिहल गइल।

ओहिजे ब्रजकिशोर दुबे नवोदित लोक गायकध्गायिका पुरस्कार प्रीति कुमारी आ कृति कुमारी के प्रदान कईल गइल।

अधिवेशन में सांझी के सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन भइल।सांस्कृतिक संध्या के अध्यक्षता मुख्य सतर्कता अधिकारी कोल इंडिया, भारत सरकार के ब्रजेश त्रिपाठी, मुख्य अतिथि का रूप मे भारत सरकार के कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा के आगमन सांझी के भइल, जवना मे अर्जुन मुंडा द्व ारा अपना संबोधन में कहल गइल कि भोजपुरी भाषा बेहद सरस आ मधुर भाषा बा।

सांस्कृतिक सत्र में स्थानीय कलाकार लोगन के साथ बाहर से आइल लोकगायक रामेश्वर गोप, प्रीति,कृति, उदयनारायण सिंह के प्रस्तुति मन मोह लिहलस। ओकरा बाद दिल्ली से चल के आइल नाट्य संस्था रंग श्री द्वारा दू गो नाटक के मंचन भइल जवना मे पहिलका नाटक रहे ' माइंड सेट'

लोगन के बीच बढ़िया छाप छोड़लस एगो कटाक्ष का रूप में। दोसरका नाटक रहे इंसाफालय जवन डा रसिक बिहारी ओझा निर्भीक जी के लिखल एकांकी पर आधारित रहे।

अधिवेशन के दोसरका दिन यानी कि 17 दिसंबर के प्रथम सत्र में डॉ० रसिक बिहारी ओझा निर्भीक स्मृति व्याख्यान विचार गोष्ठी के आयोजन भइल जवना के विषय रहे ''झारखण्ड राज्य आ भोजपुरी'' जेकर अध्यक्षता समाजसेवी ए० के० श्रीवास्तव करत रही। विमर्शक के रूप में दिव्येन्दु त्रिपाठी के सहभागिता रहे। गोष्ठी के संचालन प्रसेनजित तिवारी करत रहले। मुख्य वक्ता के रूप में प्रभात खबर के संपादक संजय मिश्रा के कहनाम रहे कि भोजपुरी के गुण गावे के चीज ह,एकरा खातिर सब भोजपुरिया लोगन के जागे के होई। झारखण्ड में द्वितीय राजभाषा के दर्जा मिलल रहे आ फिर उ छीना गइल।एकरा खातिर भी सब केहू के मिल के भरपूर प्रयास करे के होई।

द्विवेंदु त्रिपाठी द्वारा झारखंड के विषय पर आपन महत्वपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत कईल गइल। इहा के कहनाम रहे कि भोजपुरी के बात करे के पहिले छोटा नागपुरिया के चर्चा करे के होई।जनजातीय बिरादरी के साथ लेके चले के पड़ी। जईसे हमनी के झारखण्ड वासी होखे मे गर्व महसूस होला ओसही आदिवासी जनजाति में भी बिहारियत बा। जमशेदपुर में सक्रिय संस्था आ प्रकाशित होखे वाला किताब आ पत्रिका के भी जानकारी दिहल गइल आ साथ मे जोड़ दिआइल कि आपन जड़ से जुड़ल जरूरी बा।

वक्ता दुर्योधन सिंह के कहनाम रहे कि हमनी के राजनीतिक संरक्षण नईखे बल्कि हमनी के विरोध बा।आंदोलन चल रहल बा चली बाकिर जीत हमनी के होई।

एह गोष्ठी के अध्यक्षता करत एके श्रीवास्तव के कहनाम रहे कि डर लागे त भोजपुरी बोल दी। ई हमनी के हनुमान चालीसा ह। सब केहू के मिल के प्रयास करे के होई।एह अधिवेशन के सफलता खातिर शुभकामना बा।

ओहीजे द्वितीय सत्र में आयोजित गोष्ठी के विषय रहे '' विश्व पटल पर भोजपुरी '' जेकर अध्यक्षता भोजपुरी लैंग्वेज स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस के अध्यक्ष डॉ० सरिता बुधु (मॉरीशस) करत रही आ संचालन करत रहले मनोज भावुक।

गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में भाषा आयोग, नेपाल के अध्यक्ष डॉ० गोपाल ठाकुर (नेपाल) रहीआ विशिष्ट वक्ता के रूप में भाषा आयोग, नेपाल के सदस्य नेपाल के ख्यातिलब्ध साहित्यकार गोपाल अश्क रही जे आपन विचार विस्तार पूर्वक र खनी। नेपाल में 18लाख भोजपुरी बोलनिहार बाडन।भोजपुरी उहा के सरकार के मान्यता प्राप्त भाषा बिया।

गोपाल ठाकुर द्वारा नेपाल में भोजपुरी के स्थिति आ ओकर दशा–दिशा पर विस्तार पूर्वक बात र खनी। उहा के गीत के माध्यम से भी भोजपुरिया के स्थिति के वर्णन कइनी – उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम जाई कवनो ओरिया,मशीन होखे कवनों चलाई भोजपुरिया..।

उहा के कहनाम रहे कि नेपाल में 10 वीं कक्षा तक पाठ्यक्रम में भोजपुरी के पढ़ाई हो रहल बा। ग्यारहवां आ बारहवां के पाठ्यक्रम बन चुकल बा आ निकट भविष्य में स्नातक में पढ़ाई के शुरूआत करावे के प्रयास कईल जा रहल बा।

नेपाल में भोजपुरी भाषा–साहित्य में पढल आ रचल जा रहल भोजपुरी भाषा साहित्य आ साहित्य प्रकाशन पर विस्तार से बात रखली।

अध्यक्षीय भाषण में सरिता बुधु द्वारा अंग्रेजन के शासन काल में गिरमिटिया बन के बिहार से मॉरीशस गइल लोगन के सांस्कृतिक,भाषाई आ सामाजिक स्थिति आ उनकर इतिहास पर विस्तार पूर्वक बात रखली।

अधिवेशन के संगोष्ठी सत्र में तीसरा संगोष्ठी ''उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास'' विषय पर रहे जेकर अध्यक्षता भोजपुरी आ हिंदी के वरीय साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी करत रही। विषय प्रवर्तक रचनाकर जितेन्द्र कुमार रही । जितेंद्र कुमार द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रकाशित भइल उपन्यासन पर बहुत विस्तार से आपन बात राखल गइल। श्रीलंकाई लेखक शेहान करुणातिलका के 2022 में प्रकाशित उपन्यास ''सेवेन मून ऑफ माली अलमीडिया'', साल 2023 के बुकर पुरस्कार से पुरस्कृत आयरलैंड के लेखक पॉल लिंच के उपन्यास ''प्रोफेट सॉन्ग'' के विषय आ कथानक पर बेजोड़ वक्तव्य प्रस्तुत कईनी ।

अपना वक्तव्य में आगे बोलत कहले कि ''हम लोगों का मकसद साम्राज्य विस्तार नहीं है, बल्कि हमलोग तुम्हें सभ्य बनाने आये हैं।'' आ एही सूत्र वाक्य के बहाने हिटलर आ अंग्रेजन द्वारा शासन कईल गइल आ उत्पात मचावल गइल। एही विषय के बहुत ढंग से उपन्यास ''प्रोफेट सॉन्ग'' में राखल बा।एह उपन्यास के बहाने उहा के लिखल गइल भोजपुरी उपन्यासन पर बात रखनी। रामनाथ पाण्डेय रचित भोजपुरी के पहिला उपन्यास ''बिंदिया'' आऊर उपन्यासन के परिवेश,चरित्र, विषय आ कथानक पर बात रखनी। भोजपुरी में आ अधिक उत्कृष्ठ उपन्यास खातिर अन्य भाषा सभन के

उपन्यास के तुलनात्मक अध्ययन कईल जरूरी बा । विचार गोष्ठी में विमर्शक के रूप में कन्हैया सिंह 'सदय',जमशेदपुर आ प्रसिद्ध समालोचक डॉ० विष्णुदेव तिवारी (बक्सर) भी रही आ ऊहा के भी भोजपुरी उपन्यास पर बात रखनी। गोष्ठी के संचालन करत रही डॉ० राजेश कुमार माझी(नई दिल्ली) ।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भगवती प्रसाद द्विवेदी द्वारा भोजपुरी के पहिला उपन्यास रामनाथ तिवारी के बिंदिया, इमरीतिया काकी, फुलसूंघी, बनचरी, कमली, सुन्नर काका, रावण उवाच, जुगेसर, विजय पर्व सहित कई गो उपन्यासन के चर्चा कइल गइल आ ओकर विषय आ कथानक पर चर्चा कइली।
उहा के कहनाम रहे कि भोजपुरी में उपन्यास लेखन के गति भले धीमा बा बाकिर वैश्विक परिदृश्य के देखत स्तरीयता में कवनो कमी नइखे।

अधिवेशन के अंतिम सत्र समापन सत्र रहे जवना में सभे आयोजन समिति के प्रतिनिधि आ सदस्यन के अधिवेशन में सहभागिता खातिर सम्मानित कईल गइल। ओकरा बाद नयका कार्यकारिणी के घोषणा दिलीप कुमार द्वारा मंच से भइल आ मंच से कई गो प्रस्ताव पारित भइल जेकरा के प्रस्तुत कईनी कौशल मुहब्बतपुरी।

अधिवेशन के अंतिम सत्र में विराट कवि सम्मेलन के आयोजन कईल गइल जेकर सफल संचालन कईनी कवि गुलरेज शहजाद आ डा संध्या सिन्हा। कवि सम्मेलन के उदघाटन कर्ता रही शहर के चर्चित कवि आ पूर्व पत्रकार दिनेश्वर प्रसाद सिंह दिनेश आ अध्यक्षता करत रही डा कमलेश राय आ ब्रजमोहन राय देहाती आ डा रविकेश मिश्र। एह कवि सम्मेलन में देश विदेश से आइल 49 गो कवि कवयित्री लोगन द्वारा आपन रचना के सस्वर पाठ कईल गइल आ लोगन के ताली बटोरल गइल। कवि सम्मेलन में मनोज भावुक,ब्रजेश त्रिपाठी,माधव पाण्डेय निर्मल,माधवी उपाध्याय,डा रजनी रंजन,नेपाल से गोपाल ठाकुर, गोपाल अश्क,उपासना सिन्हा,रंजीत पाण्डेय,वीना पाण्डेय भारती,लक्ष्मी सिंह, मधुबाला सिन्हा, राजेंद्र राज, जयकांत सिंह, कनक किशोर, शकुंतला शर्मा के अलावा दिल्ली,गोरखपुर,देवरिया,छपरा से आइल कवि आ कवयित्री लोगन द्वारा आपन आपन कविता के पाठ कइल गइल।

❑❑

❍ जमशेदपुर

KBS AIR & GAS
KBS Air & Gas Engineering
SALE & SERVICE
* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/– संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई–मेल करे के पड़ी।